नूतन भारत के निर्माता

युगपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल

आलेखन
डॉ. मंगुभाई पटेल

हिन्दी–रुपांतरकार
यश राय

Rs. 15=00

प्रकाशक
पाटीदार संशोधन और प्रकाशन ट्रस्ट
अहमदाबाद

YUG PURUSH SARDAR VALLABHBHAI PATEL

by Dr. Mangubhai Patel

प्रथम आवृत्ति अप्रैल 1990

Rs. 15=00

प्रकाशक :

जयंतीभाई पटेल

पाटीदार संशोधन और प्रकाशन ट्रस्ट

गज्जर बंगलो, आस्टोडिया रोड,

अहमदाबाद - 380 001 गुजरात

मुद्रक :

हरेश जयंतीलाल पटेल

दर्शन प्रिन्टर्स, गोकुल सेन्टर, कागडापीठ,

जूना लाटी बजार, अहमदाबाद–22 गुजरात

प्रास्ताविक

आज कुछ विघ्न संतोषी परिबल सरदार वल्लभभाई पटेल का नाम इतिहास के पन्नों से मिटा देने पर तुले हैं। किन्तु उन्हें यह बात स्मृति में रखनी होगी कि सरदार तो समूचे भारत की जनता के हृदय में स्थापित हैं। सूर्य के सामने धूल फेंकने से सूर्य का तेज क्षीण नहीं होता सरदार को 'हिन्दु–मुस्लिम एकता के विरोधी', 'कौमवादी', 'कटुभाषी' बता कर उनकी निंदा का जो शोचनीय प्रयास हो रहा है उस से सहिष्णु हिन्दूओं और मुसलमानो के दिलों–दिमाग भी हिल उठे हैं।

इतिहासकारों ने सरदार को 'लोहपुरुष' या 'बिस्मार्क' कहकर नवाजा है। वे केवल लोहपुरुष न थे, बल्कि हमारे प्रसिद्ध नाट्यकार चं.ची. मेहता के शब्दों में वे 'रुद्र–भद्र पुरुष' थे। उन्हें लोह पुरुष कहना यह भी उनका अपमान है। उन्हों ने बिना किसी लश्करी सहायता से देशी रियासतों का एकत्रीकरण कर के रक्तविहीन क्रांति कर दिखाई अतः वे बिस्मार्क से भी अधिक थे। 'सरदार' का कोई विकल्प नहीं है।

जब जब भारतीय राजकारण में जहर पीनेके– कडवे घूँट पीने के अवसर आये तो सरदार ने उन्हें अमृत के घूंट मानकर पी लिये, सरदार सही अर्थ में 'शिव' थे।

श्री जयंतीभाइ पटेल (तंत्रीश्री – उमिया दर्शन), श्री चीमनभाई पटेल (कारभारी, उमिया माताजी संस्थान ऊँझा, गुजरात) एवं मैं कई बार ऐतिहासिक संशोधनार्थ व गुजरात और मध्य प्रदेश के पाटिदारों के रीतिरिवाज के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिये मध्यप्रदेश का दौरा करते थे तब मध्यप्रदेश के युवक व युवतियों में सरदार पटेल के बारे में जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा और सरदार के प्रति उनका अहोभाव – आदर हमने देखा। अतः यह पुस्तक लिखने की प्रेरणा हुई।

मुरब्बी शेठ श्री केशवलाल वि. पटेल, श्री मणिभाई पटेल (मम्मी) और श्री उमिया माताजी संस्थान ऊँझा के कारभारी श्री चिमनभाई पटेल, भाई श्री कौशिक अमीन एवं यशराय के सक्रिय सहयोग से यह पुस्तक तैयार हो सका है।

यह पुस्तक में अधिकृत जानकारी देनेका हमारा नम्र प्रयास रहा है। सरदार पटेल स्मारक भवन – अहमदाबादने हमें जो सहयोग दिया उसके लिये हम उसके आभारी हैं। खास तौर पर सरदार पटेल स्मारक भवन के नियामक श्री नाथुभाई नायक के हम सविशेष आभारी हैं।

ता. 14 अप्रैल, 1990

भारत रत्न डो. भीमराव आँबेडकर जयंती

अहमदाबाद

डो. मंगुभाई पटेल

वीर पिता

चरोत्तर या चारुतर नाम से प्रसिद्ध गुजरात के हृदय जैसे प्रदेश में छोटा सा करमसद गांव है । वहां पटेल झवेरभाई की बडी डेहली थी । उनका परिवार बडा था । बरसों से उनके पूर्वज, भी यहीं बसे थे । पटेल झवेरभाई बडे देशप्रेमी तथा वीर योद्धा समान थे । उन्हों ने ईसवी सन 1857 में महारानी लक्ष्मीबाई–झांसी की राणी की देशभकित व वीरतासे प्रेरित होकर अंग्रेजों के खिलाफ हुए विद्रोही क्रांति में हिस्सा लिया था । उनके साथ गुजरात के कई कृषक भी सामिल थे । उनके क्रांति केन्द्र आणंद, खेडा उपरांत उत्तर गुजरात के कडी, माणसा, पाटण, सियोर आदि थे ।

श्री महादेवभाई देसाईने लिखा है कि "हमारे पिताजी ने बचपन में 1857 की क्रांति में ठेठ झांसी की राणी के प्रदेश में जाकर हिस्सा लिया था । दो–तीन साल तक वे घर पर लौटे भी न थे । मल्हारराव होलकरने उन्हें कैद किया था । उन्हें अपनी बैठक में ही नजरकैद रखकर एक स्तंभ के साथ बांध रखा था । उनके सामने मल्हारराव होलकर अक्सर शतरंज खेला करते थे । शतरंज में होलकर गलत प्यादा चलाते, तब झवेरभाई कहते : 'महाराज, यह नहीं वह मोहरा चलाएँ ।' शतरंज में उनकी दक्षता देखकर मल्हारराव भी दंग रह गए थे । उन्हों ने झवेरभाई को मुक्त कर के उनसे दोस्ती कर ली थी ।" यह बात महादेवभाई के पुछने पर झवेरभाई के छोटे पुत्र काशीभाईने बताई थी । इतना स्पष्ट है कि झवेरभाई पटेल वीर, स्वतंत्र व सख्त मिजाज वाले थे । संभव है विप्लव में भाग लेने की वजह से झवेरभाई को कैद मीली होगी । ऐसा महादेवभाई मानते हैं ।

ऐसे वीर पिता की कुल छः संतान थी । उनमें पांच पुत्र थे – सोमाभाई, नरसिंहभाई, विठ्ठलभाई, वल्लभभाई तथा काशीभाई । एक पुत्री डाहीबहन थी, जो बडी धीर व विवेकपूर्ण थी । आगे चलकर विठ्ठलभाई तथा वल्लभभाई बडे प्रसिद्ध हुए ।

बालक वल्लभभाई

20 अक्तूबर, 1857 के शुभ दिन पर नडियाद गांव में वल्लभभाई का जन्म हुआ था । यह उनके ननिहाल का गांव था । वहां से बचपन में ही वे करमसद आ गए थे । श्री झवेरभाई का परिवार बडा धर्मशील तथा परिश्रमवाला कृषिकार था । बाल्यावस्था गांव में बीतने के कारण उनके स्वभाव व कार्यों में भारतीय ग्राम्य संस्कृति की जीवनधारा के दर्शन होते थे । अपने जीवन के गौरवपूर्ण कार्यकाल में भी उन्हें एक किसान का पुत्र होने का बडा गर्व रहा । परिवार का माहौल विद्याव्यासंगवाला न था, फिर भी झवेरभाई चाहते थे कि उनकी संतान पढ–लिखकर आगे बढें । अपने बचपन की स्मृतियों का जिक्र करते वल्लभभाई अक्सर कहा करते थे कि "मेरे पिता को मुजे पढाने की बडी चाह थी । रोज सुबह खेत पर ले जाते थे । जाते समय तथा लौटते समय पुरे रास्ते में वे मुजे पहाडा आदि सिखाते रहते ।"

वल्लभभाई को खेती करना बडा पसंद था । उन्हें शहर की जिंदगी से अधिक गांव का जीवन प्रिय था । वे मानते थे कि उसी में उनके जीवन का सर्वांगी विकास रहा है । वे अक्सर कहा करते थे कि "मेरा मानना है कि बच्चों में छिपीं सारी शक्तियों का सही विकास तथा उन्हें बढावा देने की सामर्थ्य शहर के जीवन में नहीं है । शहर का रहन–सहन बच्चे की प्रगति, उसके मानसिक विकास आदि के लिये बाधा बन जाता है । वह बालमानस पर कई मर्यादाएँ डालता है । अतः बच्चों के दिमाग का सही ढंग से विकास नहीं होता । गांव के मुक्त व स्वच्छ पर्यावरण में बच्चे का मन बडा ही प्रफुल्लित होता है । जिस से उसके दिमाग का भी विकास होता है । गांव में बच्चों को अपनी स्पर्धा करने वाले साथी भी मिल जाते हैं । अपने समवयस्क मित्रों के साथ वे गांव की मिट्टी रोंदते हैं । पानी व कीचड से भरे तालाब में कूदने का वे आनंद ले सकते हैं । कीचड में खेलते बालकों के साथ बडे होने से ही उन जैसा मजबूत व खुरदरा होने का अवसर मुजे मिला था ।"

उस जमाने के शिक्षक पीटते, गालियां देते, किंतु भीतर बडा स्नेह रखते थे ।

एक शिक्षक के बारे में वल्लभभाई बताते थे : उन्हें पुछने जाने पर गालियां देकर वे कहते –'मुज से क्या पुछते हो ? आपस में पढो ।' यह सिख वल्लभभाई के लिये गुरुमंत्र–सी बन गई थी ।

विद्यार्थी वल्लभभाई

वल्लभभाई ने अपना निर्माण स्वयं किया था । करमसद में अंग्रेजी शिक्षा की विशेष सुविधा न थी । तीन दर्जे तक उन्हों ने करमसद में ही शिक्षा ली । उनके एक भाई ननिहाल में रहकर पढते थे । फिर पेटलाद में दाखिला लेकर प्रतिदिन पंद्रह मील पैदल चलकर पढने जाने लगे । कुछ अरसे बाद वहीं पर एक घर किराये पर ले लिया । पांच–सात विद्यार्थी मिलकर वहां रहने लगे । घर से आठ–दस दिन का सीधा–सामान हर रविवार को ले आते थे । विद्यार्थीओं वारे से स्वयं रसोई बना लेते थे । इस प्रकार अंग्रेजी पांच दर्जे तक का अभ्यास पूर्ण कर के वल्लभभाई नडियाद पढने गए । नडियाद में उनका ननिहाल होने पर भी उन्होंने कुछ विद्यार्थीओं के साथ मिलकर छोटा–सा छात्रालय बनाया ।

नडियाद हाईस्कूल में वल्लभभाई विद्यार्थीओं के नेता बने । अपने साथी–सहाध्यायीओं को तथा स्वयं को होते अन्याय के खिलाफ लडना उन्हों ने तभी से चालू कर दिया था । यहां के एक शिक्षक कापीबुक का व्यापार चलाते थे । वे विद्यार्थीओं से ऐसा आग्रह रखते थे कि अपनी कापीबुक उन्हीं से खरीदे । किसी को बाहर से कापीबुक खरीदने की छूट नहीं थी । इस बात पर वल्लभभाई ने आपत्ति की । उन्हों ने साहसपूर्वक इस शिक्षक के खिलाफ आचार्य से फरियाद की । इस प्रकार उस की तानाशाही को खत्म किया । दूसरे एक शिक्षक बार–बार बिना किसी कारण दंड करते थे तथा पीटते रहते थे । उसके खिलाफ विद्रोह करके उन्हों ने हडताल कर दी । जिसके परिणाम स्वरुप उस शिक्षक को काफी सहना पडा था ।

नडियाद में रहकर वल्लभभाई ने आम प्रवृत्तियों में भी हिस्सा लेना चालू किया। नगरपालिका के चुनाव में महानंद नाम का एक शिक्षक उमिदवार बने थे । अपना कोई शिक्षक नगरपालिका का सदस्य बने यह तब के जमाने में विद्यार्थीओं के

लिये बडे गौरव की बात थी । वल्लभभाईने अपनी स्कूल के सभी विद्यार्थीओं को एकत्र कर के अधिक से अधिक वोंट उस शिक्षक को मिले, उस के लिये बडी जेहमत की ।

उस शिक्षक के विरुद्ध नडियाद के देसाई परिवार का ही एक उमिदवार खडा था । वे जाहिर में जोरों से अपने भाषणों में कहा करते थे कि "यह मास्तर यदि मुजे हराएगा, तो मैं अपनी मूंछे मुंडवा लूंगा ।' वल्लभभाई ने इस प्रकार साहस दिखाकर चुनाव का व्यूह बनाया कि उनके गुरुजी जीत गए, तथा वह घमंडी नेता हार गया । फौरन वल्लभभाई लडकों का बडा दल तथा एक नायी को लेकर उसके घर पहुंच गए थे उसकी मूंछों को मुंडवाने!

वहां से वल्लभभाई बडौदा की हाईस्कूल में पढने गए । वहां अंग्रेजी शिक्षा अच्छी थी । वहां के कुछ प्रसंग याद करके वे खिल उठते थे । वे सुनाते रहते थे कि किसी की भी नकल उतारने में तथा मश्करी करने में व उधम मचाने में मैं माहिर था । यद्यपि मैं ने कभी किसी का अनिष्ट नही किया था । हां, कोई अजीब किसम के शिक्षक मिल जाते तो उन का परिहास करने के लिये मेरे भीतर छिपी रमूजी वृत्ति छटपटा उठती थी । इस प्रकार हम अपने ऐसे शिक्षकों को सुधार देते थे! मुजे एक घटना अब भी याद है, हमारे एक शिक्षक वर्ग में नियमित रुप से देर से आते थे । जिससे हम हमेशा कुढते रहते थे, और उन्हें तंग किया करते थे। एक बार वे मुज पर बिगड गए । गुस्सा हो कर उन्हों ने सजा के तौर पर अंक के पाडे-पहाडे लिखने के लिये दे दिए । दूसरे दिन मैं बिना लिखे ही चला गया । तो वे अधिक गुस्सा हुए । और दो सौ बार पाडा लिखने को कहा । में अपनी पाटी में 200 का अंक लिखकर गया । शिक्षक ने पूछा 'पहाडा लिखकर लाया?' मैं ने उत्तर दिया, 'पहाडा तो मैं लिख कर लाया था । किंतु घर से आते समय रास्ते में पाडे सब भाग गए । और मेरी पाटी में सिर्फ 200 का आंकडा रह गया है!' शिक्षक मेरी मजाक समज गए । वे मुजे आचार्यजी के पास ले गए । उनसे मेरी शिकायत की । लेकिन आचार्यजीने बजाय मुजे सजा देने के उल्टे शिक्षक को ही सही ढंग से पढाने का तरीका न जानने के कारण डांटा तथा विद्यार्थीको इतना सब गृहकार्य न देने की सलाह दी ।

बाईस साल की उम्र में ईसवी सन 1817 में वल्लभभाई नडियाद हाईस्कूल से

मेट्रिक पास हुए । 18 वर्ष की उम्र में उनकी शादी उस समय के रिवाज अनुसार 12-13 साल की लडकी झवेरबा से हो गयी थी । परिवार के सदस्य चाहते थे कि अब वल्लभभाई कोई नौकरी कर के परिवार का बोज सम्हाल लें । किंतु वे वकील बनना चाहते थे । अेल. अेल. बी. होकर डिस्ट्रिक्ट प्लिडर होने में छः साल लगते थे । अपना सांसारिक जीवन उन्हों ने वकील होने के दौरान शरु किया।

विद्रोही वल्लभभाई

उस जमाने में पाटीदार कौम में वरविक्रय का चाल था । जिस से वल्लभभाई को प्रारंभसे ही नफरत थी । अपने रमूजी स्वभाव के अनुसार वे उस चाल पर कई बार भयंकर व्यंग्य करते थे । किसी लडके के 'वांकडा' (दहेज) लेने की बात सुनकर वे उपहास में पुछते "सांढ के कितने दाम मिले? पांच हजार या सात हजार?" एक बार अपने निकट के संबंधी एक लडके का ब्याह होने वाला था । उस की यैठण की चर्चा हो रही थी, तो वे बोल उठे, 'यह सब बेकार बातें छोडकर लडके को हाट में खडा कर दो ।'

वल्लभभाईने समाज सुधार की दिशा में काफी कार्य किया है । अहमदाबाद में पाटीदार युवक मंडल प्रेतभोज के खिलाफ विद्रोह कर रहा था । उसमें वल्लभभाई का भी साथ था । कई कौमी अग्रणीओं के लड्डु उन्हों ने छीन लिये थे । श्री हरिप्रसाद देसाई, डो. कानूगा, गणेश वासुदेव मावलंकर, डो. सुमंत महेता आदि भी इस मंडल की प्रवृत्तियों में हिस्सा लेते थे । कु.मणिबहन तथा श्रीमती भक्तिबा ने केवल राजनीतिक क्रांतियों में ही हिस्सा नहीं लिया था, बल्कि समाजसुधार के लिये भगिनी मंडल भी बनाए थे । अहमदाबाद में श्रीमती कान्ताबहन लश्करीने महिला मंडल की स्थापना की थी । कान्तबहन लश्करी गुजरात के महान सुधारक बहेचरदास लश्करीकी पौत्री थी ।

वल्लभभाई पू. छगनभा, पू. बाबूभाई गामी, दरबार गोपालदास, गोविंदभाई हाथीभाई देसाई, मोतीभाई अमीन, कल्याणजी महेता, कुंवरजी, नरसिंहभाई पटेल आदि की प्रवृत्तियों को साथ देते थे । उन्हों ने पाटीदार परिषदों में अतिथिविशेष,

बनकर तोरणामें उपस्थिति दी थी । विठ्ठलभाई पटेल नौवीं अखिल भारतीय कूर्मी परिषद के अध्यक्ष बने थे । 1913 अहमदाबाद में हूई इस सभामे गुजरात, पीलीभीत, पटना, दिल्ही, किसनगढ, पूर्णिया, बांकीपुर, आग्रा, लखनौ, फतेहगढ, काशीगया, लाहोर, मध्यप्रदेश, राजस्थान, मद्रास और महाराष्ट्र के कूर्मी बडी मात्रामे उपस्थित थे । पाटीदारो की कुरीतियां बंद हो तथा पाटीदार कृषक के रुप में अपनी खुद्दारी टिकी रहे इस के लिये उन्हों ने बडा पुरुषार्थ किया था ।

उत्तर गुजरात में प्रजा मंडल की प्रवृत्ति के लिये वल्लभभाई अक्सर मेहसाणा जिले की यात्रा किया करते थे । उन्हों ने शेरथा, कलोल, मेहसाणा तथा पाटण में सभाएं रखकर खेडूतों को जागृत किया था ।

वकील वल्लभभाई

डिस्ट्रिक्ट प्लिडर बनने के बाद वल्लभभाई को कुछ अच्छे वकीलों ने नडियाद में अपने साथ रहकर वकालत करने को कहा, लेकिन वे स्वतंत्र रुप से वकालत करना चाहते थे । अतः उन्हों ने उसके लिये गोधरा जाना पसंद किया । वहां उनके बडे भाई विठ्ठलभाई पटेल पांचेक वर्ष पहले वकील रहे थे । कर्ज लेकर घरकी सामग्रियां खरीदकर उन्हों ने गोधरा में घर बसाया । वल्लभभाई वकील के रुप में प्रतिष्ठित हुए । फिर वे बोरसद गए । वहां भी जम गए । गोधरा में महामारी के एक रोगी की सुश्रूषा करते उन्हें भी यह रोग लग गया । उनकी पत्नी भयभीत हुई । किंतु वल्लभभाई डरे नहीं ।

बोरसद में सरकारी अधिकारीओं को सबक सिखाने के लिये वे फौजदारी गुन्हों में तोहमतदारों की रक्षामें सदैव खडे रहते । उनका रोब ऐसा था कि अधिकारीओं कहते, "यहां वल्लभभाई पटेल वकालत करते हैं, तब तक किसी मुकद्दमे में सरकार जीत नहीं सकती । अतः कोर्ट को बोरसद से आणंद ले जाना चाहिए ।' अंतत कोर्ट को आणंद ले जाया गया । तो वल्लभभाई बोरसद से आणंद केस लडने लगे । जिस से सरकारी अफसर और जलभुन उठे । बोरसद में तो केवल तहसील के दावे सरकार हारती थी, जब कि आणंद में सारे जिले के दावे छुट जाने लगे । साल भी बीता न होगा कि कोर्ट वापस बोरसद लाई गई । वल्लभभाई ऐसे अजेय

सेनापति, संगठक थे । उनका आत्मविश्वास प्रबल था । वे मनुष्य को परखने में कुशल थे । तफतीश में पलभर में सामनेवालों को हरा देते थे । केस की सूक्ष्मातिसूक्ष्म बाबतों में गहरे जा कर जांच लेते थे । यही उनकी सफलता की कूंजी थी । खेडा जिले में वकील के तौर पर वे बडे प्रसिध्ध हो गए । साधारण-तया वकीलों मेजिस्ट्रेट तथा सरकारी वकीलों से मेल रखते हैं । लेकिन वल्लभभाई किसी की परवाह करते न थे । किसी से दब जाना उनके खून में न था । उनकी वकालत के समय का एक स्मरणीय प्रसंग यहां प्रस्तुत है बोरसद में मि. हसबन्ड नाम का एक अंग्रेज मेजिस्ट्रेट था । वह बडा घमंडी व सख्त था । बात-बात पर वह वकीलो को डांटता था, अपमानित करता रहता था । एक बार वह वल्लभभाई के हाथों चढ गया । इस मेजिस्ट्रेट का एक अजीब तरीका था । साक्षी को भयभीत करने के लिये वह प्रत्येक साक्षी के सामने एक दर्पण रखता था। इस बार भी जब उसने ऐसा किया तो तोहमतदार के वकील वल्लभभाई उठ खडे हुए । उन्होंने मेजिस्ट्रेट से कहा, "यह नोंधा जाय कि आरोपी की तफतीश उसके सामने दर्पण रखकर की जाती है ।'

मेजिस्ट्रेटने कहा, "इसकी आवश्यकता नहीं है ।'

वल्लभभाईने कहा, "यह दर्पण सुबूत में पेश किया जाएगा । और मुकद्दमे के कागजातों के साथ सेशन्स कोर्ट में ले जाया जायेगा ।' पहले तो मेजिस्ट्रेट भयभीत हुआ । किन्तु वह भी कुछ कम न था । आमने-सामने दलीलें हुईं । अंत में वल्लभभाई ने कहा, "मैं यह मुकद्दमा आपके कोर्टमें चलाना नहीं चाहता ।' और उन्हों ने अपनी अर्जी दे दी । तब वह मेजिस्ट्रेट कुछ नरम हुआ । उसने वल्लभभाई से कहा, "ठीक है, आप अपने पक्ष के बचाव के साक्षी लाईए ।' इस पर वल्लभभाई ने कहा, "में अपना एक भी साक्षी यहां प्रस्तुत करना नहीं चाहता । साक्षियों के नाम मैंने इस बंद लिफाफे में लिख छोडे है । इन सारे साक्षियों को अब मैं सेशन्स कोर्ट में ही प्रस्तुत करुंगा ।' फिर उस लिफाफे पर लिखा कि यह लिफाफा केवल सेशन्स कोर्ट में ही खोला जाय । और वह लिफाफा उस मेजिस्ट्रेट के हाथ में दिया ।

मि. हसबन्ड ने बडी नम्रता के साथ वल्लभभाई से पुछा, "क्या में लिफाफा खोलकर पढ सकता हूं?' वल्लभभाईने अनुमति दी । साक्षियों के नामों में सब से

पहला स्वयं मि. हसबन्ड का नाम पढते ही वह घबडाया । वह अंग्रेज अफसर बिलकुल नम्र हो गया । वह पुलिस अफसरों की चाल जान गया । तथा उन्हें डांटा । वल्लभभाई जीत गए । ऐसे तो कई दृष्टांत हैं । वल्लभभाई पैदाइशी वकील थे।

बेरिस्टर वल्लभभाई

वकालत में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त करने के बाद वल्लभभाई को तमन्ना हुई की वह विदेश जाकर बेरिस्टर बने । यहां वे चाहे कितनी ही कुशलता से अपने असीलों के मुकद्दमे लडकर जीत दिला दें, पर श्रीमंत असीलों तो महंगे बेरिस्टरों को ही रोकते थे तथा वे काफी कमाते थे । बेरिस्टर अधिक फी लेने में माहिर थे। चाहे कितना भी कमअक्कल बेरिस्टर क्यों न हो, वह बेरिस्टर होने के कारण बहुत कमा लेता था । यह सब देखकर वल्लभभाई विलायत जा कर बेरिस्टर बनने के लिये तत्पर हो गए । 1905 में वे विलायत जाने के लिये तैयार हो गए । पासपोर्ट आदि तैयार हो गए । सारी तैयारीओं के पश्चात् अंतिम कागजात उनके बडे भाई विठ्ठलभाई के हाथ में आ गया । उन्हों ने देखा कि उसमें तो वी. जे. पटेल नाम लिखा है ! इसका मतलब दोंनों में से कोई भी भाई इस पासपोर्ट के आधार पर विलायत जा सकता है! फिर यही तय हुआ कि वल्लभभाई के स्थान पर विठ्ठलभाई ही जाएंगे । और विठ्ठलभाई विलायत पहुंच गए । 1908 में वे बेरिस्टर हो कर लौटे । उन्हों ने बम्बईमें प्रेक्टिस शुरु की । इस दौरान झवेरबा बीमार हुईं। उन्हें बम्बई के कामा अस्पताल में दाखिल करवाया । वल्लभभाई उनकी खबर लेने बम्बई आए तथा उन्हें देखकर, खबर पूछकर आणंद लौटे ।

आणंद के कोर्ट में वल्लभभाई एक हत्या का मुकद्दमा लड रहे थे । अगत्य के साक्षी की तफतीश हो रही थी । कहीं भी चुक होने पर केस निर्बल हो सकता था तथा आरोपी को फांसी लग सकती थी । तभी वल्लभभाई को एक टेलिग्राम दिया गया । उसे पढकर उन्हों ने जेब में डाल दिया और अपनी कार्रवाई आगे चलाई ।

शाम को जब कोर्टका कार्य पूर्ण हुआ तो उन्हों ने अपनी पत्नी के देहांत की बात प्रकट की । अंतिम समय पर न मिल पाने का गम रह गया । उस समय वे तैंतीस साल के थे । पाटीदार कौम में चाल होने के कारण सगे–संबंधियों ने दूसरा विवाह करने के लिये उन्हें बहुत समजाया । लेकिन वल्लभभाई अडिग रहे तथा

उन्हों ने दूसरा विवाह नहीं किया ।

1910 में वल्लभभाई विलायत जाने के लिये तैयार हुए । उन्हें अपने बच्चों की शिक्षा का प्रबंध करना था । मणिबहन व डाह्याभाई बम्बई में विठ्ठलभाई के साथ रहते थे । उन्हें वहां की सेन्ट मेरिस स्कूलवाली मिस विल्सन के घर छात्र के रूप में रखे गए । विठ्ठलभाई उनकी सम्हाल लेते थे । फिर वल्लभभाई इंग्लैन्ड के लिये रवाना हुए ।

वल्लभभाई ने कभी जहाज देखा नहीं था । अतः उन्हों ने इस यात्रा में बडा आनंद लुटा । कभी हंसने में वे कहा करते थे, "चार दिनों में ही मेरा पेट साफ हो गया ।" विठ्ठलभाई ने कानून की कुछ पुस्तकें दी थीं । मार्सेल्स पहुंचने तक उन्हों ने पुरा रोमन लो पढ लिया । बम्बई से निकलते काठियावाड के एक ठाकोर से मित्रता हुई । लंडनमें उसी के साथ सेसिल नाम के एक होटेल में ठहरे । लेकिन पहले ही दिन वल्लभभाई को वहां बहुत महंगा लगने लगा । अतः उन्हों ने स्थान बदल दिया । वहां पर स्थित जोराभाई भाईलालभाई पटेल नाम के एक रिश्तेदार के यहां चले गए ।

बेरिस्टर की शिक्षा के लिये वे मिडल टेम्पल में प्रविष्ट हुए । पहली परीक्षा में ही वे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए । वल्लभभाई को वहां के दूसरे श्रीमंत परिवार वालों जैसा एशों–आराम पसंद न था । अपने दो बच्चों को देश में छोडकर वे यहाँ पढने आए थे । अतः उनका लक्ष्य केवल अपनी शिक्षा पूर्ण कर के शीघ्रतिशीघ्र लौटना था । पूर्व परीक्षा में उन्हें पांच पाउन्ड का इनाम प्राप्त हुआ । ईसवी सन 1912 में अंतिम परीक्षा में भी उन्हों ने सम्मान सहित प्रथम वर्ग में प्रथम स्थान पर उत्तीर्ण होकर पचास पाउन्ड का इनाम प्राप्त किया ।

मि. शेपर्ड नाम के एक अफसर ने गुजरात के उत्तरी हिस्से में कमिशनर के रूप में काम किया था । उस दौरान उन्हों ने पाटीदार कौम के सामाजिक सुधारके कर्मों में दिलचश्पी ली थी । उन्होंने रावबहादुर बहेचरदास लश्करी (CLI) के साथ कर तथा डाकोर में पाटीदारों की सभाओं में कुरीतियां खत्म करने के लिये नियम बनाए थे । इस शेपर्ड साहब ने वर्तमानपत्रोंमें पढा कि वल्लभभाई को इनाम मिला है, तो वे पाटीदार कौम के प्रति अपने विशेष लगाव के कारण फौरन उनके पास पहुंच गए । वल्लभभाई को धन्यवाद देकर उन्हें अपने यहां भोज पर निमंत्रित

किया । उस समय कुछ विशेष पहचानें भी हुई । उनमें मगनभाई चतुरभाई पटेल (होमरुलिस्ट), नगीनदास शेतलवाड, इन्द्रवदन नारायण मेहता, सूर्यशंकर महेता आदि प्रमुख थे ।

उस समय भारत में हो रहे राजकीय आंदोलन का थोडा–बहुत प्रभाव इंग्लैंडमें बसते हिंदीओं पर भी पडा था । 'लंडन हाउस'में क्रांतिपूर्ण प्रवृत्तियां भी चल रही थी । लेकिन वल्लभभाई इस माहौल से अलिप्त रहे थे ।

लंडन में एक बार वल्लभभाई बुरी तरह बीमार हुए । उसी समय उन्हों ने जो साहस दिखाया था वह अद्‌भुत था । वल्लभभाई के परिचित डो. पी.टी. पटेल वहां शिक्षा ले रहे थे । डोक्टरने उनकी जांच की । उन्हें पैर में तंतुकीडा वाला, का दर्द था । डोकटर ने उसका ओपरेशन किया । दो बार ओपरेशन करना पडा । फिर भी उस कीडा का थोडा सा हिस्सा पैर में रह गया । और उन्हे धनूर्वा लग गया । उनकी स्थिति चिंतापूर्ण हो गयी । सर्ज्यन का मत था कि पैर काट दिया जाय, वर्ना जान का खतरा है । वल्लभभाई बोले : देश में जाकर मैं कटे पैर के साथ बेरिस्टरी करने जाऊं, यह कैसा लगेगा ? मुजे पैर नहीं कटवाना । तब डो. पी. टी. पटेलने दूसरे सर्ज्यन से संपर्क किया । उसने कहा कि मैं एक चान्स लेता हूं। शायद मैं सफल हो जाऊं । वल्लभभाई को अपना पैर कटवाने के अलावा सभी कुछ मंजूर था । डोक्टर ने कहा कि यदि बगैर क्लोरोफोर्म सूंघे ओपरेशन करवाओ तो बेहतर रहेगा । तब वल्लभभाई ने कहा : मैं कैसी भी पीडा सहन कर लूंगा । फिर ओपरेशन हुआ । और वह सफल हो गया । डोक्टरने पहली बार ऐसा सहनशील दर्दी देखा । लेकिन उन्हें कहां पता था कि इसी वल्लभभाई को बचपन में जब अपनी बगल में फोडा हुआ था तो नायी के हाथ से गर्म सलाई लेकर उस फोडे पर लगा दिया था! वल्लभभाई अच्छे हो गए ।

ढाई साल के पश्चात् शिक्षा पूर्ण कर के वल्लभभाई स्वदेश लौटे । बम्बई बन्दरगाह पर 1913 फरवरी 13 को उनके दोनों बच्चों के साथ विठ्ठलभाईने उनक बडे आन्नद के साथ स्वागत किया ।

वल्लभभाई बच्चों को लेकर अहमदाबाद आए । डिस्ट्रिक्ट कोर्ट के निकट एक मकान किराये पर लिया ।

वल्लभभाईने अहमदाबाद में वकालत करना निश्चय किया था । इंग्लैन्ड से

लौटते बम्बई हाइकोर्ट के चीफ जस्टिस सर बेसिल स्काट पर उनके भाई की चिट्ठी लेकर आए थे । वल्लभभाई उन से भोंट करने गए । उन्हों ने वल्लभभाई का बडी आत्मीयता के साथ स्वागत किया, और उनकी अस्मिता की प्रशंसा की । उन्हों ने वल्लभभाई को प्रोफेसर की नौकरी दिलाने को चाहा । किंतु वल्लभभाई तो वकालत करना चाहते थे ।

वल्लभभाई के भाई विठ्ठलभाई का नाम बम्बई में वकालत के क्षेत्र से अधिक आमजनता व समाज सेवा के क्षेत्र में विख्यात था । वे उत्तरी हिस्से की स्थानिक स्वराज संस्थाओं की ओर से बम्बई की धारासभा के सदस्य बने थे । दोनों भाई मानते थे की वकालत ओर जाहिर सेवा एक साथ नहीं हो सकतीं । अतः उन्होंने कार्य बांट लिए । विठ्ठलभाई जाहिर सेवा करें ओर वल्लभाई वकालत । उन्हों ने विठ्ठलभाई को आर्थिक जिम्मेदारी से मुक्त किया । इस बात का जिक्र उन्होने 1921 की आमसभा में किया था । यदि "इस देश में स्वतंत्रता चाहिए तो सभी स्वार्थों को त्याग कर संन्यासी बनना होगा । इस लिये हमने निर्णय किया है कि दोनों में से एक देशसेवा करेगा ओर दूसरा परिवार सेवा करेगा । तब से मेरे भाईने अपना सफल व्यवसाय त्याग कर देश सेवा करनी शुरु की । परिवार को निभाना मेरे सर आया । पुण्य का काम उनके सर गया ओर मेरे सर पाप का काम आया। लेकिन उनके पुण्य में मेरा भी कुछ हिस्सा है । यह समज कर में मन को मनाता।"

उस किराये के मकान में कुछ समय बिताने के बाद भद्र में दादासाहब मावलंकर के चाचा के मकान में रहने गए । वल्लभभाईने अपने कार्यालय की सजावट एक बेरिस्टर को शोभा दे वैसी करवा दी । उन्हों ने बम्बई से विशेष तौर पर फर्निचर मंगवाया । वल्लभभाई का कार्यालय देखकर शेठ कस्तूरभाई जैसे भी बोल उठते थे की "वल्लभभाई के दफतर जैसा फर्निचर अहमदाबाद में किसी दफतर में नहीं देखा । "

इंग्लैन्ड से ताजा आए वल्लभभाई का हूबहू वर्णन उनके साथी कार्यकर्ता मावलंकरने किया है, "बांका जवान," बिलकुल आधुनिक किस्म की पतलून पहनी हुई, बढिया से बढिया किस्म की हेट सर पर कुछ तिरछी रखी हुई, सामने वाले आदमी को देखते ही भांप लेती तेजस्वी आंखे, मितभाषी, थोडा–सा स्मित फैलाते हुए मुलाकाती का स्वागत करता हुआ, किंतु उस से ज्यादा बातों में न उलझने

वाला, द्दढ व गंभीर चेहरेवाला, कुछ अपनी श्रेष्ठता के ज्ञान के साथ दुनिया को निहारनेवाली तीखी नजर; जब भी बोलता तो उस के शब्दों में आत्मविश्वास तथा प्रभावशाली द्दढता रहती; सख्त दिखनेवाला तथा सामने वाले को अपना सम्मान रखने के लिए बद्ध करनेवाला" ऐसा नया बेरिस्टर अहमदाबाद में वकालत करने आया । उस समय अहमदाबाद में छ–सात बेरिस्टर थे । उन में अधिक तम प्रेक्टिसवाले दो–तीन ही थे । सहज ही नऐ तथा युवा वकीलों का ध्यान इस नौजवान बेरिस्टर की ओर गया । उस के व्यक्तित्व में तथा वर्ताव में कुछ विशिष्टता थी । कुछ आकर्षण, कुछ प्रभाव, कुछ रोब, और दूसरे के प्रति तीखी नजरों से देखना आदि से प्रभावित वकील मंडल में उनका रुतबा बढ गया ।

अहमदाबार आते ही वल्लभभाईने बेरिस्टर के रुप में अपना रुआब जमा दिया। वे एक योद्धा की भांति केस लडते थे । सामनेवालों पर वे सीधा प्रहार करते थे । साक्षी या वकील–उनके सामने टिक नहीं पाता था । श्री मणिलाल भगुभाई वकील कोर्ट में 'शेर' कहलाते थे । महादेवभाई तथा नरहरिभाई भी उनके वक्तव्यों को सुनने के लिए जाते थे । गांधीजी के विलायत के सहाध्यायी बेरिस्टर त्र्यंबकराव मजुमदार भी कोर्ट में छा जाते थे । उन्हे सब 'सिंह' कहते थे । फिर वल्लभभाई को वकालत करते देख कर नरहरि परीखने महादेव भाई से कहा 'यह' वल्लभभाई भी 'सिंह' ही है । तो महादेवभाई ने कहा था, "सिंह तो है पर छोटा सा सावज है अभी ।' बेरिस्टर मजुमदारने एक बार चर्चा में नरहरिभाई से कहा था वल्लभभाई जैसा केस चलानेवाला दूसरा कोई बेरिस्टर मैं ने कभी देखा नहीं है ।

बेरिस्टर के रुप में वल्लभभाईने अहमदाबाद में आठ वर्ष तक काम किया । उस दौरान काबिल धाराशास्त्री के रुप में उनकी ख्याति सारे गुजरात में फैल चुकी । उमरेठ में उन दिनों बनावटी दस्तावेज बनाने का हुन्नर जोरों से चल रहा था । अदावत के कारण बनावटी कागजात बनाकर केस होते रहते थे । अपने बचाव के लिये वल्लभभाई को रोकते थे । एक केस में वल्लभभाई ने एक साक्षी की तफतीश ली ।

वल्लभभाई : "आप शराफ हैं ?

उसने कोई उत्तर नहीं दिया, तो वल्लभभाई ने फिर पुछा : आप शराफ हैं?

फिर उत्तर नहीं मिलने पर वल्लभभाईने तिसरी बार पुछा : आप शराफ है ?

उस के कुछ न बोलने पर वल्लभभाई ने गर्जना की, जो है वह बोल दीजिए में आपको पहचानता हूं । सत्रह पांच पंचाने और छुट के पांच करने वाले हैं आप । यहां लालचटक पगडी, कडक अंगरखा तथा कंधे पर अंगूछा डालकर आए हैं । इस पर मुजे लगा कि आपने शराफी पिढी निकाली होगी । इस प्रकार के वल्लभभाई के हल्ले से वह घबडा गया ओर जुबानी देने में टुट गया । आरोपी निर्दोष छुट गया ।

गांधीजी के प्रथम दर्शन

अहमदाबाद का गुजरात क्लब आज भी बुद्धिजीवियों का मिलने का उत्तम स्थान है. इस क्लब में ब्रिज का खेल जमा था । चीमनलाल ठाकोर, वल्लभभाई पटेल आदि पत्ते खेल रहे थे । बगल में बैठे दादासाहब मावलंकर खेल देख रहे थे । यकायक वे उठ खडे हो गए । वल्लभभाई ने पुछा, "क्यों" कहां चले ?

"गांधी साहब आए है, उन्हें सुनने।"

"बैठो भी ! वह आप के गांधी साहब अफ्रिकासे सयानापन की गठरी बांधकर आए हैं क्या जो सुनने जाते हैं? यहीं बैठकर ब्रिज खेलो, कुछ बुद्धि का भी विकास होगा ।"

फिर भी वल्लभभाई का मन अब खेल से उचट गया ।

1915में गुजरात क्लब के कुछ सदस्य गांधीजी के प्रति आकर्षित हुए और उन के कोचरब के आश्रम में जाने लगे थे । एक बार वल्लभभाई भी अपने मित्रों के साथ आश्रम में गए।

गांधीजी गामठी पोशाक में सामने सब से अलग लगते बैठे थे । उन के इर्द–गिर्द बैठे बुद्धिजीवीओं के साथ कुछ बातें कर रहे थे । गांधीजी में कोई विशेष आकर्षण नहीं था । लेकिन उन के वजनी शब्दों में अनुभव का बल था । वल्लभभाई के दिल में गांधीजी के प्रति जो विरोध था उस के स्थान पर प्रेम पनपने लगा । गांधीजी की सेवापरायणता तथा सत्याग्रह की प्रशंसा फीरोज महेता तथा गोखलेजी भी बहुत करते थे । 1909की लाहौर कोंग्रेस में गोखलेजीने गांधीजी के लिये 'महावीर' तथा 'पुरुषोत्तम' शब्दों का उच्चारण किया था । गांधीजी उच्च

कोटि के असामान्य मानव हैं इस बात का खयाल तो वल्लभभाई के मन में था ही, परंतु उन्हें हिन्दुस्तान के मामले में कितनी सफलता मिलेगी, उस के बारे में वल्लभभाई आशंकित थे ।

गांधीजी ने खडे होकर उनका स्वागत किया तथा बैठने के लिए कहा । मावलंकर ने कहा, "हमें कोई खास काम नहीं है। यूं ही घुमने चले आए है । "अतः गांधीजी फौरन अपने कामों में जुट गए । इस क्रिया की नोंद वल्लभभाईने सूक्ष्मता से ली । आश्रम स्वाश्रय के नियमों पर चलता था। सभी काम स्वयं ही करना। वल्लभभाई के मन में मंथन चल रहा था । वे अपने मित्रों से व्यंग्य में कहा करते थे, "वहां गेहूं से कंकर बिनना होता है, अनाज पिसना होता है" उनके भीतर यह समाधान होता ही नहीं था कि ऐसे औरतों के काम पुरुष करें, इससे स्वराज कैसे आ सकता है !

चम्पावरण के खेडूत सत्याग्रह की सहायता में गांधीजी आए तथा बिहार के जाने माने वकीलों भी चम्पावरण जा पहुंचे । यहां के कृषकों से जबरदस्ती से नील की बोआई कराते थे तथा कई प्रकार के जुल्म गुजारते थे । गांधीजी ने बराबर लडाई जारी रखी तथा अंग्रेज हुकूमत को सबक सिखाया । गांधीजी के चम्पावरण जाने पर खेडूतों के मनसे भय गया । अंग्रेजों की हार हुई तथा गांधीजी सारे देश में प्रसिद्ध हुए ।

यह खबर अहमदाबाद भी पहुंचे; और गुजरात क्लब के मित्रों ने इस बहादूर मानव की प्रशंसा की । गांधीजी को गुजरात कलब के अध्यक्ष बनाए गए । तब से वल्लभभाई गांधीजी के प्रति अधिक आकर्षित हुए । गांधीजी ने वल्लभभाईमें छिपी शक्तियों को पहचाना । इस प्रकार भारत की दो महान विभूतियां एक दूसरे के ओर करीब आने लगीं, जिन्हों ने आगे चलकर भारत की आजादी का सपना सिद्ध किया ।

1916में बम्बई प्रांतीय राजकीय परिषद का अधिवेशन जनाब झीणा की अध्यक्षता में अहमदाबाद में मिला । उसका सारा प्रबंध गुजरात सभा ने ही किया था । परिषद में हिस्सा लेने के लिये बम्बई से विठ्ठलभभाई पटेल विशेष रुप से आए थे । दोनों भाई साथ-साथ परिषद में जाते थे। लेकिन वल्लभभाई ने उसमें खास हिस्सा न लिया । नरम प्रकृति के अग्रणियों की विचारधारा वल्लभभाई को

पसंद न थी । गर्म दल वाले तीखे तेज भाषण देते थे, किंतु उनके पास कोई ठोस योजना न थी । अतः वल्लभभाई को खिंच नहीं पाए । वल्लभभाई को इस परिषद में कोई विशेष परिणाम नहीं मिला ।

अहमदाबाद नगरपालिका में म्युनिसिपल इजनेर के रुप में संपूर्ण योग्यता वाले दो हिन्दी इजनेरों के स्थान पर मेकासे नाम के अंग्रेज इजनेर को कमिशनर ने अपनी सत्ता से बिठा दिया । उस समय गुजरात सभा के पुराने मंत्री डॉ. जोसेफ ने अंग्रेज इजनेर के पक्ष में मत दिया था । उस के एक ही मत से वह चुन लिया गया था । जोसेफ को मंत्री के स्थान से हटाने की आवश्यकता थी । लेकिन बिल्ली के गले में कौन घंट बांधता ? नये मंत्री के चुनाव का जब प्रश्न आया तो वल्लभभाई ने खडे हो कर पुराने तीन मंत्रियों में से जोसेफ का नाम निकाल दिया तथा श्री मावलंकर का नाम जाहिर किया । सभी ने इस नाम को स्वीकार लिया ।

गांधीजी के गुजरात सभा के अध्यक्ष होने से उसके काम शीघ्रता से होने लगे । सभा ने निर्णय लिया कि गुजरात में प्रतिवर्ष राजकीय परिषद की जाय । पहली राजकीय सभा गोधरा में आयोजित हुई । जिस की अध्यक्षता पंचमहाल के अग्रणियों की इच्छा से गांधीजी ने की ।

गोधरा के परिषद से गुजरात के राजकीय जीवन का नया दौर शुरु हुआ । प्रत्येक नेता अपने विचार प्रजा के सामने रखते । सभी को हिन्दी में बोलना चाहिए ऐसा गांधीजी का फरमान था । बोकमान्य तिलक भी उसमें पधारे थे ।

परिषद का अधिवेशन पूर्ण हुआ उसी रात गोधरा के हरिजन वास में अंत्यत परिषद आयोजित हुआ । ठक्करबापा, मामा फडके तथा इन्दुलाल याज्ञिक के प्रयत्नों से इस सभा का सुंदर आयोजन हुआ था । परिषद में विठ्ठलभाई तथा वल्लभभाई दोनों उपस्थित थे । विठ्ठलभाई ने साधुओं जैसे गेरुवे रंग का लंबा चोला तथा सर पर कानटोपी आदि पहने हुए थे । वे एक कोने में बैठे थे । ठक्करबापा ने आग्रह करके उन्हें गांधीजी के समीप बिठाया । उन का यह विचित्र वेश देखकर गांधीजी समेत सभी हंस पडे । अंत्यज परिषद की महत्ता के बारे में तथा अस्पृश्यतानिवारण के पक्ष में प्रवचन हुए । अंत में गांधीजी विठ्ठलभाई के कंधे पर हाथ टेककर खडे हुए और बोले "नरसिंह मेहताने गाया है कि, 'पक्षापक्षी त्यां नहीं परमेश्वर' अतः यहां दो दिन तक राजकीय परिषद चला उस में परमेश्वर

थे या नहीं यह कहा नहीं जाता । किंतु इस सभा में तो वह अवश्य है ।"

फिर विठ्ठलभाई के चोले पर हाथ फेर कर गांधीजी ने आगे कहा, "आज विठ्ठलभाई इस पोशाक में यहां बैठे हैं, अतः में उनकी छाती टटोलकर देखता हूं कि उनके भीतर अंत्यज प्रेम है या नहीं ? यदि है तो हम इस कार्य में अवश्य जीत पाएंगे ।"

राजकारण में प्रवेश

गांधीजी का वक्तव्य पूर्ण होने पर विठ्ठलभाई खडे हुए तथा बोले "मेरी यह पोशाक देखकर यहां बैठे लोगों को आश्चर्य हुआ होगा । लेकिन बम्बई में अक्सर मैं इसी पोशाक में घूमता हूं । इस का यही कारण है कि मैं साधु हूं । मेरे आगे पीछे कोई नहीं है । लेकिन मैं गांधीजी को यकीन दिलाता हूं कि इस पोशाक के उपर जो दिखाई देता है, वही मेरे भीतर भी है ।"

प्रथम प्रजाकीय–राजकीय परिषद के अध्यक्ष गांधीजी थे, अतः इस परिषद की बनाई गई कारोबारी समिति के प्रमुख भी वही बने, तथा वल्लभभाई को कारोबारी के मंत्री बनाए गए । इस प्रकार वल्लभभाई का सीधा राजकारण में प्रवेश हुआ तथा गांधीजी के साथ काम करने का सुवर्ण अवसर प्राप्त हुआ

मजदूरीप्रथा नाबूदी के लिए मि. प्रेट को गांधीजी की सूचना से वल्लभभाईने पत्र लिखे लेकिन उसे उस कमिशनर ने टोकरी में डाल दिए । वल्लभभाई गुस्सा हुए लेकिन गांधीजी की सलाह थी कि सत्याग्रही कभी अपना धैर्य नहीं खोता; परिषद के मंत्री के रुपमें वल्लभभाई को कमिशनरने बुलाया तो वल्लभभाई ने फौरन उत्तर दिया, इस को में मिलने जैसा मुजे नहीं लगता । आप को प्रत्यक्ष मिलने की आवश्यकता लगती हो तो परिषद के कार्यालय पर अवश्य पधारें, में अवश्य बडे उत्साह से मिलूंगा ।'

आधुनिक अहमदाबाद के सर्जक

राजकारण में प्रवेश कर के वल्लभभाई ने अपनी शकित का परिचय दे दिया

था । उस के बाद अहमदाबाद में महामारी, अकाल आदि आपत्तियों के काल में वल्लभभाई प्रजा के साथ खडे रहे तथा उस की सेवा द्वारा अपने जीवन को भी संवारा । वल्लभभाई सेनेटरी कमिटी के अध्यक्ष भी थे । भगुभाई के वंडे में अस्पताल की सुविधा की गयी थी।

नगरपालिका जैसी स्थानिक स्वायत्त संस्थाओं को ब्रिटीश सरकार के सामने प्राणवान लडाई की संस्था बनाने में तथा नगरविकास की नींव डालकर स्वराज के लिये हिंदीजनो की योग्यता साबित करने में 1920-30 के दशक में तत्कालीन राजनीतिज्ञों ने अपने अपने नगरों की म्युनिसिपालिटीओं की अध्यक्ष ली थी । नेहरु ने एक पत्र में लिखा है कि इस कार्य में अहमदाबाद म्युनिसिपालिटी के अध्यक्ष के रुप में वल्लभभाई सबसे अधिक सफल रहे थे । नेहरु–अल्लाहाबाद, राजेन्द्रबाबू–पटना, चित्तबाबू–कलकता, विठ्ठलभाई–बम्बई, आसफखान–कटक तथा राजाजी–मद्रास में अच्छे कार्य कर रहे थे।

1918-28के दौरान अहमदाबाद नगरपालिका में अध्यक्षपद समेत के स्थानों पर वल्लभभाई ने काम किए थे । उस समय उन्हों नें नगरपालिका के मंजूर हुए विकास के कामों को पूर्ण करने में इस या उस ज्ञाति का विचार तक नहीं किया था । भटकते कुत्तों को पकडने के निर्णय का विरोध जैन समाजने किया था । लेकिन वल्लभभाई झुके नहीं । जमालपुर के मार्गमें एक कब्र ट्रेफिक को विघ्नकर्ता थी, उसे म्युनिसिपालिटी तंत्र द्वारा हटवा दी । नगर के विकास की दीर्घदृष्टि अहमदाबाद के इस सूत्रधार में थी । बीसवी सदी के योग्य ऐसे नगर के विकास का मानचित्र बनानेवाला यह पहला नेता था वह बाद में स्वीकारा गया । म्युनिसिपलिटी के कारोबार में भी वे कौम या धर्मप्रेरित भावनाओं को आने नहीं देते थे । क्यों कि वे मानते थे कि म्युनिसिपालिटी एक धर्मनिरपेक्ष संस्था है, तथा उसे बिनधार्मिक स्वरुप के–प्रजा की सुविधाएं बढाने के तथा नगरविकास के काम करने हैं ।

वल्लभभाईने खिलाफ हिलचाल को साथ दिया । मुस्लिम भावनाओं को समजकर म्युनिसिपालिटी का रोशनी आदि का कार्यक्रम नहीं करने का निर्णय लिया ।

वे कौमवादी नहीं थे !

वल्लभभाई को कौमवादी कहने वालों की आंखें खोलने के लिये एक बात बताना यहां आवश्यक है । वल्लभभाई भारतका बंधारण बनाने के समय अल्पभतियों के हितों के लिये बनायी गई समिति के अध्यक्ष थे । मुस्लिम सहित अल्पमतियों के लिये देश का राज्यतंत्र सेक्युलर हो तथा उसमें अभ्पमतियों के न्याय या उचित (लेजिटिमेट) हकों की उन्हें खातरी मिले व उसके लिये बंधारणमें प्रबंध हो इसके लिये इस समिति का संचालन करनेमें वल्लभभाईने बडी महत्त्व की भूमिका निभाई थी । लेकिन एम. वी. पामली या ग्रेनविल आस्टिन जैसे बंधारण पर बंधारण सभा की कार्रवाई के आधार पर लिखनेवाले विद्वानों के ग्रंथो को देखने के लिये, उन्हें कौमवादी माननेवालों को फुरसत कहां ! उनकी आयोजन तथा व्यवस्था शक्ति के लिये जोन ग्रंथर जैसे आंतर राजकीय विवेचक भी वल्लभभाई की शक्तियों की जी भर कर प्रशंसा करते हैं ।

वल्लभभाई पटेल को कौमवादी बताने से पहले उचित ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य विकसाने की क्षमता पाएं । उन्हों ने तो केवल सेक्युलारिझम (बिन सांप्रदायिकता) के नकारात्मक अभिगम के बजाय सेक्युलराइझेशन–कौम–ज्ञाति के स्थान पर विशाल राष्ट्रीय संस्कृत को बनाने की) प्रक्रिया को पोषण दिया । राष्ट्रीय एकता के ऐसे शिल्पी के मूल्यांकन में छिछोरापन नहीं चाहिए वरन् ठोस तथ्यों को ही बोलने दें । वल्लभभाई आयोजन तथा व्यवस्थाशक्ति के बेताज बादशाह थे । सरकार के खिलाफ जंग में भी वल्लभभाई की शक्ति का अंदाजा की खेडा क्रांति से मिला । क्रांति की सफल पूणाहूति के अवसर पर गांधीजी ने बताया कि उपसेनापति के रुप में यदि मुजे वल्लभभाई न मिले होते तो, जो कार्य हुआ है वह नहीं होता । गांधीजी ने वल्लभभाई का हीर खेडा की क्रांति में परखा और दोनों में आजीवन प्रेम व श्रद्धा का सेतु बना ।

1921-22के असहकार आंदोलन पर राष्ट्रीय शिक्षा की एक अजीब–सी लहर गुजरात में उठी । यदि नगरपालिका की प्राथमिक शालाओं में असहकार हो तो आंदोलन को नया रंग मिलेगा, यह सोचकर वल्लभभाईने उस में मन पिरोया । उन्हों ने एक योजना बनायी । यह आंदोलन कितना चलेगा यह परखने के लिये

उन्हों ने दो शिक्षकों से प्रार्थनापत्र रखवाया कि वे असहकारी शालाओं में सिखाना पसंद करेंगे । दूसरी ओर नगरपालिका में यह ठहराव पसार करवाया फि उसकी शालाओ में राष्ट्रीय नीति से शिक्षा दी जाय । सरकारी तंत्र से मुक्त ऐसे राष्ट्रीय शिक्षण के ठहराव अहमदाबाद उपरांत नडियाद तथा सूरत की नगरपालिकाओं में भी करवाए । सरकार ने भी यह आंदोलन तोडने के लिये अपनी सारी शक्तियां जुटा ली । रात ही रात में सरकारी ठहराव हुए, धमकिया दी गई, शिक्षकों के वेतन रुकवाएं, फिर भी व्यूहरचना में वह वल्लभभाई को हरा न पायी । नगरपालिकाएं रद्द कर दी गई, किंतु कोई फर्क न पडा । कोठा युद्ध जेसा चला लेकिन वल्लभभाई के सामने सरकार के हाथ ढीले पड गए । सरकार ने नगरपालिका के व्यकितगत सभ्यों से आंदोलनकाल की शिक्षकवेतन की राशि वसूल लेने के लिये दावा कर दिया । वहां भी वल्लभभाई ने कानूनबाजी में सरकार को हराया । हाईकोर्ट से सरकार के खिलाफ परिणाम मिला ।

ईसवी सन 1923 के मार्च में नागपुर नगरपालिका के मकान पर राष्ट्रीय झंडा फहराने की मना कर दी गई । इस पर पंडित सुन्दरलालजी के नेतृत्व में नागपुर झंडा सत्याग्रह शुरु हुआ । सुन्दरलालजी तथा जमनालालजी बजाज की गिरफतारी के पश्चात् सत्याग्रह का नेतृत्व वल्लभभाई को सौंपा गया । दासबाबू आदि का विरोध होने पर भी, वल्लभभाई ने स्वयं सेवकों से रुपयों के लिये अपील की । सरकार ने जैल में जानेवालों को मन–सवा मन अनाज पीसने के लिये सौंप कर, बिलकुल भुसा जैसा कंकरियों वाला खुराक देकर सताना चालू किया । सत्याग्रह बराबर चला । श्री विठ्ठलभाई ने राजद्वारी कूनेह का उपयोग कर के समजौता करवाया तथा सत्याग्रह यशस्वी बना ।

नागरपुर के बाद बोरसद का आंदोलन आया । बोरसद इलाकेमें लुटारुओं का बडा त्रास था । इन लुटारुओ को कब्जे करने के लिये सरकारने विशेष पुलिस रखी । इन पुलिसों को पालने का खर्चा वसूलने तथा जनता लुटाररुओं का आश्रय देती है ऐसा आक्षेप डालकर उसे दंड देने के लिये हैडिया कर डाल दिया । सरदार के साथियों ने स्वयं जांच कर के तहसील की जनता हैडियाकर का सामना करने के लिये तैयार है, ऐसा बताया । तब खातरी कर के वल्लभभाई ने नेतृत्व लिया । सारी व्यूहरचना ऐसी की कि लोग दिन को पशु समेत घरों को ताला

लगाकर खेतों में चले जाएं । जप्ती के लिये अफसरों के आने पर सीम के बरगद पर रखे नगाडे को बजाया जाय, जिससे सभी को इस बात का पता चल जाय बोरसद के तथा दूसरे बाजार दिन में बंद रहे तथा रात को फानूस व किट्सन लाइट के प्रकाशमें बाजार का काम चले । ऐसा एक संप पैदा किया कि तलाटी तक के सरकारी अफसरों को सत्याग्रहियों के नेताओं की अनुमति मिलने पर ही दैनिक खाने का सामान व बैलगाडी आदि वाहन मिले । वल्लभभाई की जासूसी व्यवस्था ऐसी थी कि सरकार ने लुटारु को पकडने के लिये दूसरे लुटारु को बंदूक तथा गोलियां देकर लूटने की छुट दी थी, इसके गुप्त कागज कब्जे कर के प्रकट कर दिऐ । सरकार को झुकना पडा और हैडिया कर माफ हुआ ।

अहमदाबाद शहर में पानी का प्रश्न विकट बना हुआ था । ऊंचाईवाले भागों में पानी पहुँचता न था । इस समस्या को सुलझानेवाले किसी इजनेर की आवश्यकता नगरपालिका को थी । कमिशनर ने मकासे नाम के अंग्रेज को नियुक्त किया, जो इस कार्य के लिये असमर्थ था । कमिशनर ने उसकी योग्यता सिद्ध करने के लिये पानी के अभाववाले स्थलों को देखने का कार्यक्रम रखा। वल्लभभाई को भी अध्यक्ष के रुप में बुलाया गया । ढाल की पोल के पास सब इकठ्ठे हुए। इस से पहले कि वल्लभभाई कुछ बोले, मि. प्रेट बोल उठे, "मि. पटेल, सही उपाय तो यह होगा कि आपकी समिति इस इजनेर को सहयोग दें।' वल्लभभाई ऐसी उद्धताई कैसे सहन कर सकते थे ? उन्होंने गरजकर कहा, "सही उपाय तो इस नालायक इजनेर को हटा देना है। आप लोगों ने बिठाए इस इजनेर ने हम से क्या कहा है, और हम लोगों ने क्या नहीं किया है, यह बताएं। फिर भी जब गुजरात सभा के मंत्री पानी के बारे में आप से मिलने आए तो आप ने हमारे घर जला देने की राय दी। इस फसाद की जड में जो है, उसी का घर क्यों नहीं जलाएं?'

प्रेटने कहा, "मि. पटेल, आप बात करने के मूड में नहीं लगते।'

वल्लभभाई ने कहा, "कैसे होऊं ?

बात यहीं रुक गई और कमिशनर अपनी टोली के साथ चल दिए। इजनेर का इस्तफा आ गया।

महात्मा गांधीजी ने काका कालेल्कर के कहने से तथा दादा साहब मावलंकर

की अनुमति से विद्यापीठ पुस्तकालय अहमदाबाद नगरपालिका को सौंप दिया। वल्लभभाई जैल से बाहर आए तो उन्हों ने महात्माजी से कहा, "यह अनुदान योग्य नहीं है।" और उन्हों ने पुस्तकालय वापस ले लिया, जो गूजरात विद्यापीठ ग्रंथालय के रुप में फला-फुला है।

1934 की मध्यस्थ धारा सभा के चुनाव में बम्बई के अग्रणी श्री नरिमान ने जानबुझ कर उमिदवारी पत्रक भरने में चुक रखी थी, अतः वह रद्द हुआ। और श्री नरिमान की निष्ठा का अंदाजा वल्लभभाई को आ गया। फलतः 1937 में जब बम्बई का मंत्रीमंडल बनाने का प्रश्न आया तो वल्लभभाईने श्री नरिमान की पसंदगी नहीं की।

वर्तमान पत्रों तथा सभाओं में उनके ऊपर कई आक्षेप किये गए। अतः गांधीजी की ओर से उन्हों ने तपास पंच ठहराया और नरिमान तकसीरवार ठहरे। फिर भी वल्लभभाई ने कभी किसी पर बैर नहीं रखा था। श्री नरिमान दिल्ली के अस्पताल में मर गए तो खबर पाते ही वे वहां पहुँच गए। तथा उनकी देहको बम्बई पहुँचाने के लिए विमान आदि का प्रबंध करने में अग्रसर रहे। ऐसे विशालहृदयी थे वल्लभभाई।

प्रांतिक स्वराज के मंत्री मंडल के समय मध्यप्रदेश के मुख्य प्रधान डॉ. खरे ने पार्लियामेन्टरी बोर्ड के शिस्त को तोडा तो वल्लभभाईने उन्हें भी उस पद से हटवा दिया। वल्लभभाई के सामने कई आक्षेप किये गए पर वे दृढ रहे।

स्वातंत्र्य की जंगों के दौरान उन्हों ने प्राण हथेली में रखकर काम किया है और सरकार को किसी भी स्थान पर उन्हों ने जीतने नहीं दिया। वल्लभभाई को यरवडा, नासिक तथा अहमदनगर में बडी शारीरिक यातनाएं सहन करनी पडीं। जो एक वीर की भांति उन्हों ने सह लीं । भोपाल के नवाब ने तो देशी राज्यों के विलीनीकरण के दौरान उनकी जान लेने तक की कोशिश की थी। गुजरातमें भी जामनगर में वीरावालाने वल्लभभाई को मरवा देने का षड्यंत्र रचा था ।

वल्लभभाई पटेल बेजोड मुत्सद्दी, अप्रतिम वीर तथा मनुष्य को परखने वाले व्यक्ति थे। वे कहते थे, "सहिष्णुता अहिंसा का प्राण है।"

न्याय के मामले में वल्लभभाई कभी झुकते न थे, तथा किसी की भी शर्म में

पडते न थे। फिर वह कोई व्यक्ति हो या स्वयं सरकार। जनता के अधिकारों के लिये वे सदैव झुझते रहे।

वल्लभभाई पटेल का संसार स्वातंत्र्य संग्राम के एक वीर, न झुकने वाले योद्धा के रुप में पहचानता है । लेकिन वे खेडूत की संतान थे, इस लिये रचनात्मक प्रकृति के थे। खेडूत फसल को नुकसानकर्ता जंगली घास को काट देता है। उसी प्रकार जनताविकास के कामों में बीचमें आते तत्त्वों की सफाई का काम वे पहले हाथ में लेते थे। अहमदाबाद की नगरपालिका में भी उन्हों ने प्रारंभ में आवश्यक सफाई कर दी थी। फिर जनता की सुविधाओं के काम एक के बाद एक हाथ पर लिए तथा सफलतापूर्वक पूरे किए ।

खेडा सत्याग्रह

मैं ने सोचा कि उपसेनापति कौन होगा? तब मेरी निगाह वल्लभभाई पर पडी । मुजे कुबूल करना चाहिए, कि मैंने भाई वल्लभभाई की प्रथम भेंट की तो मुजे लगा कि यह अक्कड पुरुष कैसा होगा? वह क्या करेगा? लेकिन जब मैं उनके सम्पर्क में आया तो मुजे लगा मुजे वल्लभभाई तो चाहिए ही! वल्लभभाईने सोचा कि अभी वकालत चलती है, नगरपालिका में बडे–बडे कार्य कर कहा हूं! लेकिन उन से भी बडा कार्य यही है । मेरा व्यवसाय तो आज है और कल नहीं । मेरे पैसे भी कल उड जाएंगे । मेरे वारिस उन्हें गंवा भी दें । इससे बेहतर मैं उनके लिये उत्तम वारिसा छोड जाऊं । ऐसा सोचकर उन्हों ने जंग में हिस्सा लिया । मुजे यदि वल्लभभाई न मिले होते तो जो कार्य हुआ है, वह न होता, ऐसा बडा शुभ अनुभव मुजे इस बिरादर से हुआ है । –गांधीजी ।

खेडा जिला अपनी समृद्धि, फलाऊपन तथा विशेष रुप में अपनी खुद्दार प्रजा के कारण सरकार की आंखो में खटक रहा था ।

1917 के बरसात में अतिवृष्टि हुई और बडी आपत्ति आयी । खेती नष्ट हो गई । खेडूतों ने लगान को माफ कर देने के लिये सरकार से अनुरोध किया । लेकिन सरकार ऐसा नहीं चाहती थी । श्री मोहनलाल पंड्या ने खेडूतों से ऐक प्रार्थनापत्र लिखवाया, जिस में बताया गया कि "अतिवृष्टि के कारण जिले में एकंदर पाक चार आनी से भी कम हुआ है । अतः सरकार इस वर्ष की लगान माफ कर दें ।' होमरुल लीग की शाखाओं के मार्फत बाईस हजार खेडूतों के हस्ताक्षरवालीं अर्जियां बम्बई सरकार को भेजी गई । बम्बई धारासभा के सदस्यों श्री गोकुलदास पारेख तथा श्री विठ्ठलभाई पटेल को भी भेजी गई । ये दोनो सदस्य तथा श्री मावलंकर स्वयंजांच के लिये इन गांवों में घुमे । ठक्करबापा ने भी मुलाकात ली । और टाइम्स ओफ इन्डिया में लेख लिखकर मुखिया तथा तलाटीओं के जुल्म प्रकट किए । सरकारी अंग्रेज अफसर भी अपनी ही बात सही मनवाकर जनता की वाजिब मांग को ठुकरा रहे थे ।

दूसरी ओर चम्पावरण के प्रश्न में खेडूतों को जीत मिली थी । राजकीय

जागृति आने लगी थी । बम्बई की धारासभा में श्री पारेख तथा विठ्ठलभाई पटेल ने यह प्रश्न जोरों से प्रस्तुत किया तथा रेवन्यू मेम्बर और गवर्नर से भेंट की । फिर भी खेडूतों की तद्‌न वाजिब मांगों का सरकारने अस्वीकार किया ।

इस इलाके के कार्यकर्ता तथा खेडूत अहमदाबाद में गांधीजी से मिले । इस भेंट के बाद गुजरात सभा की कारोबारी की सभा वल्लभभाई के घर पर आयोजित हुई । काफी सोच विचार व चर्चाओं के बाद सभी सदस्य आंदोलन के लिये कटिबद्ध हुए । गांधीजी का आग्रह था कि आंदोलन के चलने तक गुजरात सभा के मजबूत सदस्यों में से एक का वहां पाल्थी मारकर बैठ जाना चाहिए । वल्लभभाईने यह प्रस्ताव स्वीकार लिया । गांधीजी बडे प्रसन्न हुए ।

गांधीजी की सलाह मानकर खेडा जिले की खुद्दार जनता ने अपनी न्यायी मांगो के लिये लड लेना तय किया । नडियाद में खेडूतों की बडी सभा हुई । नडियाद अनाथालय में गांधीजी को ठहराया गया । गांधीजी के साथ अहमदाबाद से वल्लभभाई उपरांत शंकरलाल बैन्कर, अनसूयाबहन, इन्दुलाल याज्ञिक, आदि आ पहुंचे । सत्याग्रह के तमाम आंदोलनों में नडियाद का अनाथालय तथा संतराम मंदिर धर्मयुद्ध की छावनी बन गए । गुजरात में यह प्रथम आंदोलन होने के कारण लोगो में अजीब कुतूहल था । उस जमाने में सरकारी अफसरों के रोब से घर के बाहर जाने में भी डरने वाले हजारों की तादादमें नडियाद की सभा में उमड पडे । गांधीजी ने इस सभामें बडा प्रेरक प्रवचन किया । और खेडूतों से अपने ढोर-ढांकर, घरबार तथा जमीनें निलाम हो जाने पर भी प्रतिज्ञाबद्ध रहने का अनुरोध किया । जिससे खेडूतों को सरकार के जुल्मों के सामने लडने को नया बल मिला ।

इसी वर्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन इन्दौर में होने वाला था । गांधीजी उसके अध्यक्ष थे । वे जब इन्दौर गए तो इस आंदोलन के उपसेनापति वल्लभभाई हुए ।

इतना बडा आंदोलन वल्लभभाई के लिये पहला अनुभव था । वे सत्याग्रह के मर्म को भांप गए । खेडा जिले के खेडूतों की दूसरी सभा नडियाद में मिली । उसमें गुजरात सभा के अग्रणीओं, बम्बई की होमरुल लीग के अग्रणी उपस्थित थे। सभा की अध्यक्षता से बोलते वल्लभभाईने अपनी जोशीली बानी में आंदोलन की गंभीरता को समजाते हुए कहा "इस आंदोलन में सारा देश जल उठेगा । कष्ट

सहे बिना सुख नहीं मिलता। यदि मिले भी तो वह अधिक नहीं टिकता। मजबूत व दृढ विचारवाली जनता ही राज्य की शोभा है। नालायक व भीरु जनता की वफा में कोई सत्त्व नहीं है। **नीडर व स्वाभिमानी प्रजा जो वफा बताती है, वही प्रजा सरकार को शोभा देती है।**

'तेईस लाख की लगान में से **पौने दो लाख की रकम मौकूफ** रखी गई है.... **जिस** वीर पुरुष ने यह आंदोलन **उठाया है,** वह **नामरद को मर्द बना** सकता है तथा खेडा जिला हिंद में वीर पुरुष **की भूमि है...... एक** बार कष्ट सहकर सरकार की नीति बदलेंगे तभी नित्य का दुःख टलेगा।'

गांधीजी की मांग के उत्तर में वल्लभभाईने खेडा जिले में अपना डेरा डाला। गांधीजी की उपस्थिति में वे सभा में एक भी शब्द नहीं बोलते थे। सत्याग्रह शास्त्र के आचार्य के रुप में गांधीजी जिस प्रकार आंदोलन चला रहे हैं, उसका सूक्ष्मता से वल्लभभाई निरीक्षण कर रहे थे। जनता को गांधीजी किस प्रकार संवार रहे हैं उसका अवलोकन वे कर रहे थे। वल्लभभाई स्वयं अपने आप को संवार रहे थे। वल्लभभाई पैदाइशी नेता तथा गांधीजी के सैनिक थे। गांधीजी भी सूक्ष्मता से वल्लभभाई को जांच रहे थे। 4 अप्रैल को करमसद की सभा में गांधीजी ने जो शब्द कहे वह वल्लभभाई के व्यकित्व की झांकी कराते हैं – "भाई वल्लभभाई का यह वतन है। वल्लभभाई अभी भट्ठी में हैं। उन्हें अच्छी तरह तपना है। फिर भी मुजे लगता है कि उसमें से हम कुंदन ही पाएंगे। आप चैन से उन्हें बिदा देना।'

इस दौरान वल्लभभाई के पहनावे में भी परिवर्तन आता है। यूरपियन ढंग के कपडे छोडकर धोती, कमीज, उसके उपर बंडी तथा सर पर टर्किश प्रकार की टोपी जो बैंग्लोर कैप के नाम से प्रसिद्ध थी। भोजन तो उनका सादा ही था। गांवों में घुमते थे तो खेडूतों के साथ भोजन लेने का आनंद लुटते थे।

गांधीजी के शब्दों का जादूई असर जनता पर हुआ। खालसा की नोटीसों व जाती का डर उस के मन से चला गया वल्लभभाई भी कार्यकर्ताओं के साथ गांव–गांव में घुमकर सत्याग्रह की समज दे रहे थे। सत्याग्रह की विजय की कूंजी त्याग और सहनशीलता में रही है, वैसा वे कहते थे। कमिशनर प्रेट के साथ भी सभा में वल्लभभाई से झगडा हुआ था। हालांकि इस गोरे अफसर को

अपनी सभा में बोलने दिया वह भी आश्चर्यजनक था । मजदूरों की दृढता अहमदाबाद में टुट गई यह बात प्रेटने की तो वल्लभभाई ने कहा, "आपकी बात गलत है । क्योंकि उस वक्त काम करने में मैं अकेला था । तथा पंचने निर्णयका स्वीकार किया था ।'

इस आंदोलन का दूसरा विशिष्ट पहलू यह था कि पाटीदार स्त्रियां भी जैल का डर त्याग कर सत्याग्रह का मर्म समज कर उस में शामिल हुई थी । इतना ही नहीं, बल्कि अपने ढोर–ढांकर, गहने तथा बरतन आदि स्वेच्छा से जप्त होने देती थीं । यह सब देखकर बम्बई के वर्तमान पत्रों के पत्रकार भी दंग रह गए थे । और उन्हों ने सत्याग्रही स्त्री–पुरुषों की त्यागभावना, खुद्दारी और साहस की प्रशंसा में लेख लिखे थे ।

आंदोलन का जो अंत आया उस के संदर्भ में गांधीजी तथा वल्लभभाईने पत्रिका प्रकट की । समजौता स्वीकार लेने का अनुरोध करने के पश्चात दूसरी पत्रिका में खेडा जिला की जनता को शाबाशी दी..... " ....यह आंदोलन उठाकर खेडा जिला की जनता ने स्वराज्य तथा समाज की शुद्ध सेवा की है । ईश्वर जनता का कल्याण करें ।'

गांधीजी तथा वल्लभभाई की सलाह के अनुसार खेडूतों ने समजौता स्वीकार लिया । इस आंदोलन में गांधीजी को वल्लभभाई की शक्ति के दर्शन हुए । और दोनों के बीच आपस में जो स्नेहबंधन हुआ वह आजन्म अटुट रहा ।

गांधीजीने युद्ध परिषद में खातरी दी थी कि सैन्य भर्ती में हम शक्यतः मदद करेंगे । इस बार भी वल्लभभाईने खेडा जिले के गांव घुम लिए । और जनता के वाक्बाणों को धैर्यता से सुन भी लेते थे । कभी गांधीजी सब्जी–रोटी बना लेते और दोनों खा लेते थे । नवागांव की धर्मशाला में रह भी लेते । जर्मनी की पराजय होने से यह प्रश्न सुलझ गया ।

दिल्ली की बडी धारासभा में एक नया कानून आने वाला था । यह कानून पसार होने पर सरकार किसी भी आदमी को संदेह पर से पकड कर कैद कर सकती और अदालत में केस चलाए बगैर चाहे जितने समय तक कैद रख सकती थी! बंगाला में तो वैसा कानून था ही । अब वह पंजाब और हिन्दुस्तान के अन्य हिस्सों में भी लागू होने वाला था । वल्लभभाई लगभग प्रतिदिन गांधीजी से मिलने

आश्रम में आते और सारा दिन उनके पास रहते थे । एक बार वल्लभभाई से काले कानून के बारे में चर्चा करते गांधीजी बोले, "यह कानून पसार होगा तो हमारे देश का सत्यनाश हो जाएगा ।" वल्लभभाई ने पुछा, "हम क्या कर सकते हैं?" उत्तर में गांधीजी ने कहा, "यदि थोडे आदमी भी प्रतिज्ञाबद्ध मिल जाय तो हमें आंदोलन करना चाहिए । मैं यदि बीमार न होता तो सर्वप्रथम मैं अकेला ही लडता । और दूसरों के मिल आने की अपेक्षा रखता ।"

इस प्रकार चर्चा होने के पश्चात् गांधीजी के परिचय में आए बीसेक लोग की छोटी–सी सभा साबरमती आश्रममें मिली । उसमें वल्लभभाई उपरांत सरोजिनी नाइडू, होनिमेन, उंमर सोलानि, शंकरलाल बैन्कर, इन्दुलाल याज्ञिक आदि उपस्थित थे । इस प्रकार काले कानून का विरोध करना चालू हुआ । गांधीजी की गिरफतारी के कारण दिल्ली, पंजाब, बम्बई में दंगे हुए । अहमदाबाद में हडताल हुई थी । वल्लभभाई के नेतृत्व में जुलूस स्टेशन से निकला । यह सरघस साबरमती की रेत में सभा के रुप में फैल गया । गांधीजी ने लिखी दो पुस्तकों सरकार ने जप्त की थीं । उसे बेचकर सविनय कानून भंग करने का कार्यक्रम आयोजित हुआ तथा उन्हों ने सत्याग्रह प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर किए थे उसे बेचने निकले । इस प्रकार कायदा का प्रकट रुप से भंग किया ।

असहयोग की आंधी

जलियांवाला हत्याकांड, पंजाब मार्शल लॉ तथा अत्याचारों, और देश में व्याप्त निर्दोष जनता पर दमन देखकर गांधीजी की आत्मा रो उठी । वे कट्टर असहयोगी बने । वल्लभभाई तो वैसे ही असहकारी स्वभाव के थे । असहकार के राष्ट्रव्यापी आंदोलन में वे गांधीजी के सर्वप्रथम साथी बने ।

'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है" यह मंत्र देने वाले लोकमान्य तिलक महाराज का 1920 की पहली अक्तूबर को बम्बई में देहांत हुआ । उस वक्त गांधीजी उनके पास थे । लोकमान्य ने अंतिम सांस लेते वक्त गांधीजी से कहा, 'मेरा अपूर्ण कार्य अब तुम्हें पूर्ण करना है ।'

गांधीजी ने स्वराज्य का झण्डा अपने हाथ में ले लिया । पंजाब के जुल्मों तथा

ब्रिटीशों ने तुर्कस्तान में खिलाफत की रक्षा करने का वचन तोडकर मुस्लिम धर्मका किया हुआ अपमान इन दो बातों का उत्तर लेने हिन्दु–मुस्लिम अग्रणीओं की एक सभा दिल्ली में आयोजित हुई । स्वराज्य ही इस अन्याय का उत्तर है, तथा सल्तनत के साथ संपूर्ण असहकार ही इसका एकमेव उपाय है यह समजाते हुए गांधीजी ने कहा, "यदि साहस हो तो इस सरकार का सहयोग देना छोड दो । सरकारी नौकरी को त्याग दो । शालाएं, कालिजें, धारासभाएं, मान–चांद, इनामें, कोर्ट–कचहरी, वकालत आदि सारी चीजें छोड दो तथा सरकार के साथ के सारे सम्बन्ध तोड दो । संपूर्ण असहकार करो ।" गांधीजी की इस अपील का बडा असर हुआ । इतना ही नहीं, बल्कि स्वदेशी आंदोलन भी जोरों पर चला । लोग टपोटप सब छोडने लगे । राष्ट्रीय विद्यार्थीपीठें भी बनीं ।

लाहौर की सभा में अहिंसक असहकार का अर्थ तथा उसकी शकित के बारे में समजाते हुए गांधीजीने कहा, "जिस में मरने का साहस हो, वही तलवार पकड सकता है । तलवार खिंचकर मरना है । असहयोय देकर भी मरना है । फिर जिस में दूसरे को मारना नहीं होता, ऐसी कूरबानी क्यों न दें ? सरकार से कह दें कि हमें जैल में डाल दो या फांसी लगा दें, लेकिन तुम्हें अब हमारा साथ नहीं मिलेगा..... हमारा साथ अब जैल में मिलेगा, फांसी के तख्ते पर मिलेगा । ऐसी ताकत के लिये विशेष इल्म की आवश्यकता नहीं है । केवल धैर्य की जरुरत है । ऐसा धैर्य रखनेवाला ही सच्चा वीर कहलाएगा । वही खुदा का सच्चा बन्दा है ।"

मद्रास की विराड सभा में उन्हों ने कहा, मैंने अपने शिर मोर जैसे अग्रणियों के खिलाफ होकर अमृतसर में सरकार को सहयोग देने का प्रस्ताव रखा । लेकिन सरकार ने मेरी मांगे कुबूल नहीं की, अतः मैं असहयोगी बना हूं । बंडखोर बना हूं । मैं जिस असहयोग की बात कर रहा हूं, वह संसार की बडी से बडी सरकार को भी अटका देनेवाला सहयोग है ।

कलकत्ता में कोंग्रेस का विशेष अधिवेशन होनेवाला था । उसमें असहकार आंदोलन का प्रस्ताव मंजूर करवाना था । इसके लिये गांधीजी तथा वल्लभभाई वातावरण बनाने के लिए घुम रहे थे ।

गुजरात राजकीय परिषद अगस्त की 27,28,29 के दिन अहमदाबाद में अब्बास साहब की अध्यक्षता में आयोजित की गई । स्वागत समिति के अध्यक्ष वल्लभभाई

पटेल थे । उन्हों ने अपने वक्तव्य में असहकार ही स्वराज्य प्राप्ति का केवल उपाय है, यह स्पष्ट रुप से बता दिया । असहकार दुधारी तलवार है, तथा उसमें जोखिम भी रहा है, ऐसी दलीलें करनेवालों को सचोट रदिया देते हुए वल्लभभाई ने कहा, "यह सही है कि असहकार में जोखिम है । लेकिन विश्व के कौन से देश को आजादी सरलता से प्राप्त हुई है ? और मौन बैठे रहने में भी क्या कम जोखिम है?......जोखिम के डर से जनता की उन्नति के महान प्रयोग छोड दिए गए हैं क्या?..... हमेशा जनता को गिरती देखकर तथा उससे बचने का कोई रास्ता दिखाए उस में बाधा डालने से जनता की उन्नति कैसे होगी? बंगाला के बटवारे से जनता का अपमान ही हुआ था । पंजाब के अन्याय भी क्या कम अपमान है?'

लोकमान्य तिलक को श्रद्धांजलि देनेवाला प्रस्ताव अध्यक्ष स्थान से प्रस्तुत करते हुए वल्लभभाईने सच्चे देश भक्त का जो चित्र खिंचा है वह अविस्मरणीय है, "हिंदुस्तान में अंग्रेजी शासन में नौकरशाही के खिलाफ अपने ही हथियारों से लडनेवाला तिलक जैसा कोई महान योद्धा आज तक पैदा नहीं हुआ । उस की अपार विद्वत्ता, उसका निर्मल चारित्र्य, उसकी अद्‌भुत सादगी, उसकी वीरोचित नीडरता, उसकी अनन्य देश भक्ति और सबसे अधिक तो भारतवर्ष में उसने जगाई हुई स्वराज्य की ध्वनि– यह उन्हों ने हमारे लिये रखा वारिसा है । उसका हम ज्यों–ज्यों उपयोग करेंगे बढता जाएगा । राजा–महाराजाओं के नाम मिट गए और मिटते जाएंगे, लेकिन स्वर्गीय लोकमान्य तिलक हिंदवासीओं के दिलों में सदैव निवास कर लेंगे । सत्ताधीशों की सत्ता उनकी मृत्यु के साथ ही समाप्त होती है । जब कि महान् देशभक्षों की सत्ता उनकी मृत्यु के पश्चात् ही सही अमल चलाती है ।"

इस परिषद में वल्लभभाईने अमृतसर में मिले कोंग्रेस अधिवेशन में गांधीजी कैसे सहकारी मिटकर असहाकारी बने उसका वर्णन दिया था । इस राजकीय परिषद ने सर्वानुमति से असहकार का प्रस्ताव मंजूर किया था । यहां गांधीजी उपस्थित थे । बापूने इस परिषद में हुए भाषणों में वल्लभभाई के भाषण को अविस्मरणीय तथा प्रभावशाली बताया था ।

कलकत्ता की कोंग्रेस में गांधीजी ने प्रकट किया कि जनता यदि असहकार का आंदोलन शांति से चलाएगी तो 'एक वर्ष में स्वराज' आ सकता है । लोगों ने बडे

उत्साह से यह पडकार उठा लिया । स्वराज्य फंड इकट्ठा करने में तथा चरखा चालू करने में गुजरात ने रंग दिखाया ।

कुछ नर्मवादी तथा सरकार के पक्षवाले स्थानिक लोगों ने एकत्र होकर अहमदाबाद में आम सभा आयोजित की थी । उस में भी वल्लभभाई उपस्थित रहे थे । कलेक्टर आदि का अंग्रेजी में बोलने का आग्रह होने पर भी वल्लभभाई गुजराती में बोले । कलेक्टर तथा अन्य अंग्रेज गृहस्थ सभा छोडकर चले गए । इस सभा में वल्लभभाई ने राष्ट्र के स्वमान तथा स्वत्वरक्षा का रामबाण उपाय केवल असहकार है यह बताया ।

गुजरात राजकीय परिषद का पांचवां अधिवेशन भडोच में 31-5-1921 और 1-6-1921 के दिन वल्लभभाई की अध्यक्षता में मिला । उन्हों ने असहकारियों को संबोधित करते हुए कहा, "हमें मोडरेट्स (विनीतवादीओं) की टीका करना शोभा नहीं देता । उनका चारित्र्य तथा उनका स्वदेशाभिमान हम से किसी तरह कम नहीं है । राजकारण में उनका अनुभव तथा उनका कौशल हम से बढकर हैं । लेकिन वे सुधार पर श्रद्धा रखते हैं, जिसे हम मोहजाल मानते है । हमारा जनता पर विश्वास है, जब की उन्हें जनता पर बिल्कुल विश्वास नहीं । मुजे विश्वास है कि उनकी सुधारे की भ्रमणा टुटने में देर नहीं लगेगी । हमारा तथा उनका लक्ष्य एक ही है । अपनी होशियारी से वे स्वराज्य पा सकते हैं तो ठीक है । हमें भी वही चाहिए...... इस परिषद में सरकार की, राजनीति की या हमारे मोडूरेट्स भाईओं की टीका करना छोडकर केवल हमारे कार्य को शीघ्रता से किस प्रकार पूर्ण कर पाएं उसीका विचार करना उचित है....... "

इस परिषद में गांधीजी, मौलाना शौकत अली तथा महमदअली भी उपस्थित थे । परिषद के अध्यक्ष स्थान से दिए भाषण में वल्लभभाई ने कौमी एक्य, अस्पृश्यता निवारण, शराबनिषेध, राष्ट्रीय शिक्षा तथा स्वदेशी की भावना आदि बाबतों पर चोटदार देशी भाषा में जोरदार दलीलें कर के अच्छा प्रकाश डाला था ।

स्वराज्य की उषा खिलने में अभी सालों का फासला था, तब स्वराज्य का शब्दचित्र वल्लभभाई के मानस में कैसा था, उसे जानने के लिये उनका परिषद में दिया गया प्रवचन देखिए : "हम ऐसा स्वराज चाहते हैं कि जिस में सूखी रोटी के अभाव से सैंकडो आदमी मरते नहीं हों, पसीना बहाकर पकाया अन्न खेडूतों के

बच्चों के मुंह से छीनकर विदेश घसीट लिया जाता नहीं हो, जिस में जनता को वस्त्र के लिये विदेशों पर आधार रखना पडता न हो, कुछ विदेशीओं को सुविधा देने के लिये राज्य का कारोबार विदेशी भाषा में चलता न हो, हमारे विचार तथा शिक्षा के साधन विदेशी भाषा में न हों, राज्य का कारोबार आसमान और पृथ्वी के बीच पृथ्वी के तल से सात हजार फूट उपर चलता न हो, महान देशभक्तों की आजादी भय में हो लेकिन शराबी की आजादी की रक्षा करने के लिये विशेष व्यवस्था स्वराज्य में नहीं हो, स्वराज्य में देश की सुरक्षा के लिये देश को गिरवी रखकर दिवाला निकालने का समय आ जाय इतना लश्करी खर्च न होता हो; स्वराज्यमें हमारा लश्कर भाडूती हो, तथा उसका उपयोग हमें गुलाम बनाने में और दूसरी प्रजा की आजादी को नष्ट करने में न होता हो, बडे अफसरों तथा छोटे नौकरों के बीच वेतन का भेद जमीन–आसमान जैसा न हो, इन्साफ महंगा तथा अशक्य जैसा न होता हो और सबसे विशेष बात तो यह है कि जब हमारा स्वराज्य होगा तब हमें अपने स्वदेश में तथा विदेश में जहां–तहां अपमानित होना पडता न हो ।

गांधीजी तथा वल्लभभाई की स्वराज्य की कल्पना में पश्चिम का कहलाता सुधारा बाधारुप था । उनकी जंग जितनी ब्रिटीश शासन के खिलाफ थी इतनी ही पश्चिम के प्रभावशाली सुधारों के खिलाफ भी थी । आजादी के बाद हमारी बौनी नेतागीरीने पश्चिम के सुधारों के प्रति जो दौड लगाई उसके कडुवे फल आज भारत माता की संतानें भुगत रहीं हैं और देश अवनति की ओर जा रहा है ।

पश्चिम के सुधारों के प्रति अपना रोष इस प्रकार वल्लभभाई ने प्रकट किया था, "कुछ लोग पश्चिम के सुधारों के पूजारी हैं । वे चरखे से देश को देढ सौ वर्ष पीछे ले जाने के भय देख रहे हैं । पश्चिम के सुधार जगत की अशांति का मूल देख नहीं पाते । राजा–प्रजा के बीच कलह करानेवाला, बडी–बडी सल्तनतों को नष्ट करनेवाला, महान राज्यों को ग्रहों की तरह टकराकर पृथ्वी का प्रलय लानेवाला, मालिकों तथा मजदूरों के बीच शत्रुता पैदा करनेवाला पश्चिमी सुधारा शैतानी शस्त्रों–सामग्रियों पर बना हुआ है । यह सुधारे का बवंडर सारे संसार पर जोरों से फैलता जा रहा है । ऐसी स्थिति में अकेला हिन्दुस्तान उसके सामने अडिग रहकर अपनी तथा हो सके तो जगत की सुरक्षा करना चाहता है । पश्चिम

का सुधारा हिंद में फैलाने की तमन्ना रखनेवालों के पास उस सुधारे को पचाने की क्या सामग्री हैं? हिन्दुस्तान इस सुधारे के पीछे दौडने में सदैव पीछे रहेगा । वह इस धरती के अनुकूल नहीं है । आत्मबल को पूजनेवाला हिन्दुस्तान इस शैतान के प्रभाव में कभी आनेवाला नहीं है ।' पांचवीं गुजरात राजकीय परिषद समक्ष किए गए इस वक्तव्य के बारे में गांधीजीने 'नवजीवन' के तंत्रीलेख में लिखा, "अध्यक्ष का प्रवचन संक्षिप्त, सादा, मुद्देवार तथा विनम्र था । उसमें जितना विवेक उतना ही शौर्य निहित था । साहस अथवा शौर्य के साथ तुच्छकार, उग्र भाषा आदि होनी ही चाहिए ऐसा हम अक्सर मानते रहते हैं । श्री वल्लभभाईने बता दिया है कि शुद्ध साहस के साथ तो शुद्ध सभ्य ही होती है ।"

आजाद भारत के इस महान शिल्पी ने कई साल पहले परिषद में कहे शब्द आज स्वराज्य प्राप्ति के बाद सच हो रहे हैं, यह कहने की आवश्यकता शायद ही होगी । तिलक स्वराज्य फंड में तथा चरखों के फंड में गुजरात अग्रसर रहा यह तथ्य ही दोनों नेताओं में समाया प्रेम बताता है ।

लोकमान्य तिलक की प्रथम संवत्सरी के दिन पहली अगस्त को सारे देश में शहरों तथा गांवों में विदेशी कपडे की होली जलाई गई । उस दिन अहमदाबाद में भी विराट होली जलाई गई । उसमें वल्लभभाई ने अपने बेरिस्टरी के चोले, कई सूट, टाइयां, कालर तथा आठ–दश जोडी जूते भी जला दिए । श्री मणिबहन तथा डाह्याभाई ने सरदार से पहले खादी पहनना चालू कर दिया था । मणिबहन को कई बार होता था – बापुजी (वल्लभभाई) खादी क्यों नहीं पहनते? अतः वल्लभभाईने जब से खादी धारण की तब से मणिबहनने संकल्प लिया कि "मेरे हाथ से कांते सूतर से बापुजी (वल्लभभाई)के लिये धोती बनाउंगी ।' तब से वल्लभभाई हमेशा मणिबहन के हाथों कांते गए सूतर की खादी ही पहनते थे ।

1920-21 का वर्ष असहकार की आंधी से गाज उठा । इसी दौरान युवराज प्रिन्स ओफ वैल्स हिन्दुस्तान की मुलाकात पर आए । असहकार द्वारा उनकी बडी अवहेलना की गई । देशनेताओं की गिरफ्तारी की गई । गांधीजीने उपवास चालू किए । पंडित मालविया मार्फत विष्टि हुई । किंतु वह निष्फल गई । क्योंकि गांधीजी ने तमाम नेताओं के पहले जैल से मुक्त करने के बाद ही विष्टि का आग्रह रखा ।

स्वराज्य का प्रथम चरण स्थानिक स्वराज्य की संस्थाएं थीं, अतः वल्लभभाईने वैसी संस्थाओं में उत्तम कार्य कर के नाम रोशन किया । राष्ट्रीय शालाएं भी चालू करवाई ।

36वां कोंग्रेस अधिवेशन

1921 में अहमदाबाद में मिलनेवाला 36वां अधिवेशन ऐतिहासिक दृष्टि से बडा महत्त्वपूर्ण था । सविनय कानून भंग के लिये थनगना रहे बारडोली तहसील को ना–कर के आंदोलन की नीली झंडी इस कोंग्रेस में मिलनेवाली थी । सबसे अधिक गांधीजी की नई दृष्टि तथा वल्लभभाई की आयोजन शकित का लाभ इस अधिवेशन को मिलनेवाला था ।

स्वागत समिति की रचना की गयी । स्वागत–प्रमुख के रुप में वल्लभभाई तथा मंत्री के रुप में दादासाहब मावलंकर को पसंद किया गया वह जैसे सोने में सुहागा था ।

कोंग्रेस का यह अधिवेशन बडा प्रशंसनीय रहा । कोंग्रेसके चुने गए अध्यक्ष देशबंधु दास जैल में थे । अतः उनके स्थान पर कोंग्रेस का कार्यक्रम सुचारु रुप से चलाने के लिये हकीम अजमलखान को अध्यक्ष के रुप में पसंद किया गया । आम अधिवेशन में वल्लभभाई पटेल ने प्रशंसनीय भाषण किया । अपनी विशिष्ट शैली में श्रोताओं को मुग्ध कर दिए । असहकार की अपार शक्ति में अपनी श्रद्धा व्यकत करते हुए उन्हों ने कहा :"..... प्रजामत पर अपनी सुरक्षा का आधार रखने के बजाय जो सरकार जबरदस्ती पर अपना आधार रखती है और उसी तरह बरसती हो उस की संस्थाओं से हमने संबंध तोड दिया है । उसका यही अर्थ है कि किसी भी हालात में हम खून–खराबी का त्याग करना चाहते हैं । मैं सत्त्यपूर्वक यह दावा कर सकता हूं कि हम ने मनसा, वाचा, कर्मणा अहिंसक रहने का प्रयत्न किया है । हमारी दुर्बलताओं पर विजय पाकर शुद्ध होने के लिये हमने सच्चे दिल से निश्चित प्रयत्न किया है । उसका सबसे स्पष्ट प्रमाण हिंदू–मुस्लिम एकता है...... हमारा कार्यक्रम हमने जोरों से चलाया है । फिर भी हम से विपरीत विचारवालों के साथ दोस्ती का सम्बन्ध टिकाए रखने के लिये हमने कोशिश की है । हमने देखा है कि सहिष्णुता ही अहिंसा का प्राण है ।'

तत्पश्चात् स्वागत–प्रमुख के रुप में अपने बयान में वल्लभभाईने खादी, अस्पृश्यता निवारण, शराबबंदी, आदि बातों पर सरल, सचोट तथा साफ बोली में सुंदर रोशनी डाली । अहमदाबाद कोंग्रेस अधिवेशन का सबसे बडा आकर्षणरुप आम अधिवेशन में सर्वानुमति से पसार हुआ सामूहिक सविनय कानून भंग का प्रस्ताव रहा था । यह बडे महत्त्व का प्रस्ताव गांधीजी ने स्वयं बनाया था तथा प्रस्तुत किया था । इस प्रस्ताव को नामदार विठ्ठलभाई पटेलने अनुमोदन दिया था।

सविनय कानून भंग के प्रस्ताव के अनुसार ना–कर की जंग के लिये बारडोली तालूका पसंद किया गया था । अधिवेशन पूर्ण होने पर गुजरात के कार्यकर्ताएं गांधीजी तथा वल्लभभाई के नेतृत्व में जंग की तैयारियों के लिये बारडोली पहुंच गए ।

बारडोली के जंग की पूर्व तैयारियां

असहकार की लहर सारे देश में फैल गई थी । देश की आजादी की हवा जमने लगी थी । जिसके परिणाम स्वरुप विद्यार्थीओं, वकीलों, प्रोफेसरों, धारासभ्य, कर्मचारियों आदिने इस असहयोग को साथ देकर सरकार के साथ का संबंध तोड दिया ।

ना–कर की जंग के लिये दो तालूकों ने तैयारियां दर्शाई थी । एक खेडा जिले का आणंद तालूका तथा दूसरा सूरत जिले का बारडोली तालूका । दोनो तहसीलें खुमारीमें कम ऊतरनेवाले न थे । दोनों ने धर्मयुद्ध के लिये तैयारियां कर दी । आणंद की तैयारी की बाते करते हुए बुजुर्ग अब्बास साहबने कहा, '.... सत्याग्रह का झंडा सर्वप्रथम खेडा जिले में फहरा है । आणंद तालूका के लोगों को उसकी तालीम मिली है । इस दृष्टि से इस तालूका का अधिकार विशेष है ।

फिर बारडोली का केस रजू करते हुए सूरत के नवयुवान अग्रणी कल्याणजीभाई मेहता (पटेल)ने तालूके की संपूर्ण तैयारी की शृंखलाबद्ध ढंग से बताईं : "अंग्रेज लोग हिंदुस्तान में आए तब सर्वप्रथम सूरत बंदरगाह पर ऊतरे थे । वहां उन्हों ने पहली कोठी बनायी । और फिर धीरे धीरे अपने पंजे पसार कर सारे हिन्दुस्तान पर कब्जा जमाया था । अब जब उसे बिदा देनी है तो वे सूरत से ही प्रस्थान करे

यही सर्वथा उचित है । 'दोनों में से सामूहिक सत्याग्रह के लिये पहला पसंद किस को किया जाय यह गांधीजी तथा वल्लभभाई के निर्णय पर निर्भर रहा । दोनों तालूकों की स्वयं मुलाकात लेकर ही निर्णय लेना तय हुआ । वल्लभभाई की पसंद बारडोली पर थी । क्योंकि खेडा जिले के लोग कुशल तथा गर्म मिजाज के थे । गांधीजी ने वल्लभभाई की सलाह का स्वीकार किया । सत्याग्रह के लिये बारडोली तय हुआ । बारडोली का सही रुख जानने का काम विठ्ठलभाई को सौंपा गया । ता 24 जनवरी से श्री विठ्ठलभाई ने बारडोली में अपना पडाव रखा । बारडोली के अग्रणी श्री कुंवरजीभाई, श्री कल्याणजीभाई, खुशालभाई, केशवभाई आदिने–गांव गांव घुमकर जांच शुरु की । विठ्ठलभाईने भी जांच कर ली । बारडोली जंग के लिये तैयार है ऐसी प्रतीति होने पर बारडोली तालूका परिषद आयोजित करना निश्चित हुआ । उस परिषद के प्रमुख के रुप में नामदार विठ्ठलभाई पटेल को चुना गया । श्री कुंवरजीभाई स्वागत–प्रमुख हुए । इस परिषद में गांधी–वल्लभभाई भी आए । असंख्य स्त्री–पुरुषों ने उपस्थिति दी । गांधीजीने दिया जंग का एलान सबने उठा लिया ।

परिषद के प्रमुख विठ्ठलभाई पटेलने लोगों को साफ शब्दों में कहा, "आपने जो कीर्ति पायी है, उसकी कीमत आपसे हिंदुस्तान मांग सकता है । यदि आप उस कीर्ति की कीमत देने में असमर्थ हों तो अभी से बता देना। ऐसा करेंगे तो आपका सारे हिन्दुस्तान पर उपकार होगा। एक बार जंग में कूदने के बाद कायरों की भांति पीछे हटने से बेहतर प्रारंभ से ही असमर्थता को स्वीकार लेने में शूरवीरता है ।"

गांधीजी ने सत्याग्रह की योग्यता के लिये कितने तैयारियां चाहिए तथा उसमें कितना जोखिम रहा है, उसका स्पष्टीकरण किया। उन्हों ने स्पष्ट किया की 'खुद प्राण देकर, मालमिलकत गंवाकर; बरतन ढोरढांकर खोकर; ताराज हो कर ही स्वराज घर में लाना है ।"

गांधीजी तथा विठ्ठलभाई की उपस्थिति में वल्लभभाई को कुछ बोलने के लिये रहा न था, उन्हों ने पैनी द्दष्टि से तालूका का नाप ले लिया था।

गांधीजी तथा विठ्ठलभाईने बारडोलीमें अपना डेरा डाला। देश के बडे–बडे अग्रणी बारडोली के आंगनमें आने लगे । मैथिलीशरण गुप्त जैसे महाकवि ने इस आंदोलन के लिये काव्य लिखा, 'विश्वस्त बारडोली, भारत की थर्मोपोली।" इस

प्रकार बारडोली स्वराज्य का तीर्थधाम बन गया। यहां के लोगों ने अस्पृश्यता को बडी तेजी से बिदा दे दी थी।

सूरत में पाटीदार आश्रम में कोंग्रेस कारोबारी की कमिटी की बैठक आयोजित हुई। उसी आश्रम के कमरे में बैठकर बाइसरोय को पत्र लिख कर एक प्रति रेजिनाल्ड रेनोल्ड नामके एक युवक के साथ 1-2-1922 के दिन भेजी गई।

सत्याग्रह तथा नेताओं के बारे में अफवाएं शुरु हुई। बारडोली में वल्लभभाई को गांधीजी के विराट दर्शन हुए। उनके दर्शनों के लिये लोग उमड पडे। बापु को आराम मिलता रहे तथा लोगों को उस महात्मा के दर्शन भी हों, ऐसा प्रबंध वल्लभभाई ने किया।

महादेवभाईने वल्लभभाई को हनुमान की उपमा दी है। किंतु हनुमान जैसी भक्ति तो महादेवभाई की थी। वल्लभभाई तो बनवास में सदैव जागृत रह कर राम की सुरक्षा करने वाले भाई लक्ष्मण जैसे थे।

अपने दर्शन के लिये आए लोगों के उपहारों का ढेर देखकर गांधीजी बोल उठे, "आह! यह डुंगर कब बन गया?" कुंवरजीभाई बोले, "बापु, आपकी निंद में बाधा तो नहीं आयी?" बापुने कहा, "नहीं, मुजे तो पता ही न चला। मैं तो खूब सोया।" कहकर वल्लभभाई के प्रति उन्मुख हुए, "आपने कुछ आराम किया?" वल्लभभाई बोले, "बापु! आप के आराम में मेरा आराम आ गया।"

चौराचौरी की घटना : सविनय कानून भंग का आंदोलन मौकूफ

बारडोली की विरल जिन के दो कमरे में गांधीजी तथा विठ्ठलभाई रहते थे। वहां से कुछ दूरी पर रेलवे के एक बिस्मार डिब्बे में कुंवरजी, कल्याणजी, श्वेब कुरेशी, कवि श्री न्हानालाल, बमनजी, इन्दुलाल याज्ञिक रहेते थे। वहां रात को "ही.... ही क्लब" चलता। सारा दिन गांवों में घुमकर चुर चुर हुए नेता अवकाश के क्षणों में वार्ता–विनोद करते थे। श्री वल्लभभाई तथा विठ्ठलभाई बडे विनोदवृत्तिवाले थे।

एक बार विठ्ठलभाई भागते हुए इस क्लब के दरवाजे पर आए और बोले, "अरे कणबे ! आप सब यहां 'ही–ही' कर रहे हैं, और वहां बीमार प्राणी पडा है !' क्लब के सदस्य समजे कि जिन के मैदान में गड्ढे में कोई प्राणी गिरा होगा । अतः कुंवरजीभाई बोले, "वह तो वहां हररोज गिरता है।" विठ्ठलभाईने कहा, "अरे कणबे, वह बूढा तो पल्टी मार गया!' कुंवरजीभाई ने हंसते हुए कहा, "बापु तो रोज पाल्थी लगाते हैं, उसमें क्या है?' विठ्ठलभाईने उंची आवाज में कहा, "अरे पगलों! सात सौ मील दूर से देवा (देवदास गांधी) का तार आया कि कुछ पुलिसों ने लोगो को फुंक दिए । अतः बुढेने आंदोलन बंद रखने का निर्णय कर लिया है!'

यह सुनकर सब स्तब्ध रह गए । फौरन वे गांधीजी के पास दौडे गए। गांधीजी की व्यथा का पार न था। अहिंसा की प्रतिमा की आत्मा भीतर से मथ रही थी। विठ्ठलभाई ने कहा, "इतना बडा देश है। तब कहीं न कहीं ऐसा दंगा तो होगा ही। हम वाइसरोय को अल्टिमेटम दे चुके है। हमारे वचनों पर श्रद्धा रखकर लोगों ने इतनी बडी तैयारियां की हैं, फिर हमारा विश्वास कोई नहीं करेगा । जैलमें पडे हुओं के साथ दगा होगा।" गांधीजी की अंतर्व्यथा देखकर विठ्ठलभाईने अधिक दलीलें न कीं।

गांधीजी के विशाल हृदयी साथीओं में वल्लभभाई तथा राजेन्द्रबाबू मुख्य थे। उन्हें गांधीजी की बात समज में आ सकी । लाला लजपतराय, मोतीलाल नेहरु, जवाहरलाल नेहरु, सुभाषचन्द्र बोस, आदि गांधीजी के इस कदम से नाराज हुए थे, तथा उन्हों ने उस की टीका भी की।

गांधीजी अपने निर्णय में अडिग रहे। 'देश तथा जनता अभी परिपक्व नहीं हुए हैं । यह आंदोलन चालू करने में मेरी हिमालय जैसी भूल थी ।' ऐसा कहकर उन्हों ने सारा दोष अपने सर पर ले लिया । उन्हों ने नेताओं से किसी रचनात्मक कामों में जुट जाने का अनुरोध किया । वल्लभभाई, राजाजी तथा राजेन्द्रप्रसाद उस कार्य में लग गए ।

सविनय कानून भंग की जंग मौकूफ रहने पर बारडोली की जनता नाराज हुई । परंतु गांधीजी तथा वल्लभभाईने अपनी सारी शक्ति रचनात्मक कार्योमें लगा दीं।

1922 की 10 मार्च को साबरमती आश्रम के आश्रमवासी गहरी निंद सो रहे थे। तब अहमदाबाद का पुलिस अफसर मि. हिलीनी अपनी गाडी में शंकरलाल बैन्कर को

लेकर आ धमका। गांधीजी ने लिखे लेखों "यंग इन्डिया" तथा "नवजीवन" में छापने के लिये उन्हें पकड लिया गया था । आश्रमवासीओं ने भी अपने बापु को बिदा दी ।

18 मार्च को शाहीबाग सर्किट हाउस में गांधीजी पर केस चलाया गया। अदालत का कमरा खचाखच भरा था । सरोजिनी नाइडू, राजेन्द्रप्रसाद, पंडित मदनमोहन मालविया, वल्लभभाई आदि मौजूद थे। तीन लेखों के लिये गांधीजी तथा शंकरलाल बैन्कर (मुद्रक के तौर पर) पर राजद्रोह का आक्षेप लगाया गया । गांधीजीने गुन्हा कुबूल लिया, लोकमान्य तिलक की तरह गांधीजी को भी छः साल की जैल की सजा दी गई। गांधीजी के लिये इस फैंसले पर लोहे–सा आत्म–बल रखनेवाले वल्लभभाई की आंखें भी आंसूओं से छलछला उठीं । लम्बे अवकाश पर जाते सरसेनापति की बागडौर उपसेनापति ले लेता है उस प्रकार गांधीजी की अनुपस्थिति में वल्लभभाईने गुजरात की जिम्मेदारी उठा ली।

गुजरात के सूबा

बारडोली सत्याग्रह के समय सन 1928 में वल्लभभाई को "सरदार" का बिरुद मिला था । उससे पहले गांधीजी उन्हें "गुजरात के सूबा" कहते थे। सन 1921 में बारडोली के वराड गांव में एक सभा में उन्हें निमंत्रण दिया गया । उस पत्रिका के शीर्षक में "गुजरात के सूबा वल्लभभाई का वराड में आगमन" ऐसा लिखा गया था। अहमदाबाद नगरपालिका का काम छोडकर वराड की सभा महत्त्व की होने से वे वहां पहुंच गए।

गांधीजी की अनुपस्थिति में सरदार वल्लभभाई सही अर्थोमें 'गुजरात के सूबा' हुए । गांधीजी से खेड़ा सत्याग्रह के समय उन्हें उपसेनापति पद तो मिला ही था। अब उनके हाथो में गुजरात की पतवार सम्हालना आया । गांधीजी की गैरमौजूदगी में उन्हों ने दूहरी तेजी से काम चलाया। गांधीजी के आदर्शों को जरा भी क्षति न पहुंचे इस बात का खयाल रखते हुए गांधीजीने जो नींव डाली थी उसी नींव पर इमारत बनने लगी।

गांधीजी को छः साल की सजा हुई, ठीक उसके दूसरे दिन जनता को सम्बोधते हुए उन्हों ने एक निवेदन प्रकट किया था, "ब्रिटीश सिंह को आजतक हिन्दुस्तानने

कई शिकार दिए हैं। अब ऐसा पवित्र शिकार मिलने का सौभाग्य उसे यह पहली बार मिला है। उसे पचाना कोई सरल बात नहीं है..... वह सिंह भी देर-अबेर इस महापुरुष के तपोबल के सामने बकरी बन जाएगा यह निःसंदेह है.... सारा हिन्दुस्तान भले ही यह बात जल्दी न समज सके, लेकिन गुजरात कि जहां उन्हों ने अपना जीवन प्रत्यक्ष बहाया है, उसे तो इनके कांच जैसे पारदर्शी हृदय के उद्‌गारों को गिरने से पहले उठा लेना चाहिए। तथा उसे किनारे लगाने के लिये अपनी योग्यता सिद्ध कर दिखाना चाहिए।" गांधीजी के जैल निवास से लोकजागृति का ज्वार एकदम धीमा पड गया। उस समय वल्लभभाईने गुजरात की बागडौर सम्हाल ली थी । अभी सरदार सारे हिन्दुस्तान के नेता नहीं बने थे। गांधीजी के चतुर्विध कार्यक्रम वल्लभभाई के नेतृत्व में जोरों से चलने लगे ।

सभी के मनमें यह भय था कि गांधीजी की अनुपस्थिति में उनके साथी अब क्या करेंगे? लेकिन इस निराशा के स्वर का बराबर उत्तर वल्लभभाईने 'नवजीवन' में 'श्रद्धानी कसोटी' लेख में दिया। "... एक इमारत बनानेवाला कडिया जिस प्रकार उसका प्लान बनानेवाले इजनेर जितनी शक्ति अपने में होने का दावा नहीं करता, फिर भी वह उस प्लान के अनुसार इमारत बनाने में मुश्किलें देखता नहीं है, उसी प्रकार गांधीजी के साथी उन्हों ने बनाया स्वराज्यकी इमारत का प्लान सही-सही समज गए होंगे, तब प्लान के अनुसार इमारत का कार्य आगे बढाने में उलझेंगे नहीं... "

गुजरात को छोडकर कुछेक प्रदेशों में असहकार तथा सविनय कानून भंग में श्रद्धा न थी । असहकार की गति मंद होने पर धारासभा में जाकर सरकार की गतिविधियां रुकवाने की बात कुछ नेताएं सोच रहे थे।

गुजरात राजकीय परिषद का छट्ठवां अधिवेशन कस्तूरबा की अध्यक्षता में आणंद में हुआ । उसमें रचनात्मक कार्यों को आगे बढाने के लिये प्रस्ताव हुए । अन्य प्रांतों में धारासभा-प्रवेश की कार्यवाइयां चल रही थीं ।

'स्वदेशी' क्रांति के लिये वल्लभभाईने प्रति परिवार एक युवक की मांग की, जिस को बडा प्रतिभाव मिला।

अस्पृश्यता निवारण का कार्य चल रहा था। काठियावाड की राजकीय परिषद के पंडाल में स्पृश्य-अस्पृश्य अलग-अलग बैठे थे। जिस पर वल्लभभाई का

ध्यान पडा। तब वे खडे हो कर अस्पृश्यों के साथ बैठ गए। फिर दरबार गोपालदास देसाई तथा भक्तिबा भी उनके पीछे जाकर वहां बैठ गए। अस्पृश्यता निवारण ही स्वराज्य की कूंजी है, यह बात उन्हों ने अपने कार्य से दिखा दी ।

इस परिषद में दरबार गोपालदास को अपनी राजकीय प्रतिज्ञा कायम रखने के लिये अभिनंदन दिया गया । वल्लभभाईने इसे युगधर्म बताकर गोपालदास का अनुसरण करने को बताकर लिखा, "चरोतर के पाटीदार अपने प्राणों से अधिक वतन को प्रिय मानते है।" 'वतन के जाने पर स्वयं का क्या जतन?' 'यह इस कौम की कहावत है। टुकडा जमीन के लिये कई पाटीदारों ने अपने प्राण दिए हैं, फांसी पर चढ गए हैं। सरकारी कोर्ट–कचहरियों किं मुख्य खुराक वतन झगडे ही हैं। इस प्रकार वतन के पीछे मिट जानेवाली पाटीदार कौम के शिरोमणि भाई गोपालदासने आज अपने सालाना तीस हजार से अधिक आयवाले गिरास को धर्म की खातिर ठुकरा दिया है...... गोपालदास ओहदा छोडकर गुजरात के गांवों में सूखी रोटी खाकर पैदल घुमकर जनता की सेवा करते हैं। .. हजारों युवकों पर उनके त्याग का असर होगा ।'

नामचीन विद्रोही बाबर देवा के नाम से खेडा जिले का नाम कलंकित हो रहा था। अतः उसे संबोधित कर के वल्लभभाईने कहा, "बाबर देवा को आप में से कोई भी जानता हो, किसी को भी उसके साथ मुलाकात होती हो, तो उसे कह देना कि तुम्हारी बगावत बगावत नहीं है। बंदूक लेकर भागते फिरना तथा निर्दोष प्रजा को लुटने–मारने में कोई बगावत नहीं है। सच्चे बागी को हथियार की आवश्यकता नहीं होती। बगावत तो ढसा के दरबार (गोपालदास) की देखो। बगावत गांधीजी की है। जो आदमी निःशस्त्र को सताता है, लोगों को लुटता है तथा हत्या करता हो, वह तो कौम के लिये कलंक है।"

गया कोंग्रेस के अध्यक्ष देशबंधु चित्तरंजनदास धारासभाओं पर अधिकार जमानेवालों के पक्के समर्थक थे। मोतीलाल नेहरु काउन्सिल प्रवेश नीति के प्रमुख उद्‌भावक थे। श्री दास का प्रवचन प्रभावशाली तथा शक्तिशाली रहा। श्री राजाजीने अपनी व्यंग्यपूर्ण शैली का बराबर प्रदर्शन किया। काउन्सिल प्रवेश के दूसरे विरोधी वल्लभभाई पटेल थे, जब कि उनके भाई विठ्ठलभाई का मत उनसे विपरीत था और तीसरे विरोधी राजेन्द्र प्रसाद थे।

वल्लभभाई ने अपनी गंभीर बानीमें कहा, "यदि देश को स्वतंत्र करना हो तो पहले काउन्सिल प्रवेश की चर्चा की धज्जियां उडानी चाहिए।" सब को विश्वास बैठा कि वल्लभभाई जो बोलेंगे, वह कर के दिखाएंगे। बारडोली के सरदार के लिये यह कतई असंभावित न था।

गया में ही श्री दासने तथा मोतीलाल नेहरु ने कोंग्रेस से पृथक स्वराज्य पक्ष के संगठन की घोषणा की। श्री विठ्ठलभाई पटेल इस पक्ष के समर्थक थे। बाद में इस पक्ष के दो हिस्से हो गए। वल्लभभाई पटेलने गया अधिवेशनमें हिन्दी में ही भाषण दिया था। क्योंकि इस आवाज के पीछे गुजरात का बल था। महासभा बैठकों में तथा आम अधिवेशनोंमों में भी वे हिन्दी में ही बोलते थे।

अब आतंकवाद की शुरुआत होने पर सरकार घबडा गई और वह अपने साम्राज्य की सुरक्षा का नया मार्ग खोजने लगी। उसकी सुरक्षा के लिये बिलरुपी शस्त्र तैयार किया, जिसका नाम 'पब्लिक सेफ्टी बिल'। इस बिल का उद्देश्य रोलेट एक्ट जैसा ही था। असेम्बली में देश के नेताओं ने इस बिल का प्रखर विरोध किया। लेकिन सरकार तो उसे पसार करने पर आमादा थी। तब विठ्ठलभाई पटेल असेम्बली के अध्यक्ष थे। आखिर तो सरदार तथा वे एक ही मिट्टी के बने थे। श्री विठ्ठलभाई ने किसी की भी परवाह किये बिना अपने निर्णयात्मक मत से पब्लिक सेफ्टी बिल को नामंजूर कर दिया।

अध्यक्ष श्री पटेल के इस कदम से सरकारी अफसर चौंक उठे। दिल्ली की काउन्सिल में हुआ बम्बधमाका अंग्रेज सरकार के पतन का प्रलयकाल था। स्वराज्य पक्षमें रहकर देश सेवा का कार्य करने का यश श्री विठ्ठलभाई को मिलता है। बाद में वे भी गांधीजी के सहयोगी बने थे।

नागपुर झण्डा सत्याग्रह से जनता में नया जौश आ गया। देश के सम्माननीय नेता सरदार झण्डा सत्याग्रह के अग्रणी बने तथा विजयी हुए।

बारडोली की जंग – 1928 – 'सरदार'

1921-22 से ना–कर जंग के कारण बारडोली विश्वप्रसिध्ध हो गया। वहां अन्य नेताएं रचनात्मक कार्य लेकर बैठे हुए थे। वे सत्याग्रह के शुभारंभी की प्रतीक्षा में

थे । गुजरात के बाढ संकट से निवृत्त होकर सरदार आदि बारडोली आ पहुंचे। 1928 में लगान में अन्यायी बढौती के सामने सत्याग्रह किया गया।

सरदार का नेतृत्व विचक्षण राजपुरुष–सा था । उनकी चाण्क्य नीति की बडी प्रशंसा होने लगी थी। उन्हों ने इस सत्याग्रह के समय कहा था,' मैं गुजरात के कृषिकारों की नसों में तथा हड्डियों में स्वतंत्रता की सांस भरना चाहता हूं।"

4 फरवरी, 1928 के दिन अंतिम निर्णय के लिये खेडूत एकत्रित हुए। उसमें कई नेता उपस्थित थे। काउन्सिल के सदस्यों ने खेडूतों से कहा, 'हम लोग तो बाजी हार गए है। अब तो वल्लभभाई जैसे नेता ही बाजी जीत सकते हैं।"

लोकमत को ध्यान में लिये बिना ही सरकार ने लगान बढाना निश्चित किया। उसके सामने विरोध प्रकट करने हेतु तालूके के खेडूतों की सभा 1927 के सितम्बर में बारडोली में रावसाहब दादूभाई देसाई की अध्यक्षता में आयोजित हुई। उसमें खेडूतों लगान में वृद्धि की राशि नहीं भरेंगे ऐसा प्रस्ताव हुआ। दूसरी ओर सरकार ने बसूली का आदेश जारी किया। नेताएं वल्लभभाई से मिले। उन्हों ने अग्रणियों से कहा, "तालूके के सभी कृषकों की इच्छा हमें जाननी चाहिए। प्रजामत जानकर ही मेरे पास आएं।" ऐसी सलाह वल्लभभाई ने कृषिनेताओं को दी। कल्याणजी मेहता, कुंवरजीभाई तथा तालूकामंत्री वल्लभभाई से यह आश्वासन लेकर बारडोली आए। वल्लभभाई को खेडूतों का सही रुख मिलने पर उन्हों ने गांधीजी के सामने सारी बात प्रस्तुत की और सत्याग्रह की अगुवानी लेने वल्लभभाई बारडोली पहुंचे।

सत्याग्रह की जंग के लिये आयोजन किया गया। संचालकों की छावनियां खडी की गईं। तहसील के हिस्से कर दिये गए। हिस्सों के अधिपति नियुक्त किये गए। स्वराज्य आश्रम की स्थापना बोरडोली में की गयी। मुस्लिमों को मार्गदर्शन देने अब्बास तैयबजी तथा ईमाम साहब, बाबा वजीर भी आ पहुंचे। सत्याग्रह पत्रिकाओं का प्रकाशन चालू हुआ। सारे देश का ध्यान इस जंग की ओर खिंचा। समयोचित गीत लिखे गए । और गाए जाने लगे। ग्रामीण जनता का जोश बढा।

सरकारने लगान भर देने के आदेश जारी किए। जिस के न भरने पर जप्तियां चालू कीं । लेकिन स्वयंसेवकों ने गांव–गांव घुमकर प्रतिज्ञापत्रों पर हस्ताक्षर करवा कर साहस टिकाए रखना चालू रखा इस सत्याग्रह की जंग में पुरुषों से अधिक स्त्रियों के साहस ने रंग दिखाया। स्त्रिया जैल में जाने के लिये भी तैयार थीं। पुरुषों

के जैल में जाने पर कृषिके कामों को सम्हाल लेने के लिये भी वे तैयार थीं। वल्लभभाई के साथीओं में भक्तिबा, मीठुबहन तथा मणिबहन बैसी बहनों ने अजीब शौर्य दिखाया ।

बारडोली के सभी खेडूतों पर पांच–पांच महीनों तक सरकारी जमीनदारोंने त्रासदायी हल्ले किए। मिलकत जप्त कर जाते, ढोर–ढांखर की कत्ल कर जाते, पुलिस तथा पठानों शिकारी कुत्तों की तरह गांवगांव में जुल्म ढाते, फिर भी खेडूतों का धैर्य तथा तपश्चर्या अजीब थे।

स्त्रियां तथा आदमी खिडकी–दरवाजे बंद कर के, ताले लगाकर, हवा–प्रकाश के अभाव में भी अपने बाल–बच्चों तथा ढोर–ढांखर सहित दुर्गंध में पडे रहे; पठानों का जुल्म, पुलिस के छापे, जिसे चाहे पकडकर कडी मेहनत कराते तथा हथकडियों समेत जैल में भेज देते। फिर भी वे जुल्म सहते रहे।

रानीपरज कौमने बडी निर्भीकता दिखाई। वेडछी आश्रम के जीवणकाकाने कहा, 'पहले हस्ताक्षर करें और साथ में लिखें कि सरकार मुजे तोप के सामने बांध कर मार डालें या पेड से बांधकर नीचे अलाव जलाकर मुजे जला डालें, फिर भी मैं प्रतिज्ञा नहीं तोडुंगा और सरकार को लगान की एक पाई भी नहीं दूंगा ।' 16 धारासभ्यो, 84 पटेलों ने तथा 19 तलाटीओं ने फौरन इस्तफा दे दिए। नवाजबाई, दोराबजी, वीरचंद सेनाजी, इस्माइल गबती आदिने बडी वीरता दिखाई । इस्माइल गबली की बातें तो सरदार भी कहा करते । उसकी लाखों रुपयों की जमीन जप्त हुई, लेकिन डिग नहीं । पाटीदार खेडूत भाईओं इस जंग में अग्रसर थे।

इस जंग में खेडूत की संपूर्ण विजय हुई। वास्तव में यह लोक जंग थी। वल्लभभाई देश नेता और 'सरदार' बने। इस जंग ने अहिंसक जंग का मार्गदर्शन किया। युवाशक्ति तथा स्त्रीशक्ति का परिचय दिया।

वल्लभभाई पटेल अपनी लोकबोली में बोलते 'ढोरों की तरह क्यों मरते हो? मरना हो तो इन्सान की तरह मरो । बा–इज्जत मरें, चाहे सरकार तोप चलाएं या बंदूक। हम खेडूतों को अपनी छाती पर गोलियां झेलनी हैं। यदि खेडूत इतना साहस बताएगा तो हिन्दुस्तान उसकी पूजा करेगा। बारडोली के खेडूत स्वराज्य की

नींव बनें। अट्ठासी हजार के मरने से तैंतीस करोड का स्वराज्य मिलता हो तो ऐसी धन्य मोत को कौन नहीं बधाएगा!'

बारडोली तहसील में सरदार का अनुशासन सख्त था। सारे काम घडी की सुइयों पर चलते थे। डाक भी नियमित जातीं, निरीक्षण के लिये गाडियां तैयार रहतीं । कहा जाता है की उस समय बारडोली तालूके में सरदार की आज्ञा के बिना पेड का पत्ता भी नहीं हिलता था। उन्हों ने बारडोली के खेडूतों से कहा, "यदि इस दुनिया में कोई इन्सान सर उठाकर चलने के योग्य हो तो वह खेडूत है। वह स्वयं पैदा करता है और शोष लोग उसका पकाया खाते हैं। फिर भी आज उसकी कैसी बूरी अवस्था हो गयी है। सारी दुनिया आप और मजदूरों के बल पर चलती है। फिर भी दुनिया की ज्यादा से ज्यादा तकलीफें आप पर हैं। और आप लोगों की कष्टप्रद विवशता देखकर मुजे अत्यंत दुःख हो रहा है। जिस समय मैं यह देखुंगा कि आप आदमियों की तरह सर उठाकर चलते हैं, तभी मैं स्वयं को धन्य समजुंगा, और इस परिश्रम को सार्थक मानुंगा ।"

खेडूतों के लगान बंदी करने पर सरकारी दमनदौर चालू हो गया। बलूची सिपाही घरो में घुसकर मारपीट करते तथा स्त्रीओं को जलील करते। दूकानें लूटते तथा तोडकर माल जप्त करते। निर्दोष स्त्री–पुरुषोंने इस जंग में काफी दुख झेला । चूंकि उन्हें गांधीजी की तपस्या में तथा सरदार के नेतृत्व में अटल श्रद्धा थी, अतः सरकार की हार हुई तथा समाधान हुआ।

सरदार के नेतृत्व के लिये जॉन ग्रंथर नाम का इतिहासविद् लिखता है, "पहले बडे कुशल नेता थे। जब गांधीजी कोई रास्ता चुनते तो उस पर चलने की जिम्मेदारी पटेल के सर पर रहती।" वे हिन्दु–मुस्लिम एकता के समर्थक थे। वे कहते, "हम कागज की परतों जैसी एकता नहीं चाहते, जो फौरन उड जाय ।' खिलाफत की जंग में भी वे शामिल थे । श्री कनैयालाल मुनशीने सही कहा है, "गांधीजी के सामने उनका आत्म समर्पण प्रायः आध्यात्मिक था। उन्हों ने अपनी प्रबल शक्ति से आजादी दिलवायी।"

बारडोली जंग में दाखिल होने के पहले भी उन्हों ने नेताओं से साफ–साफ कहा था, "मेरे साथ खेलना नहीं होता । मैं सामान्य कार्यों में हाथ नहीं रखता। जिसे जोखिमों से खोलना हो उसी के साथ मैं खडा रहुंगा।"

वल्लभभाई की बानी के लिये श्री महादेवभाई लिखते हैं, " .. और वल्लभभाई की बानी! मैंने तो चार साल पहले बोरसद में कसौटी पर खडे सरदार के साथ चौबीस घंटे बिताए थे। लेकिन उनकी बानी में उस समय जो तेज देखा, आंखों से कई बार शोले बरसते देखे, वैसा कभी नहीं देखा था। लोगों की जमीनें खालसा हो पर उनकी अपनी देह के टुकडे होने जैसी पीडा होती थी। उनके शब्दों से वेदना टपकती थी। उन के लोकबोली में होते भाषणों में धरती की महक आती थी। उनके भाषणों में अंग्रेजी का पुर नहीं होता परतु स्वतंत्रता का जुस्सा रहता था। उनका भाषाप्रभुत्व उन सभाओं में प्रकट होता मैंने पहेली बार देखा।"

सरकारने अपना दमनदौर चारों ओर से चालू कर दिया था। जिस सरदार को हिंद के वाइसरोय तथा बम्बई के गवर्नर ने भी गुजरात के बाढ संकट निवारण के कामों के लिये धन्यराद दिए थे, टाइम्स ओफ इन्डिया तथा एंग्लो इन्डियन वर्तमान पत्रों ने बडी प्रशंसा की थी, वे ही विमुख हो गए। वल्लभभाई को बाहर के तथा खेडूतों को बहकाने वाले कहा। वल्लभभाईने गांधीजी से भी आगे जाकर खेडूतो को बहकाए हैं, अतः गांधीजी जंग से दूर रहे हैं, वैसा प्रचार किया। वास्तविकता यह थी कि बापू ने सरदार को यह जंग चलाने की छुट दी थी। साथ में महादेवबाई तथा प्यारेलाल को भेजे थे।

वल्लभभाई को बाहर के कहा गया था इससे तालूका ओर भी लडाकू बना। युद्ध गीत शुरु हुए –'लीधी प्रतिज्ञा पाळीशुं रे।' बारडोली के खेडूतों को सरदार वीरता की शिक्षा दे रहे थे। रविशंकर महाराज के शब्दों में–'बारडोली तालूका की भूमि एक पाठयपुस्तक थी। रात और दिन उसके पन्ने थे। उन पन्नों को पढकर नित्य नये अनुभव के पाठ बारडोली के खेडूत पढ रहे थे।' सरदार का एक–एक वाक्य लोग अपने अंतस् में मोती की तरह पिरो लेते थे।

खेडूतो खालसा की नोटिसों को घोलकर पी गए, और कहने लगे, "भले ही सरकार हमारी जमीने विलायत ले जाय।' जप्ती का सख्त कानून निकले। उसे भी खेडूतों ने दाद न दी।

कुछ भीरु लोग गुप्तता से लगान भरने तैयार हुए। अतः सरदार ने चेतावनी देकर कहा, " ... मैं आप लोगों को सावधान करता हूं कि आप बडा भयंकर कार्य कर रहे हैं और उसका परिणाम आप भुगतेंगे। जिस नाव में पुरा तालूका बैठा है,

उसी नाव में आप भी बैठे हैं। याद रहे, तालूका डुबेगा तो आप भी बचेंगे नहीं"।

खेडूतों की जमीनें खालसा होने लगीं। तो सरदारने स्थूल चीजों को नाशवंत बताते हुए कहा, "हमें कितनी जमीन चाहिए? मुस्लिमों को पांच हाथ और हिंदुओं को तो कुछ देर के लिये तीन–चार हाथ । उनके जल जाने पर वही जगह दूसरे के काम आएगी। बाढ में घर बह गए, आदमी बह गए, फिर जमीन क्या है?' दूसरी ओर सरकार को ललकारते हुए कहा, 'जमीन खालसा करने की किसी में ताकत नहीं है। सरकार जमीन को सर पर रखकर ले नहीं जाएगी, और पुलिस जमीन जोतेंगे नहीं। आप की जमीनें आप के दरवाजों को पिटती वापस आएगी, .. जमीन वापस लिए बिना यह जंग बंद नहीं होगी ।' गुजरात आजादी की भूमि बन गया तो सरदार ने ललकार किया, "गुजरात का नाम भी मत लेना ।'

कुछ मित्रों ने सरदार की टीका करना चाहा कि 'उनके भाषण तीखे–उग्र, धधकते लावा जैसे होते हैं, उसमें अहिंसा नहीं है ।' जवाब में सरदार ने कहा, "आध्यात्मिक अहिंसा को मैं इस जन्ममें प्राप्त होउंगा या नहीं, यह मुजे पता नहीं है। मुजे तो व्यावहारिक अहिंसा आती है। और मेरे जैसे मोटी बुद्धिवाले खेडूतों के सामने वैसी ही मोटी अहिंसा रखता हूं। सूक्ष्म अहिंसा उनके भाग्य में होगी तो आगे चल कर समजेंगे।"

डॉ. अनसारी तथा मौलाना शौकतअली बारडोली की मुलाकात कर गए । बारडोली का संगठन, सत्याग्रहीओं की दृढता तथा उनका साहस देखकर वे दंग रह गए। श्री भरुचा तथा नरिमान खेडूतो पर होते सरकार के जुल्मों से अकुलाए।

बारडोली दिन के उत्सव पर देशभर में से सहाय आने लगी। पंजाब केसरी लाला लजपतरायने प्रेम व सहानुभूतिपूर्ण पत्र तथा भेंट की रकम भेजी।

इस जंग का रंग ठीक जमा था। तब 'टाइम्स ओफ इन्डिया' का संवाददाता यहां मुलाकात करने आया । वह प्रसन्न होने के बजाय चकित रह गया। उसके मनमें था कि यहां कार्यकर्ताएं दूसरों के पैसों से मौज उडाते होंगे। लेकिन उनकी कठिन तपश्चर्या, तथा सरदार के प्रति ग्रामजनों का स्नेह देखकर तथा प्रतिज्ञावश घरों में कैद रहते कृषि स्त्री–पुरुषों को देखकर वह दंग रह गया। उसने जंग के बारे में सिमला की सरकार तथा ब्रिटीश पार्लियामेन्ट को हिला देनेवाला लेख लिखा। उस लेख में शीर्षक अपने ढंग से लिखे, "बारडोलीमां बोल्शेविझम", "बारडोलीनो

बळवो"। "सरदार वल्लभभाई बारडोलीमां लेनिननो पाठ भजवी रह्या छे" आदि लिखकर सारी बातें जाहिर कर दीं।

समाधान के लिये सरकारने भागदौड की लेकिन नेताओं की शर्तों के अनुसार समाधान हो नहीं पाता था। गांधीजी बारडोली तो गए, परंतु सरदार की उपस्थिति में एक सैनिक की भांति शिस्तपालन कर रहे थे। दूसरे नेताओं ने उन्हें निमंत्रित किया तब उन्हों ने कहा, " जब तक वल्लभभाई नहीं कहेंगे, मैं नहीं आ सकता।" सरदार ने बापू को अनुमति दे दी। रायम गांव में सभा में गांधीजी ने कहा, "सरदार का आदेश है कि उनके अलावा कोई बोलेगा नहीं। अतः मैं कुछ नहीं कहुंगा। सरदार होते और अनुमति देते तो मैं बोलता। आज केवल आप की वीरता तथा संगठन के लिये धन्यवाद देता हूं।.... हमने जिसे सरदार बनाया इनके आदेश का अक्षरशः जतन करना हमारा धर्म है। मैं सरदार का बडा भाई हूं यह सही है, लेकिन प्रकट रूप में हम जिसके अधीन कार्य करते हों, वह चाहे हमारा पुत्र हो या छोटाभाई, उसके आदेशों को मान्य रखना ही चाहिए। यह कोइ नयी बात नहीं है। यह हमारा सनातन धर्म है ..'

गांधीजी बारडोली में थाना डालकर बैठे तो सरदार को सहारा मिला। सरदार वल्लभभाई को रावसाहब दादूभाई की ओर से पूना आने का निमंत्रण मिला। सरदार वल्लभभाई पूना गए। साथ में महादेवभाई तथा स्वामी आनंद भी गए। पूना में सर चुनीलाल महेता के यहां समाधान की बातें हुई । उसमें श्री कामा तथा मुनशीजी भी शामिल हुए। सर चुनीलाल महेता ने सरदार को दिए वचनों का अक्षरशः पालन किया। सारी शर्तें मंजूर होने पर बारडोली के सत्याग्रहीओं की विजय हुई । स्वराज्य कूच में सरदार वल्लभभाई की अगुवानी में खेली गई तीन जंग में 'बारडोली सत्याग्रह' एक सीमाचिह्न बन गया। नागपुर व बोरसद के सत्याग्रहों से अधिक इस जंग में सारे भारतवर्षने सरदार को अपने नेता के रुप में स्वीकार किया ।

सत्याग्रह की विजय की खबरें तीव्र गति से देशभर में फैल गयीं। सरदार वल्लभभाई पर अभिनंदन के तारों की वर्षा हुई। वर्तमान पत्रों ने उन्हें धन्यवाद देते लेख छापे। पंडित मोतीलाल नेहरु, लालाजी व मालवियाजी, श्रीनिवास शास्त्री, सुभाषबाबू तथा सत्यमूर्ति, राजाजी तथा सरोजिनी नाइडू आदि ने हार्दिक अभिनंदन भेजे ।

ये सारे अभिनंदन तार तथा भेंट सौगादें तथा धन्यवाद के संदेश सरदार ने बापू के चरनों में रख दिए।

सर लल्लुभाई शामळदास जैसे तटस्थ सत्पुरुषने 'इन्डियन नेशनल हेरल्ड' में एक विशेष लेख में लिखा, "तालूका के कृषिकारों ने हिंसा का एक भी कृत्य किए बिना इतने कष्ट झेलें, इससे सारे हिन्दुस्तान में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी उनके लिये सम्मान व आश्चर्य उत्पन्न हुए हैं। उत्तेजित हुए बिना तथा प्रतिघात किए बिना लोग कष्ट सह लेंगे उसके लिये मुजे विश्वास नहीं था। इस जंग के कुछ नेताओं के सामने मैं ने अपना अविश्वास प्रकट किया तो विशेष कर के श्री महादेवभाई देसाई ने मुजे खातरी दी थी कि जब तक यह जंग वल्लभभाई के काबू में है, तब तक खेडूतों की ओर से हिंसा होने का जरा भी भय नहीं है । वल्लभभाई के अतिरिक्त कोई इस जंग में सफल नहीं होता। उन्हों ने लोगों का विश्वास जितना संपादित किया है इतना शायद ही कोई कर पाता। खेडूतों ने भी इतना ही धैर्य तथा सहनशीलता दर्शायी थी । अपने नेता के वचनों को उन्हों ने उठा लिए हैं।"

सरदार जब बारडोली से सूरत जाने निकले तो युद्ध गीतों से सबको मोहित कर देने वाले युद्धकवि फूलचन्द शाहने विजयगीत बनाया –

'हाक वागी वल्लभभाईनी विश्वमां रे,
तोय बळियाने कीधा मात – हाक ।
प्राण फूंक्या खेडूतना हाडमां रे,
कायरताने मारी लात – हाक।
हाथ हेठा पडया सरकार ना रे,
वधी सत्याग्रहनी साख – हाक।
कर्युं पाणी पोताना लोहीनुं रे,
निज भांडुनी सेवा काज – हाक।
जीत डंको वगाड्यो विश्वमां रे,
बारडोलीनो जयजयकार – हाक।"

सूरत नगर का आनंद बारडोली से भी बढ गया। तापी के तट पर पचास हजार आदमी की सभा हुई । वैसा ही सम्मान अहमदाबाद में किया। स्टेशन पर उतरते

ही सरलाबहन साराभाई ने बलाएं लीं। मित्रों ने स्वर्णमय हार पहनाएं। यह सब देखकर वह रुद्-भद्र पुरुष भी भीग गया। अहमदाबाद ने दिए सम्मान पत्र के उत्तर में उन्हों ने इसका सारा श्रेय गांधीजी को दिया। उसमें केवल निखालसता तथा गांधीजी के शिष्य होने का ही रटन था। उन्हों ने कहा, .. "इस सम्मानपत्र की प्रशंसा बांटी जाय तो सारी प्रशंसा दूसरों के हिस्सेमें जाती है, मेरे हिस्सेमें यह कोरा कागज ही रहता है।"

सरदार साबरमती आश्रममें गए तो आश्रमवासीओं ने उनका सम्मान किया। हाथों से कांते वस्त्रों की जोडी भेंट दी गई । उसमें एक धागा बापूके कांते हूए सूतर का डाला गया। इन कपडों का स्वीकार करते हुए सरदार की आंखे छलछला गयीं।

नागपुर एवं बोरसद सत्याग्रह की विजय पर गांधीजी उपस्थित न थे। बारडोली की विजय के उत्सव में गांधीजी उपस्थित थे। अतः यह विजय आत्मनिरीक्षण-सा बन गया। बापुने इस अवसर पर कहा, " .. जब तक ऐसी सरदारी होगी, तथा अनुशासित स्वयंसेवक होंगे, वहां ऐसी विजय पाना मैं कठिन नहीं मानता।"

इस प्रकार सत्याग्रह के फलस्वरुप खेडूतों को बापु के शब्दों में, 'जो मिला, वह सोलह आनी मिला।'

किसान तारनहार – अखिल भारतीय नेता

बारडोली की जीत ने सरदार को अखिल भारत के नेता बना दिया। पंडित मोतीलाल की अध्यक्षता में कलकत्ता में मिली कोंग्रेस ने उन्हें अभिनंदन देने का प्रस्ताव पसार किया। इतना ही नहीं, बल्कि दर्शकों ने इस सत्याग्रही को देखने का आग्रह किया तो वे मंच पर आए और आभार व्यकत करते कहा, "बारडोली के किसानों को आपने धन्यवाद दिए, इस लिये मैं आपका बडा आभारी हूं। यदि आप उनका सही सम्मान करते हों तो मैं उमिद रखता हूं कि आप बारडोली का अनुसरण करेंगे।"

तत्पश्चात् सरदार को भारत के कोने कोने से किसान जंग की प्रेरणा तथा मार्गदर्शन देने के लिये निमंत्रण मिलने लगा।

पूर्ण स्वराज्य के लिये गांधीजी ने चार शर्तें रखी थीं। जिन में शराबनिषेध मुख्य थी। रिसालदार प्रदेश में शराब निषेध का कार्य करने के लिये 'मद्यपान निषेध मण्डल" की स्थापना की गई । जिस के अध्यक्ष थे सरदार। उन्हों ने रानीपरज जैसी पिछडी और अज्ञान जनता को इस व्यसन से मुक्त करने भगीरथ प्रयत्न किए । सरदार ने इस गरीब प्रजा में हिंमत व प्राण फूंके। अड्डोंवाले पारसी इस प्रजा पर जुल्म ढाते थे। लेकिन सरदार ने रानीपरज के लोगों को स्पष्ट सलाह दी, "शराबवाले तुम्हें पिटे तो तुम उनका सामना करना। अपने स्वमान की रक्षा करना।" उनाई गांव में एक बडी रानी परज परिषद भी आयोजित की गई थी।

बम्बई इलाके में सरकार बारडोली की तरह लगान बढाने की सोच रही थी। 1929 में महाराष्ट्र राजकीय परिषद का अधिवेशन मिलने वाला था, उस में सरदार को अध्यक्ष बनाना था। उन दिनों महाराष्ट्र के नेता तथा उनकी विद्धत्ता की चर्चा थी। अतः सरदार ने कहा, "उन पण्डितों के साथ हमारा काम नहीं ।' बापू ने कहा "आप को जाना चाहिए।" यह परिषद बांदरा में आयोजित हुई । इस परिषद में विजय की कूंजी बताते हुए सरदार ने कहा, "ऐसी जंग में आर्थिक हानि की बात ही सोची नहीं जाती। हमारे गरीब और गुलामों बैसे खेडूतों को मर्द बनाना हो तो उनमें स्वेच्छा से बलि होने की तथा कष्ट सहने की सामर्थ्य रखनी ही चाहिए।" उन्हों ने इस परिषद में सीधी-सादी लोक हृदय में उतर जाने वाली बातें की ..."जैसा महाराष्ट्र के बारे में सोचा था उससे विपरीत पाता हूं। घर में खडा हूं वैसा लगता है। महाराष्ट्र का त्याग, महाराष्ट्र की तपश्चर्या, महाराष्ट्र की संस्कृति के साथ गुजरात की व्यावहारिक बुद्धि को जोडनी चाहिए। जब शिवाजी की आवश्यकता थी तो भगवानने शिवाजी को भेजा। लोकमान्य की आवश्यकता थी तो लोकमान्य मिले। आज इसी बनियों के राज्य में लडने के लिये बनिये की आवश्यकता है। इश्वरने गुजरात में गांधीजी को भेजकर वह कमी पुरी कर दी है। ... हम यदि एक दूसरे के पैर खिचेंगे तो गिरेंगे ही। गांधीजी की सीख को आप साधु का उपदेश मानकर ठूकरा देते हो। मैं साधु नहि हूं। मैं तो व्यवहार समजनेवाला हूं। मैं तो असेम्बली के अध्यक्षश्री से भी कहता हूं, क्यों वहां व्यर्थ पानी मथते हो? यहां आकर गांवो में बैठकर काम कीजिए। हम सब सरकार के पुर्जे ढीले कर देंगे।"

हिन्दु–मुस्लिम एकता के बारे में साफ मत देते हुए कहा, "गांधीजीने हिन्दु–मुस्लिम एकता की बातें कहकर लोगों को फसाया, ऐसा कई लोग कहते हैं। वे अपनी कायरता को ढांकने के लिये गांधीजी का नाम लेते हैं। गांधीजी ने किसी को कायर बनने की या भागने की सलाह नहीं दी। उन्हों ने तो सीना तानकर मर मिटने की या हथियार से दुश्मनों का मुकाबिला करने की बात की है। यदि तुम्हारे में ताकत हो तो लडकर साबित कर दो। हां, पीठ पर वार करने में कोई बहादूरी नहीं है ।"

महाराष्ट्र परिषद के पश्चात् सरदार को तामिलनाडू राजकीय परिषद की अध्यक्षता के लिये राजाजी की ओर से निमंत्रण मिला। राजाजीने बापू को लिखा कि 'हमारा प्रांत सरदार की राह देख रहा है।' अतः गांधीजी ने सरदार को अनुरोध करके भेजा।

राजाजीने अपने आश्रम के रचनात्मक कार्य सरदार को दिखाए। तामिलनाडू की परिषद थेदाख्य में आयोजित थी। वहां जाते हुए मार्ग में सरदार को कई सम्मानपत्र दिए गए। उनमें सरदार को 'गांधीजी के पट्टशिष्य' तथा 'बारडोली के विजयी सरदार' आदि कहा गया। इस परिषद में आम सभा में आयंगर का प्रस्ताव ठुकरा दिया गया और राजाजी का कार्य सरल कर दिया।

मद्रास की कालिज में राजाजीने सरदार के प्रवचन आयोजित किए। वहां वे अंग्रेजी में बोले। इस यात्रा में महादेवभाई सरदार के साथ थे । उन्हों ने इन व्याख्यानों के बारे में लिखा, ...'बारडोली के खेडूतों ने अपनी लोकबोली गुजराती भाषा में जो चमत्कार देखा था वही चमत्कार मद्रास की अंग्रेजीप्रिय जनता ने देखा। इसका रहस्य अन्याय के खिलाफ लडने की उनकी अजीब शक्ति में तथा पल–पल भडक उठती उनकी देशभक्ति में था। दिल के भीतर से निकलती उनकी बानी सुननेवालों के दिल में सीधी उतर जाती थी। उनकी टूटी–फूटी तथा व्याकरण की शुद्धिकी परवाह किए बिना ज्वालामुखी के लावा जैसी धधकती बानी श्रोताओं को जला देती थी।"

दक्षिण यात्रा के दौरान गुजराती लोग सरदार को अपने मण्डलों में ले गए। वहां भी उन्हों ने प्रांत के हित में काम करने की सलाह दी। मद्रास, त्रिचिसेलम, मदुरा आदि स्थानों पर वे गुजरातीओं से मिले।

इस यात्रा से लौटते सरदार दो दिन तक कर्णाटक में रुके. वहां के नेता गंगाधर देशपांडे गांधीजी के भक्त थे। उन्हों ने कर्णाटक में खेडूत संघो की स्थापना की थी। वे सरदार का सहयोग तथा सलाह चाहते थे। धारवाड से बेलगांव तक की दो दिन की यात्रा में दसेक सभाएं हुईं। सरदार ने लोगों को निर्भीक तथा निर्व्यसनी बनने की सलाह दी।

गांव में मिल खेडूतों की सभा में हुए सरदार के भाषणों को सुनकर देशपांडेजीने कहा, "उनको सूनता हूं तो मुजे तिलक महाराज याद आते हैं. वही तेज, वही शौर्य, सरकार के प्रति वैसा ही रोष.' देशपांडेजी तिलक महाराज के साथी थे। अतः उन्हें यह साम्य शीध्र ही दिखाई दिया । स्वयं राजाजीने भी एकबार सरदार के लिये ऐसा ही कहा था। महादेवभाई तो अपनी 'वीर वल्लभभाई" पुस्तक में सरदार की तुलना तिलक के साथ करते हुए लिखते हैं, "वल्लभभाई के साथ

लम्बे अरसे तक रहने के पश्चात् उनकी बोलचाल, उनकी हंसी, उनका तेज, उनका राग व रोष देखने पर तिलक महाराज का स्मरण विशेष होता है।" उल्टा व्यकितत्व दिखाने की विशेषता भी तिलक महाराज तथा वल्लभभाई में समान है। उपर से दोनों जितने घमण्डी लगते हैं इतने ही भीतर से निरभिमान, उपर से जितने रुक्ष और परुष लगते हैं इतने ही भीतर से सौम्य व मृदु; उपर से जितने विचित्र तथा अभद्र लगते हैं, भीतर से इतने ही सरल और ऋजु; उपर से जितने गहरे लगते हैं, भीतर से दोनों सरल।"

महाराष्ट्र, तामिलनाडु, कर्णाटक और फिर बिहार। चम्पावरण सत्याग्रह के समय गांधीजी और उनके साथी वहां जाकर बसे। सरदार के पीछे बिहारी लोग बडे मोहित थे। उन्हें देखने व सुनने के लिये गांवगांव से सैंकडो स्त्रीपुरुष उमडे। सरदार जब बिहार गए तब वहां के सर्वमान्य नेता राजेन्द बाबू बीमार थे। अतः उनकी यात्रा का प्रबंध अनुग्रहनारायणसिंहने किया पंद्रह दिन का कार्यक्रम आयोजित हुआ । चंपावरण, सीतामढी तथा गया में जिला परिषद आयोजित हुई । मोंधीर में प्रांतिक परिषद हुई। बिहार के कृषकों को सरदार को पूर्ण लाभ प्राप्त हो ऐसा प्रबंध रखा गया था। बिहार में भी कूर्मीक्षत्रिय थे। सरदार भी कूर्मीक्षत्रिय थे। अतः रंग जम गया । सरदार देढ घंटे तक बोलते थे। उनके व्याख्यान ग्राम्य हिंदी में होते थे। अतः बिहार के खेडूतों को वह बानी प्रिय लगी। सरदार ने यहां की कुप्रथाओं की भी टीकाएं की। परदे की चाल से गुलामी कायम हुई है, वैसा बताते हुए कहा, "गांधीजी आप लोगों को आशिष देते हैं। मैं तो आप को गालियां देने आया हूं। आपको शर्म नहीं आती कि अपनी स्त्रीओं को परदे में रखकर आप स्वयं अर्धांगवात से ग्रसित है? ये स्त्रियां कौन हैं? आपकी मांएं, बहने, पत्नी। उन्हें परदे में रखकर आप मानते हैं कि आप उन के शील की रक्षा कर पाएंगे? इन पर इतना अविश्वास क्यों? अथवा आपकी गुलामी वे बाहर आकर देख जाएं इसका आप को डर है? आप लोगों ने उन्हें पशुओं की तरह रखा है। इसी कारण उनकी संतान हो कर आप गुलामों जैसे रह रहे है । बारडोली में मैं ने लोगों से कहा था कि अपनी औरतों को मिलकर उनसे बातों के लिये मुजे छुट नहीं देंगे, तो मुजे यह सत्याग्रह नहीं कराना है। औरतें समज गयीं। वे सभाओं में आने लगीं. और कुछ दिनों बाद तो सभाओं में पुरुष जीतनी ही स्त्रियां आती थीं । जो मैं कहता हूं वह घर जाकर अपनी महिलाओं से कहें। उन्हें बताएं कि गुजरात से एक खेडूत

आया था औप बोलता था कि यदि तुम लोग बाहर नहीं निकलीं तो हमारे लिये सुख कभी नहीं आएगा। यदि मेरा बस चले तो मैं तमाम बहनों से मिलकर कहता कि ऐसे भीरु तथा कायर लोगों की औरतें बनने से बेहतर उन्हें त्याग दो।"

बिहार के युवक बिना समजे क्रांति के नारे लगाते थे। उन्हें भी क्रांति का मतलब समजाया। उन्हें "चंपावरण सत्याग्रह की जय" यह घोष करने के लिये कहा। 'यह जयघोष खेडूतों को हिलाएगा, पुराने बहम और रीतरस्मों से आप लिपट रहे हैं। परदों को तोडने का आपमें साहस नहीं है ।"

इस प्रकार सारे भारत के खेडूतों को शौर्य के पाठ पढाऐ और देखते देखते वे भारतीय नेतापद पर स्थापित हो चुके। लोग उनके शब्द उठा लेने के लिये कटिबद्ध हुए।

दांडीयात्रा

गुजरात में फिर युद्ध का ध्वनि सुनाई देता है। यह भी धर्मयुद्ध था। इस बार सरदार ने बताया कि "गुजराती दूसरी बार जंग खेलने जा रहे हैं। हिंद की इज्जत के लिये, गुजरात को अपना इतिहास पढना मिले इस लिये, तथा पूर्वजों ने अपना योगदान इस जंग में दिया था यह जान कर भविष्यकी पिढी सर उठाकर फिर सके इस लिये।"

बिहार यात्रा से लौटकर सरदार आए। लाहौर कोंग्रेस अधिवेशन का समय आ पहुंचा । प्रांतों के मतानुसार इस अधिवेशन की अध्यक्षता के लिये क्रमशः गांधी, सरदार तथा जवाहर के नाम आए। युवक को मौका देने के लिये गांधी और सरदार हट गए। जवाहरलाल अध्यक्ष चुने गए। कोंग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य की प्रतिज्ञा बना ली थी। सरदार वल्लभभाई कोंग्रेस का युद्ध संदेश देने निकल पडे। भरुच में उन्हों ने यादगार भाषण देकर युद्ध प्रारंभ किया । जिसने कभी जंग देखी नहीं हो वैसे गुजरात को उसके लिये तत्पर होने की घोषणा की। नवयुवकों को संबोधित करते हुए उन्हों ने कहा, "नवयुवकें चिल्ला रहे थे 'क्रांति चाहिए' 'इन्डिपेन्डन्स चाहिए.' यह चीखें सार्थक करने का समय अब आ पहुंचा है। हिन्दुस्तान की मुक्ति के लिये नेताओं पर बेडियां लदती होंगीं तब वे साइकल पर बैठकर चक्कर

काटेंगे? 'लॉंग लीब रिवोल्युशन' के नारे लगाते थे और डिग्री की अपेक्षा नहीं रखनेवालों, याद रखना यह जंग अंतिम है।" ब्रिटीश सरकार को ललकारते हुए सरदार ने कहा, "दो ही रास्ते हैं – हिन्दुस्तान में सासन करना, या छोडकर चले जाना। मैं कहता हूं शासन करें, लेकिन क्या यह शासन है? व्यापारियों के व्यापार गए। खेडूत निस्तेज बने। सारा साहस मिट गया। कौम–कौम में विग्रह हुआ। इससे बेहतर तो अराजकता भली...'

दूसरी ओर 12वीं मार्च को दांडी यात्रा के लिये शुभ दिन चुना गया। वह दिन निकट आता गया। माहौल उग्र बनता गया। सरदार के भाषणों से सरकार सावधान हो गयी। उसे गांधी से अधिक सरदार का भय था। बारडोली का जखम हरा था। फिर तामिलनाडू, कर्णाटक, महाराष्ट्र–बिहार के उनके तीखे भाषणों की आवाज ब्रिटीश सल्तनत को थथरा रही थी।

सरदार भी मौज में आ गए थे। भारत को क्रांति के लिये उकसा रहे थे। अपने विनोदी स्वभाव के अनुसार कहते, "मेरे हाथों में जैल की रेखा ही नहीं है।" बापू को सरकार कैद कर लें, फिर सरदार रंग जमाना चाहते थे। गांधीजी को छः सालकी कैद हुई, तब लोर्ड बर्कन हेड पार्लियामेन्ट में बोले थे, "गांधी को पकडने पर भी हिन्दुस्तान में एक कुत्ता भी भोंका न था।" सरदार इस बार जबडे तोडनेवाला उत्तर देनेवाले थे।

भरुच की हवा में से और सरदार की बानी में से शौर्य–समर्पण के धोध बहने लगे। अतः सरकारने सिंह की गुफा में हाथ डाले । सातवीं मार्च को कंकापुर गाँव में सरदार का भाषण आयोजित था। वहां जाते समय सरदार रास गांव में रुके। रास के नेता आशाभाई ने सरदार से कहा, "रास में सभा आयोजित है।" सरदार ने कहा, "कंकापुर जाने में देरी नहीं होगी?' आशाभाई बोले, "थोडी देरी हो जाएगी, लेकिन पांच–सात हजार की भीड जमी है। आपकी प्रतीक्षा हो रही है।" सरदार ने हामी भर दी।

एक बजे सभा प्रारंभ हुई । सरदार को फूलहार अर्पण किया गया। तभी फर्स्टक्लास मेजिस्ट्रेट मि. मनसुखलालने आकर सरदार के हाथ में वोरंट थमा दिया। उस में लिखा था, "रास के आसपास चार मील में भाषण करने की मनाही की जाती है।" 'कंकापुर' लिखा था, उसे काटकर 'रास' लिखा गया था। सरदार ने वोरंट देखा

और कहा, "मैं तो बोलुंगा।" फिर भाषण शुरु किया, "भाइओं और बहनों..."

फौरन मेजिस्ट्रेटने सरदार को पकडा । लोग गुस्सा हो गए लेकिन सरदार ने उन्हें शांत रहेने का अनुरोध किया।

रास से सरदार को सीधा बोरसद ले जाकर खेडा जिले में कलेकटर के सामने उपस्थित किया गया । उसने पुराना बैर वसूल करने के लिये न्याय का नाटक किया। सरदार ने केवल इतना ही कहा, "मुजे बचाव नहीं करना है । मैं गुन्हा स्वीकारता हूं" मेजिस्ट्रेटने फैंसला दिया। उन्हें जैल हुई । बोरसद से अहमदाबाद साबरमती जैल में आश्रमवासीओं तथा बच्चों के साथ हंस–बोलकर उनसे मिलकर जैल के दरवाजे पर पहुंचे। अलग होते हुए पुलिस सुप्रिन्टेन्डन्टने सिगारेट दी। सरदार ने विवेकपूर्वक ना कर दी। तो उसने कहा, "आप तो पीते हैं" । सरदारने हंसकर कहा, "हां, परंतु जैल में बीडी कहां मीलेगी?' बस उसी क्षण से सरदार का व्यसन छुट गया।

सरदार की गिरफ्तारी से स्वातंत्र्य संग्राम के श्रीगणेश हुए। उनकी गिरफतारी की सूचना पवनगति से गुजरात में फैल गयी। गांधीजी की अध्यक्षता में अहमदाबाद में साबरमती के तट पर बडी सभा हुई । गांधीजी ने सरदार को धन्यवाद देते हुए उनकी अनेकविध सेवाओं का उल्लेख कर के गुजरात की जनता को सरदार से कदम मिला कर चलने का अनुरोध किया।

12 वीं मार्च, 1930 को बापू साबरमती आश्रम से दांडी यात्रा के लिये सुबह छः बजे महाभिनिष्क्रमण करनेवाले थे। तब सरदार जैल के सिंखचों के पीछे थे। उन्हों ने सुबह चार बजे उठकर प्रार्थनाएं कीं, गीतापाठ किया। बापू के लिये मन ही मन शुभकामनाएं कीं। उनकी सफलता के लिये ईश्वर से सहायता मांगी। इसमें सरदार का बापू के लिये प्रेम प्रकट होता था।

इस ऐतिहासिक दांडीयात्रा ने भारत की जनता में नये प्राण फूंके। लोकजागृति आयी। सरकार के कानून का भंग करके बापूने चुटकी भर निमक उठाया। यह द्रश्य देखकर श्री धरणाजी ने गाया,

'चपटी मीठुं उपाडी, राज्य आखुं खेडयुं ।"

25 दिन की इस दो सौ मील की यात्रा ने लोकचेतना का कार्य किया। लोगों के

मनमें जडें डालकर बैठा शासन उखड गया ।

धरासणा सत्याग्रह के सत्याग्रही तो बापू की अहिंसा को घोलकर पी गए थे। धरासणा के हल्ले की सूचना पाते ही सरकार चौंक गयी। उसे लगा कि अब गांधीजी को एक मिनट के लिये भी मुक्त रखना ठीक नहीं।

रास–बारडोली की हिजरत

सरदार को गैरकानूनन गिरफ्तार किया गया। अतः रास के ग्रामजनों ने प्रस्ताव किया कि सभी कार्यकर्ताओं को मुक्त न किया जाय तब तक लगान नहीं दिया जायेगा।

दांडीयात्रा पर कई गांवों ने असहकार के प्रस्ताव किये थे। लेकिन लगान नहीं भरने का प्रस्ताव नहीं किया था। अतः गांधीजी ने इस निर्णय के लिये रास को धन्यवाद दिए तथा अग्निपरीक्षा के लिये तैयार रहने की सूचना भी दी। गांधीजी की सूचना का मतलब समजने वाले रास के खेडूत कडी कसौटी के लिये कटिबध्ध थे। दूसरी ओर अफ्सरों ने रास को घेर लिया तथा जनता पर अमानवीय जुल्म गुजारा।

महादेवभाई देसाईने कहा, "गांधीजी और सरदार का नाम लेकर आप इस जंग में कूदे हैं। इसका कारण गांधीजी और सरदार के प्रति आपकी भक्ति नहीं हैं, वरना आप जानते हैं कि गांधीजी का भेख तथा सरदार का जौहर खेडूतों के कल्याण के लिये हैं। इन दोनों जैसे खेडूतो के तारनहार कोई पैदा नहीं हुए।"

बोरसद तालूका तथा अन्य गांवों ने भी लगान नहीं देने के प्रस्ताव किए। बारडोली ने भी रास से कदम मिलाए। गायकवाडी राज्यों में पण्डालें बांधकर खेडूत लोग अपनी घर–गृहस्थी के साथ रहने लगे। खेडूतों ने गांव के गांव खाली कर दिए। बारडोली तालूका विरान हो गया। विख्यात ब्रिटीश पत्रकार भी बारडोली तालूका के गांवों की स्थिति देखकर दंग रह गया था।

इस प्रकार अपने प्रिय सरदार की गिरफ्तारी के विरोध में रास तथा बारडोली के खेडूतों ने सरकार के खिलाफ बगावत कर दी। बडे कष्ट सहन किये और दूसरी ओर सरदार जैल में दिन काटते थे।

साबरमती जैल और सरदार की विनोदवृत्ति (7 मार्च –26 वीं जून)

सरदार को पकडने के दो दिन बाद महादेवबाई साबरमती जैल में उनसे मिलने गए। सरदार का निजी व्यकित्व उन्हें वहां देखने को मिला। वे ही ठहाके, वे ही व्यंग्य, वही खुशमिजाज ।

सरदार की मुलाकात सुप्रिन्टेन्डन्ट के दफ्तर में रखी गयी। महादेवभाई ने गुजराती में बात शुरु की, तो अफसरों ने अंग्रेजी में बोलने का आदेश दिया। महादेवभाई ने कहा, "मैं अपने पिताजी के साथ अंग्रेजी में बोलुंगा, लेकिन वल्लभभाई के साथ अंग्रेजी में बातें करुं, वैसा आप आग्रह रखेंगे तो मैं मुलाकात करना नहीं चाहता।" सरदार ने हंसते हुए कहा, "भाई, आश्रम के लोग ऐसे ही होते हैं। अपनी मनमानी ही करेंगे। ये अंग्रेजी में नहीं बोलेंगे।"

महादेवभाई : आप को कैसे रखा जाता है?

सरदार : चोर–उचक्कों की तरह। लेकिन मुजे आनंद है। इससे बेहतर जिंदगी मैंने कभी देखी नहीं।

महादेवभाई : किस के साथ रखा है आपको?

सरदार : एक पुराने गुन्हेगार के साथ।

फिर सरदार ने कहा, "हमारा कमरा शाम पांच बजे बंद होता है। सुबह सात बजे खुलता है । सोने के लिये एक कम्बल दिया है। उस पर लेटते है ।

'भोजन कैसा दिया जाता है ?'

'जैल में थोडे ही मौज करने आए है ? दुपहर को कुछ मोटी रोटियां और दाल तथा शाम को रोटी–सब्जी आती है। घोडों को दिया जाता है। तीन महिनों तक हवा खाकर जी सकता हूं।

महादेवभाई : रोटी कैसे चबा सकते हो?'

सरदार : पानी में भिगोकर खाता हूं । मुजे यहां बडी मौज है। सजा खत्म हुए

बिना निकलना ही नहीं है।

महादेवभाई आवश्यक चीजों की सूचि बनाने लगे। उसमें नायी का उस्तरा भी आया। तो सुप्रिन्टेन्डन्ट बोल उठा, "उस्तरे की छुट नहीं है। आप को नायी की सुविधा दी जाएगी।

'वह तो मैं जानता हूं, यहां कैसी हजामत होती है !' यह कहकर सरदार ठहाका मारकर हंस पडे।

सुप्रिन्टेन्डन्टने कहा, "जब आपको चाहिए, उस्तरा दिया जाएगा।"

सरदार ने कहा, "मुजे दे दीजिए, ताकि मैं दूसरे कैदीओं की हजामत कर के दो पैसे कमा लूं।" सभी अफसर हंस पडे।

ऐसे हास्यविनोद के बीच महादेवभाई की मुलाकात पुरी हुई। 7-6-'30 से उन्हों ने नियमित डायरी लिखी है। उसमें 'दूसरे कैदीओं को जो मिले वही मुजे मिले, इस से अधिक कुछ नहीं चाहिए वैसा उनका आग्रह था।

साबरमती जैल में पौने चार महीनों की सजा भुगतकर सरदार बाहर आए तब देश में सामुदायिक सविनय कानून भंग की जंग की बाढ उमडी थी।

सबरस सत्याग्रह की शुरुआत हो गयी थी। दूसरी और बारडोली के जुल्मों की जांच करने कमिशन भी आ गया। सरदार वहां पहुंच गए । उनके दोस्त भूलाभाई देसाई भी आ गए। खेडूतों की दिल हिला देने वाली बातें तथा उन पर ढाए गए सितमों की कथाएं सुनकर विदेशीओं भी दहल गए। गांधी–इरविन करार हुए । उनकी चर्चा पर करांची कोंग्रेस की अध्यक्षता का प्रश्न भी उठाया गया। कारोबारी ने सर्वानुमति से सरदार का कोंग्रेस के अध्यक्ष के रुप में चुनाव किया।

करांची कोंग्रेस की अध्यक्षता सरदार के लिये बडा कसौटीरुप साबित होनेवाला था।

करांची कोंग्रेस के अध्यक्ष– कंटीला ताज

कोंग्रेस की अध्यक्षता का कंटीला ताज सरदार के समक्ष रखा गया। उन्हों ने सच्चे क्षत्रिय की भांति सहर्ष उसका स्वीकार कर लिया। 18-3-'31 के दिन बम्बई से करांची जाने के लिये गांधीजी सरदार के साथ प्रस्तुत हुए तो कवि श्री

नरसिंहरावने प्रेमांजलिरुप में गीता के अठारहवें श्लोक में थोडा सुधारा करके गांधीजी के हाथ में रखा– जिस का अर्थ ऐसा था –

"ज्हां योगेश छे गांधी, अने धूर्धर वल्लभ,

त्यां श्री जय, त्यां भूति, नीति, निश्चल मानुं छुं।"

करांची की कोंग्रेस की धुसर सरदार को बडे कठिन काल में वहन करनी थी. कई प्रांतों के क्रांतिकारी युवकों जैल के सिखंचो के पीछे थे । भगतसिंह तथा उनके दो साथी सुखदेव तथा राजगुरु की फांसी रद्द नहीं हुई । आखिर वे आजादी की खातिर मौत के हवाले हो गए। इस दर्द को मेघाणी ने गाया है, "रुखडां रोळणां रे.... " इस पर युवकों का रोष स्वाभाविक ही गांधी और सरदार के प्रति बढ गया। भारतीय युवकों गांधी–इरविन समजौते के पक्ष में न थे। अतः करांची बंदरगाह पर उतरते ही गांधी और सरदार को काली झडियां दिखायी गयी और उनके हाथों में काले फूल रखे गए। खुले अधिवेशन में बारबार विरोध प्रदर्शित होता था लेकिन गांधी तथा सरदार ने युवकों का रोष सहर्ष सह लिया। जब सरदार ने अध्यक्ष की बैठक ली तो तालियों की गडगडाहट से सहर्ष बधा लिया।

श्री पंडित जवाहरलाल तथा सुभाषबाबू युवकों के नेता थे। आखिर वे भी मान गए और अध्यक्ष का कार्य सरल हो गया ।

इस कोंग्रेस में मुख्य प्रस्ताव गोलमेजी परिषद में हिस्सा लेने के लिये गांधीजी को भेजने का था। दूसरा प्रस्ताव स्वराज्य प्राप्ति का था । सरदार का अध्यक्ष के रुप में भाषण उनकी लाक्षणिक शैली में मिताक्षरी, वजनी तथा हृदयंगम था। उन्हें कोंग्रेसपद दिए जाने में उनकी नहीं, बल्कि गुजरात की कद्र गई है, वैसा उन्हों ने बताया। अपने को सीधा–सादा खेडूत बताया। भगतसिंह को दी गयी फांसी के खिलाफ रोष जताते सरदार ने कहा, "नवयुवक भगतसिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को कुछ दिन पहले ही फांसी मीली है। इससे सारे देशमें उग्रता व्यापी है.... फिर भी भगतसिंह और उनके साथीओं की देशभक्ति, साहस तथा बलिदान के सामने मेरा सर झुकता है। इन युवकों को दी गयी फांसी के बदले देशनिकाला की सजा दी जाय वैसी सारे देश की मांग होने पर भी सरकार ने फांसी दे दी है, यह बताता है कि आजका शासन कितना हृदयविहीन है ।"

गांधी–इरविन करार पर पण्डितजी, सुभाषचन्द्र तथा अन्य युवकों ने जाहिर में अपना उग्र रोष प्रकट किया था। सरदार के मनमें समजौते के बारे में धधकती अग्नि जैसी पीडा थी, फिर भी उस में सारे देश का हित समाया था। इस लिये उग्र भाषणों तथा आक्षेपों को वे शांति से पचा गए। समापन प्रवचन में अपने दिल के कपाट खोल दिए, "गांधीजी को 63 साल हुए, मुजे 56 होने आए। स्वराज्य की उतावली हम बुढों को अधिक हो कि युवकों को? हमें मरने से पहले आजाद हिन्दुस्तान को देखना है। इस लिये आप से अधिक हमें जल्दी है। आप मजदूरों तथा खेडूतों की बातें करते हैं। मैं दावा करता हूं कि मैं खेडूतों की सेवा करते–करते बुढा हुआ हूं। फिर भी आप में से किसी के भी साथ स्पर्धा में उतरने के लिये तैयार हूं। खेडूतों से मैं ने जो कुरबानियां करवाई हैं, वैसी शायद ही आप में से किसी ने करवाई होगी... हमे रोष करना उचित नहीं है। हमने अभी तलवार को म्यान में रख दी है। उसे जंग लगने न देना। उसे घिसकर चमकती रखना... हममें यदि ताकत होगी तो गोलमेजी में अपना मनचाहा ही पाएंगे। हमें यदि रास न आया तो लौट आएंगे और लडेंगे। ऐसा कुछ कर दिखाएं कि जनता की ताकत बढे।"

इस प्रकार सरदार की अध्यक्षतावाली कोंग्रेस सही सलामत अग्निपरीक्षा में खरी उतरी।

गांधीजी जब गोलमेजी परिषद में जाने के लिये रवाना हुए, तब उन्हें भावविभोर बिदा देते हुए सरदार ने कहा, "यहां कि चिंता मत करना।"

गोलमेजी परिषद में गांधीजी कोंग्रेस का पूर्ण स्वराज्य का अधिकार प्रबलता से सिद्ध कर रहे थे। उनकी बानी सुनकर अंग्रेज प्रजा मुग्ध रह गयी थी।

इधर सरदार जैसे समर्थ नेताएं वीरतापूर्वक सरकार का सामना कर रहे थे। वैसे गोलमेजी परिषद स्पष्टतया राष्ट्रीय आंदोलन के विरुध्ध एक षड्‌यंत्र था। सारे देशमें सरकारने दमन का दौर चलाया।

गोलमेजी गजग्राह का खेल तथा नाटक थी। गांधीजी ने दूसरी परिषद में घोषणा करके ब्रिटीश सल्तनत को सुना दिया, "कोंग्रेस पूर्ण स्वराज्य के अतिरिक्त कुछ भी स्वीकारने को तैयार नहीं है। अमूल्य आजादी के लिये हमें खून की नदियां भी बहानी पडेगी तो उसके लिये सारा देश तैयार है... दमन तो गुलाम प्रजा के लिये प्राणवायु समान है।"

महादेवभाई ने सरदार को लिख दिया कि वहां आने के बाद शायद ही अधिक दिन तक बाहर रह पाएंगे ।

28 दिसम्बर को गांधीजी बम्बई बंदरगाह पर उतरे। तब सरदार स्वागत के लिये उपस्थित थे। वे खाली हाथ लौटे थे। अपने प्यारे बापू का स्वागत बम्बई नगरी ने भव्यतापूर्वक किया। लाख–सवा लाख की जनता को बापूने निर्भय हो कर स्वरक्षा के लिये मौत को स्वीकारने का अनुरोध किया ।

वाइसरोय के साथ की चर्चा टुट गयी । 4-1-32 की बडी सुबह को गांधीजी, सरदार आदि को पकडकर यरवडा जैल में डाल दिए गए। और सारे देश में कानूनी शासन चालू हुआ ।

यरवडा के यात्री – सरदार

गांधीजी के स्पर्श से सरदार में नयी चेतना की लहर दौडी थी। गांधीजीने भी इस पारसमणि को बराबर परख लिया था। इन दोनों को सोलह मास तक साथ–साथ रहना हुआ, यह एक–दूसरे का सद्‌भाग्य था। स्वयं गांधीजी लिखते हैं, "जैल में सरदार वल्लभभाई के साथ रहना मिला वह एक बडा सौभाग्य था। उनका अद्वितीय शौर्य तथा ज्वलंत देशभक्ति का मुजे पता था। लेकिन यह सोलह महीनों उनके साथ जिस प्रकार रहने का सौभाग्य मुजे मिला, उस प्रकार मैं कभी उनके साथ रहा नहीं हूं। उन्हों ने जिस प्रेम से मुजे सराबोर किया है, उससे तो मुजे अपनी प्यारी माता का स्मरण हो आता था। उनमें ऐसे मातृसदृश गुण होंगे वैसा तो मैं जानता ही नहीं था। मुजे जरा–सा कुछ हो जाय तो वे बिछौने से उठ खडे होते। मेरी सुविधा की छोटी–से छोटी चीज के लिये भी वे स्वयं खयाल रखते थे.

वैसे 1917 से सरदार बापू के परिचय में आए थे । लेकिन चौबीसों घंटे साथ रहने का अवसर तो यरवडा में ही प्राप्त हुआ। फिर सवा दो महीनों के बाद महादेवभाई आ गए। इस प्रकार यरवडा जैल मंदिर बन गई । ब्रह्मा–विष्णु तथा महेश की इस त्रिपुटीने आपस में आत्मदर्शन किए। उसका हूबहू वर्णन महादेवभाई ने अपनी डायरी में दिया है।

जैल में भी सरदार का विनोदी स्वभाव बापू को हंसा देता था। इन अविस्मरणीय दिनों का बडा अच्छा वर्णन महादेवभाईने किया है। जिसमें सरदार के व्यकित्व के विभिन्न पहलूओं के दर्शन होते हैं । बापू के लिये सोडा बनाना, खजूर साफ करना, दातून कूटना आदि कामों सरदार स्वयं करते थे। भोजन के पश्चात् वल्लभभाई नित्य नियम अनुसार दातून कूट कर तैयार करने लगे। महादेवभाई को संबोधकर बोले, "गिने-गिनाए दांत रहे हैं, फिर भी बापू घिसते रहते हैं। पोला हो तब ठीक है, लेकिन सांबेला बजाया करते हैं ।"

बापू हंस पडे।

एक बार वर्तमान पत्रो में Gandhi's Constructive Vacuities (गांधीजी की रचनात्मक गल्तियां) ऐसे शब्द छपे थे। इस पर महादेवभाईने बापू से पूछा, "रचनात्मक गल्तियां कैसी होती हैं?'

वल्लभभाईने कहा, "जैसे आज तुम्हारी दाल जल गई !'

सुनकर बापू खिलखिलाहट कर हंस पडे।

जैल में वर्तमान पत्र पढने का काम वल्लभभाई करते थे। लॉर्ड सैंकी का एक लेख News Letter पर से हिन्द के अखबारो में प्रकट हुआ, जिसे पढ कर बापू दुखी हुए। उसमें उन्हों ने अपने बारे में लिखा हिस्सा पढकर बापू बोले, "बडा विचित्र लेख है। उसे पत्र लिखना चाहिए। मेरा इसके बारे में मत सही नहीं है।" बापूने महादेवभाई से पत्र लिखवाया। वल्लभभाई सुन रहे थे। पत्र पूर्ण होते ही वे बोल उठे, "इतना सब लिखने की बजाय साफसाफ लिखो की तुम सरासर जुठे हो।" सुनकर बापू ठहाका मार उठे।

वल्लभभाई जन्मसे खेडूत थे। इसलिये सर्जकता उनकी हड्डियों में बसी थी। बापू उनका सही मार्गदर्शन करते थे। सरदार टपाल के कवर उल्टाकर चिपकाते थे और दूसरे कार्य करते थे। यह देखकर बापू बोले : "स्वराज्यमें तुम्हें कौन सा कार्य सौंपेंगे?'

वल्लभभाई बोले, "मैं स्वराज्य में चीपिया और तूंबडी लूंगा ।"

किसी का पत्र बापू पर आया था। उसमें बडा ही नादान और बालिश प्रश्न था, "अपना तीन मन का शरीर लेकर धरती पर चलते हैं। इससे हजारो चींटियां कुचल जातीं हैं। यह हिंसा कैसे रोकें?'

वल्लभभाई ने फौरन कहा, "इसे लिख दो कि पैर सर पर लेकर चलो।"

बापू के हाथ की पीडा बढती थी। डॉक्टर उसे आराम देने के लिये सलाह देते थे। फिर भी बापू कांतना नहीं छोडते थे। इस पर वल्लभभाई ने कहा, "यह दर्द अंगूठे से कुहनी तक पहुंचा है। कुहनी से कंधे तक चडेगा । अब रहने दो। बहुत कांत लिया।"

बापू बोले, "किसी दिन तो दूसरों के कंधे पर चडना ही होगा।"

वल्लभभाई बोले, "नहीं जी, ऐसा नहीं होगा । देश को मझधार में छोडकर नहीं जा सकते। एकबार नांव को किनारे पर लाएं। फिर जब जहां जाना हो जाइए। मैं साथ आउंगा।"

गर्मी के दिन आए। गर्मी में नींबू महंगे हुए तो बापूने सरदार से कहा, 'हम नींबू के बजाय इमली लेंगे। जैल में इमली के पेड बहुत है।"

वल्लभभाईने बात को टालना चाहा, "इमली के पानी से हड्डियां गलती हैं, वात होता है।"

बापू ने कहा, "फिर जमनालालजी तो पीते हैं!'

वल्लभभाई ने कहा, "जमनालालजी की हड्डियों तक इमली को पहुंचने का रास्ता नहीं है।"

बापू बोले :"बेकिन मैंने एक वार बहुत इमली खायी है ।"

वल्लभभाईने कहा, "उस वक्त आप पत्थर भी पचा सकते थे, आज यह कैसे होगा?'

महादेवभाई सरदार को संस्कृत सिखाते थे। उन्हें बडी गम्मत होती थी। सरदार शिशु सदृश प्रश्न करते रहते थे। कालेलकर और प्यारेलालजी सरदार के संस्कृत अध्ययन से खुश रहते थे। प्यारेलालजी से बापूने कहा, "वल्लभभाई तो अरबी घोडे की तरह दौडते हैं। संस्कृत पुस्तक उनके हाथ से छुटती ही नहीं!'

बापू सरदार की कार्यकुशलता की प्रशंसा करते थकते ही नहीं थे। उनकी चंचलता की प्रशंसा करते एकबार कहा था, "इतनी तेजी से काम करते हैं कि हमें आश्चर्य होता है ।"

बापू का पत्रव्यवहार बढ गया। तो सरदार भी मंत्री का काम करने लगे। बापू पर आते ढेर सारे पत्रों को पढने की स्पर्धा होती थी। बीच में ठहाकों के फव्वारे छुटते ही रहते।

ऐसे प्रसन्न–गंभीर माहौल में जैलवास के दिन बीत रहे थे. इतने में 17-8-32 के दिन ब्रिटीश प्रधानमंत्री मेकडोनाल्ड के हरिजनों के लिये अलग मतदार मण्डल स्थापने का फैंसला देने की खबर जैल के भीतर पहुंची ।

दूसरे दिन बापू ने प्रधानमंत्री को चेतावनी देता पत्र लिखा। उसमें बताया कि यह फैंसला हिन्दु समाज में धीमा विष देने वाला तथा देश को तितर–बितर करनेवाला है। इसके विरुद्ध बापू ने अनशन किया। इस निर्णय से यरवडा जैल मंदिर बन गयी। यह फैंसला रद्द न किया जाय तब तक उपवास चालू रहेंगे वैसी घोषणा बापू ने की।

सत्याग्रह की शुरुआत करते हुए सरदार ने कहा था कि धर्मयुद्ध आ रहा है। ये शब्द सही हुए। सारे देश का और सभी नेताओं का ध्यान परवडा पर केन्द्रित हुआ। अंत में डॉ. आंबेडकर को अपनी भूल मालूम हूई । वे अन्य नेताओं की कतार में आ गए। समजौता हुआ। उपवास का अंत आया और फिर से सरदार का वही विनोद चालू हुआ।

स्वातंत्र्य जंग में भुगते लंबे जैलवास के दिन सरदार के जीवन के पवित्र तथा मूल्यवान दिन थे।

गांधीजी के लिये अग्निपरीक्षा का वक्त आ पहुंचा। प्रधानमंत्री मेकडोनाल्ड के लिये पत्र तैयार हुआ तो सरदार तथा महादेवभाई को बापू ने कहा, 'तुम दोनों कांतना छोडकर यह पत्र पढ लो। ताकि फौरन भेज दिया जाय । 'दोनों पत्र पढ गए । सरदार ने कहा, "इस में फैंसले के दूसरे हिस्से के बारे में कुछ भी नहीं है । इसका अर्थ होता है कि आपको सब मंजूर है!' बापू ने कहा, "नहीं। मेरे विचार कहां अनजाने हैं? फिर भी तुम चाहते हो तो वह फकरा भी डाल दूं। हांलाकि उस में दलीलें भी रखनी होगी..... और मुजे इस पत्र में तर्क नहीं डालना है।"

दो दिन के बाद बापू ने उपवास के बारे में कोई शंका हो तो पुछने के लिये कहा । इस पर सरदार बोले, "सब बनाव होने के बाद मालूम हो जाएगा । आज

भले ही मालूम होता न हो।" फिर जरा नाराज होकर बोले, 'और फिर आज आपके साथ दलीलें कर कर क्या करना है? जो होनेवाला था हो चुका। मेरा कहना माना होता तो यह फैंसला न आता। यह तो आपने पत्र लिखा इसलिये ऐसा फैंसला आया! वहां के सब तो ऐसा चाहते हैं कि किसी भी तरह आप जाएं तो जान छुटी!'

सरदार के व्यंग में हमेशा रोषमिश्रित पीडा तथा बापू के प्रति भक्ति रहतीं। गांधीजी के इस उपवास की बात बाहर की दुनिया न जाने ऐसा तीनों चाहते थे, लेकिन सारे विश्व में यह खबर बिजली की तरह फैल गयी । कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर, नेहरु परिवार तथा रोमांरोला ओर देश की बडी बडी हस्तियां दौडी चली आयीं।

उपवास के प्रारंभ में जो मुक्त थे वे सारे राजनेताएं आ पहुंचे। डॉ. आंबेडकर के साथ विमर्श शुरु हुआ। ठक्कर बापाने कहा, "आंबेडकर का परिवर्तन हुआ है।"

गांधीजी ने कहा, 'यह तो आप कहते हैं। आंबेडकर कहां कहते हैं?'

आंबेडकर बोले, "हां, महात्माजी, हुआ है। आपने मेरी बडी सहायता की है। आपके आदमियों ने मुजे समजाने का प्रयत्न किया उनसे विपरीत आपने मुजे समजने की कोशिश अधिक की।" गांधीजी ने संतोष व्यकत किया और शीघ्र ही प्रधानमंत्री को खबरें पहुंचाई गयीं।

दोपहर बारह बजे समजौते की खबर शहर में फैल गयी। कस्तूरबा के हाथों नींबू-रस लेकर उपवास तोडे गए।

उपवास के कारण खुले द्वार फिर बंद हुए। बापू के पास रहे कस्तूरबा, सरदार और महादेव।

ऐसे में भी सरदार की विनोदवृत्ति जैसी की तैसी ही रही। छोटी-बडी सभी बाबतों में उनकी सूझ प्रकट होती थी। गांधीजी के बार-बार के उपवास-कार्यक्रमों से भी वे चिढते रहते थे। सरदार तो उपवास पर न उतरने के लिए बिनती भी करते।

इक्कीस दिन के उपवास की घोषणा से सभी हिल उठे। इसकी सूचना पाते ही देवदासभाई भी दौडे चले आए। लम्बी थका देनेवालीं दलीलें चलीं। सरदार ने तो

कह दिया, "इन्हें अधिक न सताओ, इस तल में तेल नहीं है। ज्यादा पिसोगे तो तेल नहीं अंगारे निकलेंगे।"

सरदार का मौन गांधी को अखरता था। गांधीजी उन्हें कुछ बोलने के लिये मना रहे थे। दो दिन पश्चात् गांधीजी ने स्वयं महादेवभाई से पुछा, 'वल्लभभाई अब भी मुजसे चिढे हैं?' महादेवभाई ने कहा, "कैसी चिढ? दुखी हैं" । बापू बोले, "कल तुमने ऐसा भास दिया था कि रोष में है।" महादेवभाई बोल उठे, "मेरी गल्ती हुई होगी। रोष था ही नहीं। वे सहमत है, ऐसा नहीं मानना। उनके भीतर तीव्र वेदना व्याप्त है। लेकिन आप जीएं या जाएं, चाहे जो हो, आप के ईर्दगिर्द असंतोष, कलह, अप्रसन्नता का माहौल न रहे वैसा ये चाहते हैं।"

गांधीजी के उपवास की पवित्रता सरदार बराबर देख सकते थे। लेकिन उन्हें गांधी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहती थी। कईओं को उन्हों ने इस बारे में पत्र लिखे।

21 दिनों की उग्र तपस्या पूर्ण हुई। अतः सरदार ने जैल से ही गांधीजी को पत्र लिखा –

पूज्य बापू,

आखिर ईश्वर ने आपकी लाज रखी। इस पुण्य अवसर पर हम आपके आशीर्वाद चाहते हैं।

प्रभु की असीम करुणा आप पर हुई है । परंतु अब हमारे पर भी आप थोडी दया रखना... लि. सेवक वल्लभभाई के दण्डवत् प्रणाम।

उपवास की पूर्णाहुति पर फलों की टोकरियां आने लगीं। गांधीजी ने सरदार को जैल में एक टोकरी भेजी। तो सरदार ने लिखा, "मुजे आपने क्यों भेजा? आज आप लाड लडाते हो, कल क्या करेंगे, कौन जानता है? आप की दया में तथा अहिंसा में जो निष्ठुरता और हिंसा समाहित हैं, वे तो जिसे रामबाण लगे हों वही जाने!' मेरा न मानें तो बा से पुछना। वे मेरी बात से सहमत होंगीं।"

गांधीजी पूना से अहमदाबाद गए। 1-8-33 के दिन साबरमती आश्रम बिखेर कर अहमदाबाद से रास तक पैदल यात्रा करने का निर्णय प्रकट किया लेकिन उसी रात सरकारने सभी को पकड लिया । 2-8-33 को गांधीजी को यरवडा लाया गया। यरवडा मंदिर में उनकी आंखें सरदार को खोज रही थीं। वहां न थे सरदार कि न

थे छगनलाल जोषी। दरवाजे पर महादेवभाई को संबोध कर गांधीजी भारी स्वर में बोले, "नीड तो वैसा ही है, लेकिन पंछी उड गया है ।"

सरदार नासिक जैल में

गांधीजी को अहमदाबाद में पकडा गया, उसी दिन 1-8-33 को सरदार को यरवडा से नासिक जैल में लाया गया। सरदार को जैल के अस्पताल के एक बैरेक में रखा गया। उनके साथ मंगलदास पकवासा को रखा गया । मंगलदास पकवासा को रिहा करने के पश्चात् सरदार ने अपने साथ किसी राजद्वारी कैदी को रखा जाय इस पर जोर दिया था। उन दिनों उन्हें नाक की बीमारी की वजह से बडी तकलीफ रहा करती थी। तभी मानसिक आघात देनेवाली घटना हुई । नामदार विठ्ठलभाई को चिकित्सा हेतु सुभाषबाबू वियेना ले गए थे। वहां 22-10-1933 के दिन उनका देहांत हुआ। यह सूचना नासिक जैल में मिली तो सरदार को बडा सदमा पहूंचा। उनकी माता चल बसीं तब वे बापू के साथ यरवडा जैल में थे। इसलिये थोडी सांत्वना मिली थी। इस बार नासिक जैल में सरदार को दिलासा देने के लिये सारे देश में से तार-टपाल की बर्षा हुई । अखबारों द्वारा सरदार ने आभार प्रदर्शित किया। लेकिन सरकारके उसमें काटछांट करने पर सरदार ने वह संदेशा रद्द किया।

विठ्ठलभाई के पार्थिव देह को लेकर सुभाषबाबू स्वदेश लौटे तो गांधीजी ने कहलवाया कि विठ्ठलभाई की अंत्येष्टि वल्लभभाई के हाथों हो वही उचित रहेगा। इस लिये उन्हें शर्ती तौर पर मुक्ति देने की खबर दी गयी। उन्हों ने साफ शब्दों में कह दिया कि मैं किसी प्रकार की शर्त पर मुक्त होना नहीं चाहता। आप लोग छोडना चाहें तो बिना शर्त छोडें।

बम्बई नगरीने विठ्ठलभाई को बडी दुखभरी बिदा दी। कु. मणिबहन तथा श्री डाह्याभाई उपस्थित हो पाए। श्री डाह्याभाईने अंतिम संस्कार दिया। परवडा जैल में तो जी हलका करने के लिये बापू तथा महादेवभाई साथ थे। यहां सरदार ने ढेर सारा सूतर कांतकर सांत्वना पायी।

वल्लभभाई को यरवडा से हटाया तो गांधीजी को बडा कष्ट पहुंचा। वे

बात–बात पर सरदार को याद करते रहते थे। वल्लभभाई का पत्र मिला तो बापू बडे प्रसन्न हुए। गांधीजी ने वल्लभभाई के लिये अपने हाथों से सुंदर पूनी बनाकर नासिक जैल में भेज दी। सरदार सदैव अपने साथियों को याद किया करते थे तथा बापू के प्रति अपनी अपार श्रद्धा उनके पत्रों से हम जान सकते हैं। सरदार अपने साथियों को स्नेहभरे पत्र लिखते रहते थे। उनमें उनका स्नेह प्रकट होता था।

15-1-34 के दिन सरदार नासिक जैल से छुटे। गांधीजी के विचारों को बुद्धिपूर्वक समजकर ही सरदार उनसे सहमत होते थे । सरदार ने अपने निवेदन में लिखा था, गांधीजीने अपनी पूरी जिंदगी में कभी निजी विजय की बात सोची ही नही है। जाति और व्यकित से अधिक उन्हों ने हमेशा सिद्धांत को महत्त्व दिया है। सरदार को खातरी थी कि गांधीजी चाहे जो निर्णय लेंगे वह कोंग्रेस तथा देश के हित में होगा।

जैल से छुटे सरदार को मिलने गुजरात के वीर खेडूत आतुर थे, जो 1935 में शक्य हुआ। सरदार बलसार से उत्तर गुजरात तक घुम लिये।

सरदार का नाम सुनकर पागल बनी गुजरात की जनता को यरवडा जैल में हुए नये दर्शन की बात सरदार करते थे। उसमें ईश्वर के प्रति श्रद्धा, क्षमाभाव, आदि धार्मिक वृत्ति व्यक्त होती थीं। बलसार–बारडोली की आमसभाओं में उन्हों ने अपनी वितक कथाएं कही थीं ।

सरादार की इस यात्रा ने फिर नयीं चेतना ला दी । इतना ही नहीं, बल्कि सत्याग्रह के दिनों की स्मृति करा दी। समाजवादी विचारधारा रखनेवाले युवकों के साथ भी उन्हों ने पत्राचार किया था। उनके सेवाभावी नेताओं के लिये सरदार के मनमें बडा आदर था ।

सरदार कृषि पुत्र थे। उनके दिल में खेडूतों का हित बसा था। उनका जीवन खेडूतों जैसा था। सत्याग्रह की जंग में वे सैनिकों तथा खेडूतों के साथ एक पंक्ति में बैठकर भोजन लेते थे । आजीवन उनका खान–पान, पहनना, आहारविहार आदि बिलकुल सादा तथा बहुजन समाज के साथ मिलता–जुलता था।

अकाल, बाढ संकट, महामारी आदि से झुझने में सरदार ने लोगों की हिंमत बढाने का काम किया था। सरकार तथा अन्यायों के साथ स्वमान के साथ लडने

की शिक्षा सरदार ने दी थी।

1936 की साल में संयुक्त प्रांत में खेडूतों का बडा सम्मेलन मिला था। उसमें जवाहरलाल उपस्थित नहीं थे। वे कमलादेवी की सारवार के लिये गए थे। इस सभा में सरदार ने जवाहरजी का अद्‌भुत चित्र जनता के सामने रखा। उनके त्याग तथा सहनशीलता की बात की । तथा भारत के खेडूतों की स्थिति का बडा ही करुण चित्र भी रजू किया। "... इस देश के किसानों जैसी कंगाल और दुखी स्थिति दुनिया के किसी भी देश के किसान की नहीं है। करोडों किसानो को पेट भरने के लिये रुखी सूखी रोटी भी नहीं मिलती। वह हड्डी–चमडी का ढांचा बन गया है। उसकी निस्तेज आंखे केवल टिमटिमा रही हैं। उसके चेहरे पर तेज नहीं है। उसमें नहीं रहा उत्साह, और नहीं रहा उमंग। अक्षरज्ञान से भी उसे वंचित रखा गया है। गरीबी तथा अज्ञान के बोज तले कुचलते इन भले खेडूतों में कई प्रकार के बाह्य तथा सामाजिक कुरीतियां पैठ गई हैं । स्वच्छता के सादे नियम बरतने जैसी शिक्षा भी उसे मिलती नहीं हैं । प्लेग, कॉलेरा, दस्त तथा मलेरिया आदि उनके नित्य के संगाथी बने गए हैं। कई रोगों से पीडित इन ग्रामवासी किसानों के लिये चिकित्सा के कोई साधन नहीं हैं। सर्दी की कडाके की ठंड में कांपते इन किसानों को पहनने ओढने के पूरे वस्त्र भी नहीं हैं। उन्हें रहने के लिये खंडहर तथा झोंपडें मानवनिवास के योग्य नहीं हैं। उनके गांवों के चारों ओर गंदगी तथा बदबू फैलाते ढोरों की गोबर के ढेर लगे मिलते हैं। उनकी आयु घटती जाती है। युवानी में ही उनके चेहरों पर बुढापा झांकने लगता है । वे करोडों के कर्ज में डूबे हैं। उसमें से मुक्त होने का कोई मार्ग उन्हे सूझता नहीं है । महीनों तक अथाक मेहनत कर के सर्दी, गर्मी तथा बरसात सहकर पैदा किया अनाज खाने से पहले ही दांत किचकिचाते कई शिकारीओं का शिकार हो जाता है । फसल अच्छी हुई हो या नहीं, अतिवृष्टि या अनावृष्टि की आफत सहनी पडती हो, हिम गिरने से फसल झुलस गई हो, तीडकी टोलियां अनाज को खत्म कर गई हों अथवा अनाज की कीमत बडी उथुल–पुथुल से इतनी गिर गई हो कि किसानों को रुपये का आठ आना ही मिलता हो, फिर भी लगान तो भरना ही पडता है। पिछली बाकी या तगावी का बोज तो खडा ही होता है। इनके बावजूद शाहुकारों उनका कर्ज तथा व्याज बसूल करने फसल पर आंखें जमाए बैठे रहते है। इस प्रकार खेडूत तथा उसके बाल–बच्चे भूख से बिलख रहे हों और उसका पैदा किया हुआ

अनाज घर में आने से पहले ही लूट जाता है ! किसानों की इस दारुण दरिद्रता सिद्ध करने के लिये आंकडों की या प्रमाणकी कोई आवश्यकता नहीं है। खुली आंखों से रेलवे में यात्रा करनेवाले किसी भी आदमी को दोनों बाजू हजारों मील तक फैले कई खेत तथा खंडहरों में कंगाल किसान दिखाई देते हैं। इससे बडा प्रमाण कौन सा हो सकता है? जो चीज जहां तहां आंखों के सामने पडी दिखाई देती हो, उसके लिये सुबूत की क्या आवश्यकता है।"

इस प्रकार किसानों का चित्र खिंचकर साथ ही साथ जमींदारों का चित्र भी सरदार ने सामने रख दिया, "इन भूखे किसानों के बीच उन्हीं के करोडों रुपयों का धूंवा लगाकर आन-बान और शान के लिये ही दिल्ली की राजधानी बनायी गयी है। और वह भी ऐसी जगह पर कि जो केवल साल के छः महीने के लिये ही काम आती है। एक ओर आलीशान, वैभवपूर्ण, शानदार राजमहल खडे हों और दूसरी ओर कंगाली से भरीं किसानों की झोंपडियां खडी हों, जमीं-आसमान सा जिस में अंतर हो वैसे बिन जिम्मेवार तथा निष्ठुर शासन का इस युग में तो कहीं भी अस्तित्व होना नहीं चाहिए। इन राजप्रासादों में, प्रांतों के लाट साहबों की मोहलातों में तथा बडे-बडे ओहदोंवालों के बंगलों में दरबार होता है, पार्टियां दी जाती हैं; भोज, नाचगान, तथा शराब की महफिलें होतीं हैं।"

इस प्रकार किसान तथा जमीदार के बीच का अंतर बताकर सरदार ने खेडूतों को इस दुहरी गुलामी से छुटने के लिये अपने में आत्मविश्वास पैदा करने के लिये कहा। किसानों के मनमें जम गए डर, अज्ञान, बहम, कुसंप, आलस्य, अस्वच्छता, अस्पृश्यता तथा अव्यवस्था आदि दुर्गुण उनके सच्चे शत्रु हैं, वैसा समजाया, और समजाया कि किसानों का सच्चा बल उनके संगठन में रहा है। और कहा कि "धर्म के नाम से जो बहम तथा पाखन्ड उनमें बैठ गए हैं उसे निकाल दें।" "आप अपना सच्चा और मजबूत संगठन खडा कीजिए । फिर जो निर्बलताएं मैंने बतायीं है, उन्हें दूर कीजिए । आलस का त्याग करें, बहमों को दूर करें, किसी का भी भय न रखें, कुसंप छोडें, कायरता निकाल फैंके, साहस रखें, बहादूर बनें, तथा आत्मविश्वास रखना सिखें। इतना करेंगे तो जो आप चाहते हैं वह स्वयं आकर मिलेगा। दुनिया में जिसके लिये जो योग्य हो वह उसे मिलता ही है । हमारी उमीदें बडी हैं। हम गुलामी की बेडियां तोडकर, स्वतंत्रता पाकर शासन की

धुरा आप सम्हालना चाहते हैं। ऐसी उमीदें रखना हमारा अधिकार है । इतना बडा अधिकार पाने के लिये हमें भगीरथ प्रयत्न करना चाहिए। प्रयत्न करनेवाले को प्रभु की सहाय मिलती है। प्रभु आपका कल्याण करें।"

सरदार किसान थे । उनकी देह और आत्मा किसान की थीं। किसानों के कष्ट देखकर उनकी आत्मा रो उठती थी । संयुक्त प्रांत के किसानसंमेलन में अपनी हृदयव्यथा प्रकट की तथा मुक्ति का मार्ग भी बताया ।

सरदार का स्वास्थ्य ठीक रहता नहीं था। पार्लियामेन्टरी बोर्ड की रचना करने की जिम्मेवारी सरदार को सौंपी गयी। गांधीजी आराम कराने के लिये सरदार को नंदीदूर्ग की टेकरियों में ले गए । वहां बापू सरदार के सेवक बने। वहां उनका स्वास्थ्य अच्छा हुआ।

हरिपुरा कोंग्रेस की तैयारियां जोरों से होने लगीं। श्री विठ्ठलभाई की स्मृति में कोंग्रेस नगरका नाम 'विठ्ठलनगर' रखा गया।

इस कोंग्रेस के अध्यक्ष थे सुभाषचंद्र बोस तथा स्वागत प्रमुख थे गोपालदास देसाई । गुजरात के कोने–कोने से लोग इस अधिवेशन में आए थे। सारे भारत देश के हजारों लोग इस संमेलन में हिस्सा ले रहे थे।

इस अधिवेशन में सरदार की अद्‌भुत व्यवस्था शक्ति का परिचय हुआ। गुजरात के आंगन आए मेहमानों का आतिथ्य करने की भावना, बडे से बडे नेता से लेकर छोटे से छोटे खेडूत का प्रेमपूर्वक सत्कार करने में दिखाई देता उनका उत्साह देखकर अति प्रसन्न हुए ।

पूर्णाहुति के अवसर पर अधिवेशन की सफलता का यश उन्हों ने सभी को बांट दिया।

सरदार–देशी राज्यों तथा प्रजा मंडलों

भारत का स्वातंत्र्य संग्राम जिस प्रकार आगे बढ रहा था उससे विचक्षण राजपुरुष सरदार को इस बात की प्रतीति हो गई थी कि आजादी निकट के दिनों में ही मिल जाएगी । 1730-1930 तक बिटीश हिंद में चली सत्याग्रहकी जंगोंमें देशी रियासतों को जनताने बडा अच्छा सहयोग दिया था । जोखिमों से खेली तथा यातनाएं भुगती और प्रजा मंडलोंकी स्थापना भी की ।

हिन्दुस्तानमें लगभग छ : सौ जितनी देशी रियासतें थीं । उन रियासतों की प्रजा दुहरी गुलामी भुगतती थी ।

हरिपुरा की कोंग्रेस के बाद देशी रियासतों में छोटी–बडी जंगे शुरु हुई । काश्मीरसे त्रावणकोर तथा ओरिस्सासे काठियावाड तक समग्र देशमें चेतनाकी लहर उठी । जनता ने राजाओं के सामने सर उठाया ।

काश्मीर, नाभा, अलवर, उदेपुर तथा जयपुर में प्रजा मंडलों ने जंग छिडी । ओरिस्साकी छोटी रियासतों में जनता पर सितम ढानेमें कोई कसर न रही । जनता हिजरत करने लगी । दक्षिणमें हैदराबाद, मैसूर तथा त्रावणकोर में भी प्रजामंडल बने । वहां प्रजाने जिम्मेवार शासन के खिलाफ द्रोह किया । उस समय आंध्र के छोटे राज्यने जनता को जिम्मेवार शासन देने की पहल की ।

देशी राज्यों की प्रजा इस प्रकार अपने हक्क के लिये जागृत हुई । उससे सरदारको आनंद हुआ । और जहां भी आवश्यकता लगी सरदार वहां दौड कर जाने तथा मार्गदर्शन करने लगे । सलाह तथा मार्गदर्शन के फल स्वरुप राष्ट्रीय चेतना में गति आई । मैसूर की जंग के समय वहां बनीं घटनाओं के लिये गांधीजीने सरदार तथा कृपालानी को वहां भेजा ।

मैसूर की जंग चालू थी । उन्हीं दिनों अहमदाबाद के करीब आए उत्तर गुजरात के माणसा राज्यके किसानों तथा दरबार के बीच झडप हुई । वहां जमीन में ऊगे पेडोंकी मालिकी भी राज्यकी गिनी जाती । लगान की आकारणी का कोई नियम न था । कई प्रकार के कर लिए जाते, और प्रजा पर जुल्म होते रहते थे ।

गुजरात प्रांतिक समितिके अध्यक्ष सरदार इस बात पर गौर कर रहे थे । सरदारने

दरबार गोपालदास, इन्दुलाल याज्ञिक आदिको वहां मार्गदर्शन के लिये भेजा था।

माणसा के किसानों ने विद्रोह किया। इस जंग की विशेषता यह थी कि स्त्रियां भी वीरता पूर्वक इस जंग में शामिल हुई। सरदार वल्लभभाई के साथ ओर किसानो के त्याग के सामने राज्य झुक गया।

1938 की कोंग्रेस कारोबारीने ऐसी विजय प्राप्त करनेवाली प्रजा को धन्यवाद देने प्रस्ताव किए। इन प्रस्तावों के पीछे सरदार का मुख्य हाथ था। वे देशी रियासतों के प्रश्न को दूरदर्शिता भरी विचक्षणा और कोटिल्य जैसी राज्यनीति से सुलझा रहे थे। सरदार के सामने छोटी–बडी सभा रियासतें समान थी। कोग्रेस देशी राज्योंकी प्रज के राजाओंकी भी हितेच्छु है, यह बात सरदार सिद्ध करना चाहते थे। अखिल भारतीय कोग्रेस का टेका भी इन जंगोंको मिलता रहा था। यह जंग केवल स्थानिक ही नहीं बल्कि अखिल भारतीय स्वातंत्र्य जंगकी एक महत्त्वपूर्ण कडी है। कुछ राजाओं को तब लगा था कि सरदार के हाथमें अपना भावि सलामत है। सरदार बराबर कहते थे की वे राजाओं के हितचिंतक थे। ओर यह उन्होंने साबित भी कर दिखाया। देशी रियासतों के विलीनीकरण के समय सरदारने जिन राजाओंका विश्वास तथा आदर प्राप्त किया था वह उपयोगी हुआ।

राजकोट, काठियावाड के जामनगर तथा जूनागढ की जंग का इतिहास तो पन्नों के पन्नों भर जाय वौसा हैं। यहां की जंगों में जनताने बडा शौर्य दिखाया था।

रचनात्मक कार्यों तथा राजकीय परिषदों द्वारा इन राज्यों के प्रश्नों का सुलझाए गए। गांधीजी तथा सरदारने उसमें बडी कुशलता दर्शाई थी। राजकोटकी जनताने परिषद ने भी बडा अच्छा कार्य किया।

इस के अलावा बडौदा, लींबडी, भावनगर तथा कच्छ की जनता ने राजाओं के खिलाफ अपने अधिकारों के लिये लडत की और प्रजामंडल विजयी हुए। इस के पार्श्वमें सरदार का संचालन तथा दीर्घद्रष्टि कर रहे थे।

हिंद के बटवारे तथा देशी रियासतों का विलीनीकरण)

(विचक्षण राजपुरुष अनुपम शासक)

इंग्लैंड से विष्टि करने हेतु सर स्टेफर्ड क्रिप्स आए। 1942की 23 मार्च को क्रिप्स दिल्ली आ पहुंचे। विचार विमर्श हुए। गांधीजी तथा मौलाना आजाद को

भी निमंत्रित किए गए । क्रिप्स गांधीजी को मिलने के लिये बडे बेताब थे । क्यों कि यदि गांधीजी समज जाएं तो सारा हिन्दुस्तान समज गया मानों । गांधीजी ईस जंगमें हिंद के रुपये या लश्कर कुछ भी देने के खिलाफ थे । उन्हें क्रिप्स को मिलने में रुचि न थी । लेकिन उनके आग्रह पर गांधीजी दिल्ली आए । गांधीजी इस योजना को सुनकर इतना ही बोले कि इतना देना चाहते हो, तो मेरी आपसे राय है कि आप इसी क्षण विमानमें लौट जाएं ।

सरदार वल्लभभाई को भी क्रिप्स योजनामें कोई सार दिखाई न दिया । राजेन्द्र बाबू भी इसी मतमें थे । राजाजी उसमें से सत्य खोज रहे थे । लेकिन जवाहरलाल के मनमें क्रिप्स के लिये सम्मान था ।

क्रिप्स मिशन तो एक खोटा सिक्का था । उस के रचनेवालों की नियत मैली थी । उसमें अप्रामाणिकता तथा धोखेबाजी थी । यह मिशन अमरिकी प्रजामत को रिझाने के लिए बनाया गया था । उसकी विफलता का दोषारोपण कोंग्रेस पर किया गया । सरदारने तो गांधीजी की तरह पहले ही घोषित कर दिया था कि "इस तिल में तेल नहीं है ।"

क्रिप्स की विष्टि समाप्त होते ही सरदार सोलह कलाओंमें खिल उठे । टेबुल पर होतीं बातोमें उन्हें कतई दिलचश्पी न थी । उन्हों ने हुंकार करके चर्चिल को सुना दिया "इस धरतीको पूर्वके साम्राज्य के लिये आप रणभूमि बनाना चाहते हैं । रणभूमि तो वह तभी बनेगी जब हम आजाद होंगे । और अन्य मुल्कों को भी आजाद करेंगें । "लेकिन चर्चिल अटलांटिक मुसद्दा कर के अमरिका लौटा तथा हिंद के बारेमें जो जवाब दिया तबसे था की नियत का हमें पता चल गया है । सरदार तथा उनके साथियों के लिये देश की सुरक्षा का प्रश्न प्रमुख था ।

लोक हृदय की धडकनों में से तथा नेताओं के भाषणों में से एक ही सूर निकलता था, "अंग्रेजों हिंद छोडकर शांतिपूर्वक तथा शीघ्र ही चले जाएं ।" सरदारने ब्रिटीश सल्तनत के सामने संपूर्ण असहयोग की घोषणा की थी ।

8वीं अगस्त 1942के दिन बम्बई में कोंग्रेस महा समिति के खुले अधिवेशनमें 'हिंद छोडकर चले जाओ" का प्रस्ताव हुआ । माहौल तैयार था ।

बम्बईकी इस बैठकमें गांधीजीने "करेंगे या मरेगे" का मंत्र दिया । नेताओं के

प्रेरक प्रवचन हुए । उसमें सरदार का प्रवचन अत्यंत सराहनीय रहा । वह केवल प्रवचन ही न था, बल्कि गुलामी की जंजीर को गला देनेवाला धधकता लावा था। उसमें आजादी की अंतिम जंग का ऐलान था । दुश्मन को जला देनेवाला तथा आजादीके सिपाहीओं में मातृभूमि के लिये जान देनेवाली तमन्ना जगानेवाला वह प्रवचन था ।

'हमारा शस्त्र अहिंसाका है । यह शस्त्र चाहे जैसा भी हो परंतु इसी के कारण इन बाईस सालोमें दुनिया में हमारी इज्जत बढी है । फिर, इस जंगमें ऐसी भी तो कोई शर्त नहीं है, कि दिलमें भी अहिंसा होनी चाहिए । यह तो केवल कार्य की बात है । कार्य में अहिंसा चाहिए ।

'सभी पुछते हें कि लडाई का कार्यक्रम क्या है ? पहले की जंगोंमें हमारा कार्यक्रम हमेशा गांधीजीने बनाया है, वे बैठे है, वे आज्ञा दें उसे उठा ले वे जैसा भी कहेंगे उसे करना ही सिपाहीओं का कर्तव्य है.... जब तक गांधीजी हैं तब तक वे हमारे सेनापति हैं.... ओर कोई मार्ग नहीं है । आजाद होना है । गुलामी अब एक क्षण के लिये भी नहीं चाहिए ।"

इस जंगमें सरकार भी जुनून पर थी । लोगों की स्वार्पण की भावना से लोकक्रांति मजबूत बन रही थी । महादेवभाई के निधन और सरदार की बीमारीने देशको चिंतित कर दिया था । लेकिन सरदार हंसते हंसते कहते थे : "बाहर जो हो रहा है, उसके हजारवे हिस्से का दुःख भी हमें नहीं है ।"

आजादी के लिये सर हथेलीमें लेकर मैदान में उतरे स्वातंत्र्यवीनें "करेंगे या मरेंगे" का मंत्र प्राण देकर भी जीवित रखा ।

1945की 15वीं जून को अहमदनगर किले के द्वार अचानक खुले । कोंग्रेस के सभी नेताओं को बिना किसी शर्तको छोड दिए गए । वाइसरोय लोर्ड वेवेलने गांधीजीको "हिंद छोडो" की क्रांतिको वापिस खिंच लेने के लिये बहुत समजाया, दूसरी ओर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिन्द फौज 'जयहिंद' की घोषणा लगाती आसाम की सीमा पर पहुंचने के लिये आगे बढ रही थी । हिन्द को आजादी दिलानेमें आजाद हिन्द फौज का योगदान भी कम नहीं आंका जाता ।

झीणा के साथ गांधीजी की चर्चा का कोई फल नहीं निकला । वाइसरोयने

भूलाभाई देसाई के समक्ष मध्यस्थ राष्ट्रीय सरकार का एक प्रस्ताव रजू किया। भूलाभाईने मुस्लिम लीग के नेता लियाकत अलीखान से मिलकर एक मुसद्दा तैयार किया। जिस पर विमर्श करने के लिये सर्वपक्ष परिषद बुलाने का वाईसरोय वेवेलने तय किया।

सिमला परिषद में तो वेवेल साहबने शंभुमेला आयोजित किया था। 1931में लंडनमें हुई गोलभेजी परिषद जैसा ही माहौल था। गांधीजी तथा देश नेताओंने धैर्यपूर्वक चलायी चर्चा लेकिन जनाब झीणा तथा मुस्लिम लीग के नेताओंकी अकडाई के कारण परिषद संपूर्णतया निष्फल हुई।

जैलवास के दौरान सरदार की तबियत बहुत बिगडी थी। गांधीजी सरदार को लेकर पूनामें डॉ. दिनशा मेहता के निसर्गोपचार केन्द्र में गए। गांधीजीने अपनी निगरानी तले सरदार को कुछ स्वस्थ बनाए। लेकिन सरदार को आराम कैसा? चारों ओर दावानल उठ रहा था। मध्यस्थी सरकार बनाने का काम तत्कालीन परिस्थिति में लोहे के चने चबाने जैसा था। पार्लियामेन्टरी बोर्ड के अध्यक्ष के रुपमें सरदारको इस कार्य में बडा ही श्रम करना पडा। जिसका असर उनके स्वास्थ्य पर पडा।

ब्रिटीश शासन कोंग्रेस तथा लीग को खुश रखने के लिये योजनाएं प्रस्तुत करता था, लेकिन लीग के सननशील झीणा साहब मनमें गांठ बांधकर बैठे थे कि अभी या कभी अलग पाकिस्तान होना ही चाहिए।

मुस्लिम लीगने 'सीधां पगलां' का कार्यक्रम दिया ओर तुफान शुरु हो गए। इस के परिणाम के छिल्के न उधेडनें में ही हमारा सयानापन है। कौमवादी दावानल शांत करने के लिये गांधीजीने प्राणों की बाजी लगा दी। लोगों का जुनून शांत नहीं हुआ। यह कौमवाद का जहर फैलानेवाले अंग्रेज मुत्सद्दी ही थे।

1946के नवम्बर के प्रथम सप्ताह में सरदार पटेल तथा लियाकत अलीखान बिहार के तुफानग्रस्त इलाकों के लिये कुछ अधिक लश्करी सहायता प्राप्त करने के लिये साथ साथ वाइसरोय से मिले। सहायता तो नहीं मिली लेकिन बिना मांगी सलाह मिली। मध्यस्थ सरकार ने लाचारी दिखाई।

यह परिस्थिति सरदार के लिये असह्य होती जा रही थी। वे भीतर से सुलग

रहे थे । लेकिन मध्यस्थ सरकार तो कामचलाऊ थी । ब्रिटीश प्रधानमंडळकी संपूर्ण सत्ता हिंद के सौंप देनेका प्रस्ताव तो खडा ही था । विमर्श चालू ही था । उस के लिये विशेष सलाह मशवरा करने के लिये ब्रिटीश प्रधानमंत्रीने पंडित नेहरु, सरदार पटेल तथा जनाब झीणा को लंडन आनेका न्यौता भेजा । सरदारने तो इंग्लेंड जानेके लिये साफ ना कर दी । लेकिन विवेक की खातिर पंडितजी लंडन गए । बिलकुल निराश होकर वे लौंटे । अंग्रेज मुत्सद्दीओंकी चालाकी पूर्ण बातें सुनकर सरदार आगबबूले हो उठे ओर उन्हों ने 19 दिसम्बर, 1946 को क्रिप्स पर सख्त पत्र लिखा ।

वाइसरोय वेवेल की अवधि पूर्ण होने पर वे विलायत लौटे तथा उनकी जगह पर वाईसरोय लोर्ड माउन्टबेटन आए । उनके आगमन के साथ ही हिन्द की आजादी का तथा साथ–ही–साथ भीषण यादवास्थली का करुणा अध्याय शुरु हुआ ।

24 मार्च, 1946 के दिन दिल्ली कैबिनेट मिशन आया। उसने गांधीजी, राजकीय पक्षों के नेताओं, कोंग्रेस अध्यक्ष मौलाना अबुलकलाम आजाद, पंडित जवाहरलाल, मुस्लिम लीग के सरनशीन ज. महमद अली झीणा तथा अन्य नेताओं आदि के नेता, हिन्दुस्तान के राजकारण तथा समाजजीवन के प्रसिद्ध नेताओं को लेकर मिशनने अपनी योजना तथा उसके विविध पहलूओं पर विचार–विमर्श किया। कई कौमी प्रश्नों, मध्यस्थी सरकार, बंधारण सभा, स्वातंत्र्य, सत्ताका बदलाव, तत्पश्चात् करने चाहे करारों आदि बाबतों पर लम्बी तथा चोटदार चर्चाएं कीं। तीन स्तरीय योजना प्रस्तुत की।

ईसवी सन 1946-50 के दौरान सरदारने अनुपम शासक के रुप में तथा विचक्षण राजपुरुष के रुप में जो कुशलता दिखायी वह अद्‌भुत थी। कैबिनेट मिशन की योजना बापू पर रख दी गयी । वाइसरोय को कोंग्रेस की मजबूत स्थिति का भान हूआ।

1940 में रामगढ में मिले कोंग्रेस अधिवेशन से लेकर क्रिप्स मिशन, सिमला की चर्चा, कैबिनेट मिशन योजना की चर्चाओं में कोंग्रेस के अध्यक्ष के रुप में महत्त्व का योगदान देने वाले मौलाना आजाद ने छह् साल पश्चात् कोंग्रेस की अध्यक्षता छोडी । उनकी जगह अध्यक्षता के लिये संस्थाकीय चुनाव हुआ। जिस

में सरदार वल्लभभाई को अधिक मत मिले। इसके आधार पर कोंग्रेस के अध्यक्ष पद पर आने वाला मध्यस्थी सरकार तथा बाद में स्वतंत्र हिन्दुस्तान की सरकार के प्रधानमंत्री पद पर आ सकता है। "मैं नहीं हुंगा तो जवाहर मेरी बानी बोलेगा। "ऐसा जताकर गांधीजी ने पं. जवाहर को अपना राजकिय वारिस घोषित किया था। लेकिन जवाहर को कम मत मिलने के कारण मामला उलझ गया। परिस्थिति का उकेल लाने के लिये तथा गांधीजी की उलझन टालने के लिये सरदार पटेल तथा कृपालानी स्पर्धा में से निकल गए। इससे भी बडा त्याग कई बार सरदार कर चुके थे । यह पहला त्याग नहीं था। स्वातंत्र्य के लिये अंतिम जंग का अंतिम पैगाम देने वाले, पूर्ण आजादी का प्रस्ताव करनेवाले, रावी नदी के तट पर 1929 के अंतिम दिन आयोजित कोंग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता का भी उन्हों ने त्याग किया था। लाहौर के अधिवेशन के अध्यक्षस्थान पर पंडित जवाहरलाल आए वैसा गांधीजी के समक्ष मोतीलालने अनुरोध किया था। बारडोली सत्याग्रह से सरदार देशमान्य नेता बने थे। अतः उन्हें अधिक मत मिले थे। लेकिन सरदारने सामने आए सम्मान का त्याग कर के जवाहर के लिये रास्ता खुला छोड दिया। 1937 में लखनौ में कोंग्रेस का अधिवेशन मिला, तब भी सरदार पटेल को अधिक मत मिले थे, फिर भी वे जवाहर के लिये खिसक गए।

सरदार के इन महान त्यागोंने इतिहास को नया मोड दिया। भारत में शुद्ध लोकशाही की स्थापना होने पर भी मध्यकालीन वंशवाद तथा नेहरु परिवार के वारिसा को जन्म दिया। लेकिन सत्याग्रह की जंगों को सफलतापूर्वक लडनेवाले, गांधीजी को समजनेवाले तथा बीमारी की उपेक्षा करके 1946-50 के दौरान सरदारने जो शौर्य तथा हिकमत बताए हैं उस का न्याय इतिहासकार करेंगे। सरदार के इस मौन त्याग ने पंडित जवाहर को प्रधानमंत्री बनना आसान कर दिया।

मुस्लिम लीग ने घोषित किया सीधा आंदोलन का दिन, झीणा की धमकी, बरबादी, मध्यस्थी सरकार में मुस्लिम नेताएं, विभागों का बंटवारा, वित्तखाते के सदस्य लियाकतअली खानने खाते का किया हुआ दुरुपयोग आदि का काला इतिहास यहां बताना आवश्यक नहीं लगता ।

मुस्लिम लीग ने 'पिस्तौल' दिखाई तथा जंग का एलान किया, विदेशी सत्ता के खिलाफ नहीं बल्कि मुसलमानों सहित सभी की आजादी के लिये लडती कोंग्रेस

तथा हिंदुओं के खिलाफ उसने जंग छिडकर विष की बोआई की।

वित्तखाता लीग को सौंप ने के बारे में मौलाना आजादने बताया, "मुस्लिम लीग को वित्त विभाग सोंपकर कोंग्रेस ने बडी भूल की है। इस के फलस्वरुप उलझनें पैदा हुई हैं। जिससे देश के बटवारे के लिये धीरे–धीरे आधार खडा करने का मौका लोर्ड माउन्ट बेटन को मिल गया है।" मौलाना लीग को गृहविभाग सौंपने के पक्ष में थे।

लोर्ड माउन्टबेटन की कल्पना का भोग बनने में सरदार मुख्य थे। अंतिम क्षण तक झीणा के लिये पाकिस्तान की मांग हो रही थी।

मौलाना आजाद की अध्यक्षता में कोंग्रेस बटवारे की ओर बढी। बटवारे के लिये मौलाना सरदार को जिम्मेवार मानते थे। किंतु स्वयं मौलाना गांधीजी के पास गए थे। तथा भारत के संघ में हिस्सा लेना न चाहते हों वैसी कौमें तथा प्रदेशों को अलग कर देने का प्रस्ताव रखा था ।

लीग ने पाकिस्तान के लिये व्यापक प्रचार शुरु किया। सदस्यों अपना स्थान सम्हाले इससे पहले ही कोंग्रेस के विरुद्ध कपट लीला शुरु हो गयी।

लाहौर में इस्लामिया कालिज के विद्यार्थीओं के सामने गमनफर अली खानने घोषणा की –

'केन्द्र में कोंग्रेस की सरकार की स्थापना के पश्चात् सारे देश में जो दंगे हुए उसने निःसंशय यह सिद्ध कर दिया है कि यदि किसी भी सरकार में मुसलमानों के सही नेताओं को स्थान नहीं दिया जाएगा, तो वैसी सरकार के सामने सवा क्रोड मुसलमान झुकेंगे नहीं.'

बम्बई के अंग्रेजी पत्र "फ्री प्रेस" में प्रकाशित रपट के अनुसार लाहौर के इदगाह मैदान में बोलते हुए इसी मुस्लिम लीग के मंत्रीने घोषणा की –

'महंमद बीन कासिम तथा महमुद गजनवी कुछ सहस् सैनिकों को लेकर हिंद पर चढ आए थे, फिर भी लाखों हिंदुओं को पराजित किया था। खुदा की रहम होगी तो कुछ लाखों मुसलमान करोडों हिंदुओं को मिटा देंगे । मुस्लिमों पाकिस्तान लेंगे और साथ ही कई सदियों से गुलाम बने रहे हिंदुओं को भी आजादी दिलाएंगे ।"

इसी सभा में बोलते हुए लीग के महामंत्री तथा मध्यस्थी सरकार के वित्तमंत्री

ज. लियाकतअली खानने कहा :

"मुस्लिमों की मांग का स्वीकार किए बिना हिन्दुस्तान के प्रश्नों का हल आनेवाला नहीं है। हिन्दुस्तान के मुसलमान एक हो कर खडे नहीं हों और कैसी भी परिस्थिति के लिये तैयार नहीं हों, तो इस क्रांतिमें रौंद जाएंगे।"

इस प्रकार हिन्दुस्तान के भले-भोले मुसलमानों को जर्मन जनता की तरह धर्मांधता का जुनून चढाकर उन्हें कुछ नेताओं ने गलत राह पर चलाए। उनमें जुनून चढाने वालोंने पाकिस्तान तो प्राप्त किया लेकिन अखण्ड हिन्दुस्तान की समस्त मुस्लिम कौम के टुकडे करने के लिये उन्हों ने प्राप्त किये पाकिस्तान के भी दो हिस्से बना दिए। दो राष्ट्र का झीणा का सिद्धांत भी गलत सिद्ध हुआ।

देश के बटवारे

मुस्लिम लीग ने जो पडकार किया था उसे सरदार वल्लभभाईने उठा लिया। रोग से दुर्बल बनी उनकी देह में ताकत पैदा हुई । वे इतिहास के पण्डित नहीं थे; वे तो स्वयं अपना इतिहास बना रहे थे। हिंद के भाग्य के सामने आए पडकार के सामने उन्हों ने सिंहनाद किया। इन चार साल की सरदार की अहिंसक ताकत, विराट पुरुष की कार्यदक्षता इस भारत के नवनिर्माण के पुरुषार्थ की गाथा है ।

1948 में बनारस हिंदु युनिवर्सिटी में प्रवचन देते हुए सरदार ने कहा – 'मुजे लगा है कि यदि हम बटवारे को नहीं अपनाएंगे तो हिंद कई टुकडों में बंट जाएगा। और उसका पूर्णतया विनाश होगा। ओहदे पर रहकर प्राप्त किए चार साल के अनुभव से मुजे पक्का विश्वास हो गया है कि जिस प्रकार हम आगे बढ रहे हैं, इससे तो भीषण आपत्ति ही आएगी। फिर हमारे सामने एक नहीं, कई पाकिस्तान खडे होंगे। प्रत्येक दफ्तर में पाकिस्तान के केन्द्र खडे होंगे।"

पंजाब की तरह दिल्ली को "सीधां पगलां" का केन्द्र बनाने की लीग की योजना के सारे सुबूत सरदार के पास आने लगे। इस प्रधान मंडल में गृहमंत्री की कामगीरी बजाते सरदार समज गए कि कोंग्रेस तथा लीग की गाडी साथ साथ चलेगी ही नहीं। उन्हों ने यह भी पाया कि परिचलन मंत्री श्री निस्सार की सूचनासे उनके सभी फोन टेप होते थे।

सरदार भी बटवारे को देश के लिये सदैव का अभिशाप मानते थे। बडी अकलाहट का अनुभव करने के पश्चात् ही, और कोई विकल्प न दिखने पर, उन्हों ने बटवारे को अनिवार्य अनिष्ट की तरह स्वीकार लिया था।

1947 में नागपुर में छ्तीसगढ राज्य के प्रतिनिधियों के सामने सरदार ने दिए अपने प्रवचन में परदे के पीछे चल रहीं कुछ चालों का जिक्र किया था। उन्हों ने बताया था कि "इस बात ने बटवारे के पक्ष में मेरा विचार बदल डाला है।" बस्तर राज्य में प्राकृतिक संपत्ति बहुत थी। वह पुरा इलाका पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट के अंग्रेज अमलदारों ने निजाम को लम्बे पट्टे पर गिरवी देने की तैयारियां की थी। लेकिन सरदार की दृढ नीति के कारण यह घटना रुक गयी और अंग्रेजों की पोल खुल गयी। अंततः भारत के बटवारे को गांधीजी तथा पंडितने भी समर्थन दिया था ।

वेवेलने भी सरदार को श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ पुरुष के रुप में सराहे थे। क्रिप्सने उन्हें लिखा था कि इस समय उनकी बहुत आवश्यकता है, अतः तबियत का खयाल रखें। चर्चिल ने टिप्पणी की थी कि सत्ता सौंपने पर वह तिनकों के हाथ में पडेगी। माउन्टबेटनने अपना कार्य समाप्त कर के हिन्दुस्तान से बिदा ली तो उनके साथ उनके मंत्री लोर्ड इस्मेन थे। इस्मेन को सरदार ने बुलाकर कहा, "लण्डन लौटने पर अपने मालिक चर्चिल से कहना कि हिन्दुस्तान में तिनके नहीं है, किंतु लोहे के बने राजपुरुष हैं ।"

देशी रियासतों का विलीनीकरण

आजादी से प[illegible] स्वाधीन देश की सरकार के एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ के रुप में उनकी कामगीरी का स्वरुप भिन्न प्रकार का था। समय और संजोग के संदर्भ में उठे बवंडरों में से जहाज को सही–सलामत पार लाना था। इस भगीरथ कार्य को करके वे बिना कुछ लिए चले गए ।

आजादी प्राप्त नूतन सरकार की सुरक्षा करनी हो, उसे कार्यरत करनी हो, उसे ठोस पीठिका पर रखनी हो, तो उसकी इमारत की नींव तथा दीवारें मजबूत होनी चाहिए ।

इस भगीरथ कार्य की जिम्मेवारी नयी सरकार में कानून और व्यवस्था विभाग

सम्हालते गृह विभाग को सौंपी गयी। और सरदार पटेलने यह कार्य बडी कुशलता से पूर्ण किया। वे एक साथ कई प्रश्नों को निबटाते थे। उन्हें भारतीय अमलदारों का सहयोग खूब मिला। कर्मचारी भी सरदार पटेल के प्रबंध से बडे प्रसन्न थे। वे उन्हें सच्चे देशभक्त मानते थे। बटवारे के पश्चात् हुई अव्यवस्था को दूर करने के लिये गांधी, सरदार, नेहरु अपने प्राणों की परवाह किए बिना तुफानी दलों के बीच दिन–रात धूमते रहते थे। नेहरु तथा सरदार के विचारों में मतांतर था यह बात प्रसिद्ध है। लेकिन दोनों के दिलों में देश का हित बसा था। देश को क्षति पहूंचे वैसा वे कभी नहीं होने देते।

आजादी के पश्चात् सरदार ने जो कार्य किया उसका मूल्यांकन करते हुए सर्वपल्ली राधाकृष्णन् लिखते हैं, "आजादी के बाद सरदार ने जो कार्य किए हैं, वे बडे ही नोंधनीय हैं। 1947 में जब सत्ता का बदलाव हुआ, तो कई टीका करनेवाले मानते थे कि राष्ट्र बिखर जाएगा और देश में मजबूत व्यवस्था बनाए रखना हमारे लिये मुश्किल हो जाएगा। लेकिन सरदार ने उठाए कदमों से ये सारे टीकाकार मौन हो गए। रियासतों के लिये सरदार ने किसी भी प्रकार का द्वेष रखे बिना अपनी कार्यदक्षता तथा सूझबूझ से भारत को अखण्ड बनाया। पहले के कई राजाएं आज राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं, और भारत के देशभक्त नागरिकों की तरह कार्यरत हैं, इसका सारा श्रेय सरदार को मिलता है।"

देशी रियासतें केवल राजकिय नीति से ही इकट्ठें हों इतने में ही सरदार को दिलचश्पी न थी। उनकी मुंदी आंखों में सारे देश का मानचित्र आ जाता था। देश में जुडते राज्यों की सर्वोपरि सत्ता जनता के हाथ में आए वैसी व्यवस्था उन की आंखों में स्पष्टतया पढी जाती थी। वे बंधारण में इस बात का मेल बिठाना चाहते थे। इन राज्यों की वहीवटी तथा आर्थिक व्यवस्था कर के उसका वर्गीकरण भी करना था। देशी राज्यों की स्थिति, उनका व्यवहारु विलीनीकरण की प्रक्रिया के दौरान अंग्रेजों, मुस्लिम लीग के नेताओं तथा पाकिस्तान के प्रति राजाओं की मनोदशा आदि का भी खयाल रखना था। यह कठिन कार्य सरदार ने पूर्ण किया। उन्हों ने निःशस्त्र क्रांति की। हैदराबाद, ओरिस्सा तथा छत्तीसगढ की रियासतें, सौराष्ट्र के देशी रजवाडे, दक्खन तथा गुजरात के राज्यों, विंध्यप्रदेश के देशी राज्यों मध्य भारत की परिस्थिति, पतियाला तथा पूर्वी पंजाब के राज्यों का संध,

राजस्थान की समस्या, त्रावणकोर तथा कोचीन की समस्या मायसोर और अन्य देशी राज्यों, हिमाचल प्रदेश की पहाडी देशी रियासते कच्छ का राज्य, ईशान देशी राज्यों, भोपाल, जूनागढ और काश्मीर की विकट समस्याएं, तथा अन्य कई छोटी–मोटी रियासतें आदि की समस्याएं सरदार ने अपनी दीर्घदृष्टिपूर्ण दक्षता से साम, दाम, दंड और भेद की नीति आजमाकर सुलझायी। उन्हों ने अखंड भारत का सपना साकार किया। इस अखंड भारत के शिल्पी थे सरदार वल्लभभाई पटेल।

हैदराबाद के जुडने से हिंद के देशी राज्यों के एकीकरण की पूर्णाहुति हुई । यह भगीरथ कार्य सरदार के जीवन का यशस्वी ताज बन गया। विदेशी राजपुरुषों ने सरदार की इन सिद्धियों को लेकर जर्मन के बिस्मार्क के साथ उनकी तुलना की है। बिस्मार्क ने जर्मनी में 28 राज्यों को तलवार के बल पर एकत्र किए थे। जब की सरदारने करीब 550 रजवाडों को अधिकतर प्रेम और अहिंसा के बल पर भारतमाता की छाया तले ऐकत्र किए थे।

पहाड–सी जिम्मेवारी उठानेवाले सरदार पटेल का व्यक्तित्व अद्‌भुत था । सरदार अक्सर कहा करते थे, "देश को स्थिर तथा संगीन स्थिति में लाकर जाने की प्रबल इच्छा है ।"

उनकी निर्णय शक्ति, अजोड नेतृत्व स्पष्ट वक्तव्य त्याग की भावना, कार्य को पूर्ण करने का संकल्प आदि उनके गुणों में प्रमुख थे।

वे आंतरराष्ट्रीय प्रश्नों के लिये भी सदैव जागृत थे। काश्मीर का प्रश्न तथा यूनो (U.N.O.) की चालबाजी के प्रति वे जागृत थे। चीन के बारे में भी उन्हों ने नेहरु को चेताया था। चीन विश्वासघात करेगा वैसा सरदार ने 1950 में कहा था। यूनो में चल रही काश्मीर के बारे में कार्यवाही से भी वे बडे पीडित थे। उसमें हम उलझे हैं अतः हमसे जो बन पाएगा, वह सब करना ही पडेगा, वैसा सरदार मानते थे।

'आजाद भारत के भविष्य' के बारे में वल्लभभाई ने 14 मई, 1950 के दिन त्रिवेन्द्रम की विशाल जनमेदनी के समक्ष जोशिली और उष्माभरी बानी में कहा था, 'सारे जहा में भारत एक–सी गति से आगे बढे ऐसा मैं चाहता हूं। उसे सभी आपत्तियों के सामने अडिग खडा रहना पडेगा, चाहे वह भीतरी हों या बाहरी...'

महात्मा गांधीजी के सच्चे अनुयायी, हीरे जैसे अनमोल, स्वातंत्र्य संग्राम के सेनानी, स्वतंत्र भारत के शिल्पी, आजाद हिन्दुस्तान के सामने उठे तुफानी प्रश्नों को सुलझानेवाले दक्ष सरदार पटेल का मूल्यांकन कैसे किया जाऐ ? उन्हें त्यागमूर्ति भीष्म कहेंगे ?

सरदार पटेल के रौद्र तथा शिव दोनों रुप थे। सभी का कल्याण चाहनेवाले शिवम्-सुंदरम् का भी पूर्ण अवतार थे। बीमारी की बाणशैया पर सोते हुए उन्हों ने देश का नया मानचित्र रचा्ं कि भारतीय राजकारण के वे शिव थे, अतः उनके हिस्से में जहर पीना ही आता था।

चल अकेला, चल अकेला....!

सरदार के निधन के लिये इतना ही कहा जा सकता है, "मौत को ही मौत आयी!'

28 दिसम्बर 1948 के दिन वल्लभभाई, जाम साहब, वी.पी. मेनन, तथा मेजर जनरल हिंमतसिंहजी जम्मू की छोटी-सी यात्रा पर गए। जम्मू की जनता को संबोधकर उन्हों ने मौत से भी नहीं डरने की अपील की। "मौत तो निश्चित है। कभी तो उसे आना ही है। किंतु उसके नित्य के आतंक के तले जीने का मतलब है अपने सर पर अर्थहीन पीडा को लादकर प्रतिदिन मरते रहना।" वैसा था उनका जुनून।

सरदार अपनी मृत्यु का अंदेशा पा गए थे। उन्हों ने इशारा किया था, 'समय के पंछी को उडने में अब थोडा-सा वक्त रह गया है। और देखो, पंछी पंख पसार कर उडने के लिये तैयार हुआ है!'

सुप्रसिद्ध हुए भारत के इन दो बडे महारथीओं के मनमुटाव तो बापू की दुःखदायी बिदा के साथ ही मिट गए थे। सरदार और जवाहर एक-दूसरे से गले मिले। दोनों का मौन आंसुओं से छलाछल था। दोनों ने दिल हिलानेवाली बानी में देशवासियों को कहा -'हिंमत मत गवाना। इकट्ठे रहना और गांधीजी ने आरंभ किए कार्यों को पूर्ण करना।"

2 फरवरी, 1948 के दिन जवाहरलालने सरदार पटेल को पत्र लिखा :

मेरे प्रिय वल्लभभाई,

बापू जीवित थे तो हमें एक साथ मिलाकर हमें अपनी संतान मानकर हम से कई बातों की अपेक्षा रखते थे। मैंने अपने अंतिम पत्र में आशा बंधायी थी कि हमारे बीच भले ही विचारों तथा स्वभाव के बारे में कुछ अंतर रहा हो, किंतु जैसा कि अब तक एक साथ कार्य करते आए हैं उसी प्रकार हम एक बने रहेंगे। बापू की अंतिम इच्छा भी यही थी। मेरी आपके प्रति स्नेह तथा मैत्रीपूर्ण बावना आप तक पहुंचाने के लिये यह पत्र लिख रहा हूं।

प्रेमपूर्वक

जवाहर

जवाहरलाल के पत्र का उत्तर देते हुए सरदार पटेल ने 6, फरवरी, 1948 के दिन लिखा :–

मेरे प्रिय जवाहर,

2 फरवरी के आपके पत्र ने मुजे हिला दिया है। वाकई मैं ऐसी भावनाओं मैं डुब गया हूं। आपने मेरे प्रति जो स्नेह दर्शाया है, उसके लिये मैं पूर्णतया आपको इतना ही स्नेह भेज रहा हूं।

'बापू के निधन से पूर्व एकाध घण्टे के लिये मुजे उनसे बात करने का मौका मिला था। आप के और बापू के बीच तथा लोर्ड माउन्टबेटन के बीच उनसे हुई बातों से मुजे उन्हों ने वाकिफ किया था। मैं आपको खातरी दिलाना चाहता हूं कि मेरी जिम्मेवारियां तथा मेरे कर्तव्यों को सर्वथा पूर्ण करने के लिये मैं दृढप्रतिज्ञ हूं... प्रकट में हमारे बीच के मनमुटाव की चर्चा करते रहना जाहिर सेवा तथा देश के लिये हितावह नहीं है। इस बात पर अब हमेशा के लिये हम पर्दा डाल दें तथा इस दूषित माहौल क सुधारें।

आपका

वल्लभभाई

गांधी हत्या को रोकने की निष्फलता के लिये सरदार पटेल को बदनाम किया गया। लेकिन सुबूतों के आधार पर यह स्पष्ट हो गया है कि उन्हों ने तो यट

घटना के निवारंण के लिये भरसक प्रयत्न किया था। उन्हीं के एक साथी मौलाना आजादने इस मौके का फायदा उठाकर सरदार को बदनाम करने की कोशिश की थी। महात्माजी की हत्या के पश्चात कई सालों बाद उनकी एक पुस्तक 'Indian Wins Freedom' प्रकट हुई । उसके ३० पन्ने अपनी मौत के 30 वर्ष बाद प्रकट करने की सूचना उन्होंने दी थी। और इस अवधि के पूर्ण होने पर वे पन्ने प्रकाशित हुए। इस पुस्तक में सब कहा गया है। फिर भी सरदार तो सरदार ही रहे। किंतु मौलाना ने भारतवासीओं के मनमें रोष प्रकट करवाया और मौलाना का स्वरुप बौना हो गया। फिर भी मौलाना को यह भूलना नहीं चाहिए कि सरदार की गांधी के प्रति भक्ति बेजोड थी। किसी भी हालात में वे गांधीजी के सिध्धांतो का पालन सख्ती से करते थे। यदि गांधीजी सत्याग्रह का विचार थे तो वल्लभभाई उस विचार का व्याकरण थे। सरदार ने स्वयं कई बार बताया था कि "मेरे दिमाग को ताला लगाकर उसकी ताली मैंने गांधीजी को सौंप दी है।" इस विवाद का फैंसला विद्वान न्यायमूर्ति श्री भण्डारीने दिया है, उसे पढने के लिये सुज्ञ पाठकों को बिनती की जाती है। सरदार पटेल पर लादे गए आक्षेप आधार हीन हैं यह कहना अनुचित नहीं होगा।

इन्दौर की आम सभा में सरदार पटेल ने नेहरु के बारे में बोलते हुए कहा था, "जवाहर हमारे नेता हैं। गांधीजी ने उन्हें अपना अनुगामी ठहराया है। जवाहर नेहरु मेरे भी नेता हैं। मैं सच्चे दिल से उनका अनुसरण करुंगा।" इतना विधान आजकी बौनी नेतागीरी जो सरदार का नाम मिटाने पर तुली हुई है, उसके लिये काफी नहीं है? 7 अक्तूबर, 1950 के दिन सरदार की मृत्यु हुई । उसके ठीक कुछ दिन पूर्व उन्होंने हैदराबाद के फत्तेह मैदान में आर्द्रपूर्ण स्वरों में कहा था, –

'मुजे किसी को खुश करने के लिये बोलना नहीं आता। मैं जो भी मार्ग अपनाना चाहुंगा, उसकी योग्यता ही नहीं, बल्कि उसकी नैतिकता का विश्वास हो जाने पर, किसीसे भी भयभीत हुए बिना तथा अकेला होने पर भी कदम बढाने से मैं नहीं डरता। आज इतने कष्टों को झेलकर, बलि देने पर भी भीतर से मुजे एकता के लिये विश्वास नहीं है। मेरे दिल में जो शंकाएं उठ रही हैं, उन्हें सच्ची होती हुई मैं देख रहा हूं।

'लियाकतअली में मेरे सामने से भागने की हिंमत न थी। उन्हें यहां से भाग छुटने

के लिये मुस्लिमों ने बडा साथ दिया। तभी वे यहां से जा सके थे। उन्हें रोकने की दिल्ली से दूर बैठकर क्या मेरी ही जिम्मेवारी थी? यदि मैं मुसलमान होता तो उनके इस व्यवहार पर मैंने आंसु बहाए होते। और मेरे ही लिये नहीं बल्कि उनके लिये भी जिनको उनके भाग जाने से सुख मिला हो मैंने आंसु बहाए होते।

'मैं ने सुना है कि कुछ मुसलमानोंने इस घटना का उत्सव मनाया है, प्रकट में नाचे हैं, ज्याफतें उडाई हैं। तो मेरे मनमें आज यह शंका होती है कि क्या वास्तव में मुसलमानों को इस देश में अपना हित दिखाई पडता है?'

महात्मा की हत्या से सरदार को जो दुःख हुआ था उसे समजने के लिये कौन तैयार था? कौन समज पाया था? उनकी देह टुट चुकी थी। दिन–प्रतिदिन शरीर कृश होता जाता था । सरदार की सेवामें दिन–रात तन्मय बनीं सरदार की पुत्री श्री मणिबहन पिता के दुःख से दुःखी थी. मणिबहन पुत्री होने पर भी अपने पिता की सूश्रूषा कर के माता समान बनीं थीं।

सरदार अपने निधन के दसवार दिन पूर्व "मंगल मंदिर खोलो, दयामय" भजन की पंक्तियां लेटे–लेटे गुनगनाते रहते थे। डोक्टरो के साथ उनका विनोद चालू ही था। एक बार पथारी को धिर कर बैठे संबंधीओं से कहा, 'स्टेशन पर कुछ मुसाफिरों दो–चार आना बुकिंग क्लर्क को देखकर बिना किसी मेहनत से फौरन टिकट पा जाते है। उसी प्रकार मुजे लगता है कि वहां भी रिश्वत लेकर टिकिट देते होंगे। मेरे सामने से मेरे कई साथी टिकिट कटवाकर चले गए। परंतु मैं कोई रिश्वत देनेवाला नहीं हूं।" ऐसी बीमारी में भी सरदार सबको हंसाते थे।

दिल्ली की आबोहवा सरदार को अनुकूल न थी । डॉकटरो की राय के अनुसार बम्बई ले जाना उचित समजा गया। 12 दिसम्बर, 1950 के दिन सरदार को बम्बई ले जाना तय किया गया। दिल्ली से निकलने से पहले गृहविभाग के प्रमुख अधिकारीओं से चर्चा की तथा राष्ट्र की सुरक्षा की अंतिम सूचनाएं दीं । दिल्ली हवाई अड्डे पर राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद, प्रधान मंत्री पंडित जवाहर, राजाजी आदि मित्रों ने सरदार को आंसुभरी बिदा दी।

15 दिसम्बर, 1950 और शुक्रवार के दिन सरदार ने हृदयरोग के हमले के कारण प्राण त्यागे।

सरदार के निधन के दुःखदायी समाचार बिजली की तरह सारे देश में फैल गए। राजाजी, राजेन्द्रप्रसाद, पण्डितजी दिल्ली से दौडे आए। पंडितजी तथा पंतजी तो बच्चों की भांति बिलख कर रो पडे। श्री मणिबहन, श्री डाह्याभाई तथा आप्तजनों के संतापका पार न था ।

बिरला भवन से स्मशानयात्रा निकली। पांच लाख से अधिक लोगों ने अपने प्रिय नेता सरदार को बिदा दी। लोकमान्य तिलक की बिदाबेला से भी अधिक हृदयंगम दृश्य उस दिन बम्बई नगरी में दिखाई पडा। उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए हजारो दिल रो उठे।

स्वातंत्र्य–संग्राम के अडिग सेनापति, नूतन भारत के महान निर्माता, करोडों दिलों को रुलानेवाले युगपुरुष सरदार अपने गुरु के पास चले गए।

अंतिम सार : स्वतंत्रता के बारे में सरदार कहते थे : "स्वतंत्रता के फलस्वरुप हमें गरीबी तथा रोग से मुक्ति न मिले, चारित्र्य शुद्ध न रहे, नागरिक की फर्जों का ज्ञान न हों, तथा जाहिर आचरण के मूल्य उपर न उठे वैसी स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है।" सरदारश्रीने अपने कई मित्रों को मूल्यांकन के कार्यों के बारे में चेताया था। सरदार ने दृढ शब्दो में कहा था, "मेरे कार्यों का मूल्यांकन करने का काम आज के जाहिर मत के बदले मैं भावि के इतिहासकारों पर छोडता हूं." अतः इतिहास के एक अध्यापक के रुप में सरदार का मूल्यांकन करना मेरा कर्तव्य बनता है।

जवाहर का ज्वलंत आत्मत्याग, उनका बेजोड पुरुषार्थ, गांधीजी तथा सरदार पटेल के चले जाने के पश्चात् विश्व में भारत को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के लिये उन्हों ने किए भरसक प्रयासों के लिये उन्हें सहस्रो प्रणाम। लेकिन उनके परिवार की अंधी भक्तिमें, नेहरु परिवार के ही बिना किसी प्रमाण के यशोगान गाते रहना कतई उचित नहीं है। आजकल नेहरु परिवार की गुणगाथा में सरदार पटेल ने दिये प्रदान का अवमूल्यन करने के प्रयत्न जानबुझ कर किए जा रहे हैं, वह सुयोजित रुप से राजकीय षड्यंत्र है, इससे अधिक कुछ नहीं है। जवाहर की महानता के पीछे सरदारश्री का स्वैच्छिक योगदान रहा है, यह भुलना नहीं चाहिए। यह बिलकुल कल का ही इतिहास है। स्थान या स्तर की परवाह किए बिना सरदार ने अखंड भारत के लिये अनवरत कार्य किया। कोंग्रेस शताब्दि के अवसर पर

प्रदर्शित कीए गयी गांधीजी, जवाहर तथा सरदारश्री की तसवीर में से सरदार पटेल वाला हिस्सा काट दिया गया था। यह घटना भुल जाने जैसी नहीं है तथा राजद्रोह से कम नहीं है। यह कोई शिशु सदृश चेष्टा नहीं है, वरन् उसके पीछे किसी मानस का प्रतिबिंब है। आज दिन तक सरदार के सिक्के भी बनाए गए, नही है अंत में तो इतना ही कहना पडेगा, "सबको सन्मति दे भगवान!!"

उन्हों ने कहा था : 'हम उन्हें याद करेंगे' !

सरदार को भारत 'नये भारत के सर्जक और एक करने वाले की सूरत में याद करेगा और उनकी दूसरी कामियाबियों की तारीफ करेगा। पर यहां हम उन्हें आजादी की लडाई में हमारे दल के एक महान 'सरदार' की सूरत में याद करेंगे। मुश्किल हालात में और जीत के पलों में सच्ची सलाह देने वाले की सूची में याद करेंगे। जिस के उपर हमेशा भरोसा रख सकें ऐसे दोस्त और साथी की सूरत में हम उन्हें याद करेंगे। मुश्किल हालात में डगमगा जाते दिलों को जोशों-खरोश देकर ताकत देना वाले नेता की सूरत में हम उन्हें याद करेंगे। और सबसे ज्यादा तो दोस्त, साथी और बिरादर की सूरत में हम उन्हें याद करेंगे। उन से सटकर मैं यहां बैठता था, उनकी खाली कुर्सी देखकर मुजे एक प्रकार का अकेलापन और खालीपन महसूस होगा।

– जवाहरलाल नेहरु

वल्लभभाई मुजे न मिले होते तो जो काम हुआ वह नहीं होता, इतना सारा शुभ अनुभव मुजे उन से मिला है।

– गांधीजी

सरदार वल्लभभाई राष्ट्रपुरुष हैं। हिन्दुस्तान में यदि किसानों का राज्य हो तो वल्लभभाई किसानों के राजा हैं.... उन्हों ने रागद्वेष का त्याग नहीं किया है, पर किसी योगी को शोभा दे इस ढंग से रागद्वेष पर काबू प्राप्त किया है। उनका यह योग साधू-संतों का नहीं है, पर क्षत्रिय वीर का है। उन्हों ने ब्रह्मचर्य का पालन किया है, पर वह परलोक में काम आनेवाले मोक्ष के लिये नहीं, पर अपने तीस करोड भाई-बहनों को परतंत्रता के नरक में से मोक्ष दिलाने वास्ते। आज वल्लभभाई के पास रहने को घर नहीं है, ऐशो-आराम के गाडी-घोडे, साज-सज्जा, या कपडे भी नहीं हैं, जिस से वे अपना कह सकें, ऐसा निजी समय भी नहीं है – कौन कहता है वल्लभभाई सरदार नहीं है? बारडोली के भाषणों में जो जीवन्त सरस्वती प्रवाहित थी; वीर, करुण, हास्य आदि सभी रस जिस में प्रवाहित थे, ऐसी भाषा कोई चँवरधारी साक्षर लिख या बोलकर तो दिखाए? – गांधीजी के सिद्धांतों की व्यावहारिक आवृत्ति करने में वल्लभभाई द्वारा प्रकट की गयी कुशलता देखकर बहुतों को लगता था कि गांधीजी यदि वल्लभभाई की मार्फत सब काम लें तो प्रजा जल्दी समज जायगी।

– काका कालेलकर

भारत की भावी प्रजा सरदार को नहीं भूल सकेगी। सात मार्च 1930 के दिन सरदार पहली बार पकडे गए थे। सृष्टि पर सतत चल रहे रचना कार्य में कालदेवता कहीं भी अपने हस्ताक्षर में कुछ भी नहीं लिखते। उनका कार्य तो उनके पसन्द के अनेक पात्रों द्वारा, निमित्तों द्वारा चलता रहता है। सरदारश्री के निमित्त से भारत की एकता और अखण्डता का सांगोपांग संवर्धन हुआ। देश पर सरदार का जो ऋण है उसकी याद करलें और इतिहास बनानेवाले इस महापुरुष का अभिनन्दन करें । आने वाली पीढियां उन्हें 'इतिहास के शिल्पी' के रुप में याद करेंगी। सरदार याने सरदार माने सरदार।

– गुणवंत शाह